गीता मैत्री

JULY - DECEMBER - 2023

रामः शस्त्रभृतामहम्



LEARN GEETA





॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

अध्यक्ष

प.पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय मालपाणी, संगमनेर

अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

डॉ. आशू गोयल, लखनऊ



उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण व्यास, हैदराबाद

कोषाध्यक्ष

श्री सिद्धार्थ हवेलिया, दिल्ली

सचिव

श्री श्रीकांत कासट, संगमनेर

सह सचिव

श्री गिरीश डागा, संगमनेर



गीता मैत्री

A Learngeeta Six-Monthly Newsletter

Email - newsletter.geetamaitri@gmail.com

संपादक

डॉ. आशू गोयल



सह संपादक

सुश्री कविता वर्मा

लेखक एवं संकलनकर्ता

श्री सुनील कापड़ी	मुम्बई
श्रीमती सोनाली काला	पुणे
श्रीमती विनोद बत्रा	दिल्ली
सौ. नीता वालशबे कर	पुणे
डॉ. विभा देशमुख	नागपुर
सौ. सायली तु टोणगांवकर	बेंगलुरु
डॉ. प्राची संजय पिंपरकर	अकोला
डॉ. अपर्णा होलकुंडकर	भोपाल

मुख्यपृष्ठ

सुश्री कश्मीरा , ठाणे

ई-बुक डिजाइनर

सुश्री शिप्रा सिंह

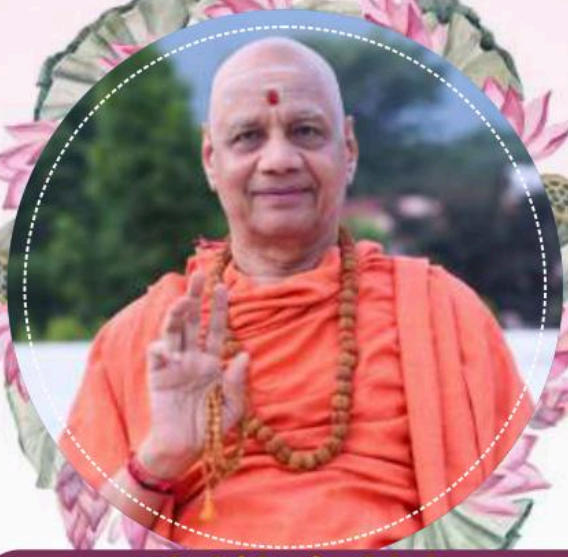
Excel Electrostat, Lucknow.



अनुक्रमणिका

- संत उद्गार — 3 - 4
  प. पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज
- आत्मन्येवात्मना तुष्टः — 5 - 6
  (डॉ. संजय जी मालपाणी, कार्याध्यक्ष, गीता परिवार)
- सम्पादकीय — 7 - 8
  डॉ. आशू जी गोयल (अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार)
- विभिन्न समारोह — 9 - 14
- Global Akhaṇḍa Aṣṭādaśa Gītā Pārāyaṇa — 15 - 16
- गीता चिन्तनिका सत्र — 17 - 18
- आओ गीता सेवी बनें — 19 - 21
- गीता मैत्री मिलन — 22 - 44
  (उड़ीसा, UAE Sneh Milan, जयपुर, USA, Thailand, Singapore)
- Linguistic Kaleidoscope — 46 - 58
  - Learn Geeta Program a MANAGEMENT MARVEL
  - സർവ്വം കൃഷ്ണമയം
  - గీతా పారాయణ
  - गीता परिवारसँगको मेरो नाता र प्रयास
  - એક શબ્દમાં ધર્મની વ્યાખ્યા એટલે "દક્ષતા"
  - अभयम
  - பகவான் கிருஷ்ணன் அருளிய பகவத்
  - கீதையில்(Trigunas) முக்குணங்களைப் பற்றி
  - கூறியிருப்பதாவது:
  - గీతను నేర్చుకొంటూ, ఆత్మవిశ్వాసాన్ని పెంచుకున్నా.
  - जय होक सनातन धर्मर
  - ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବଦ୍ଗୀତା - ସମଗ୍ର ମାନବ ଜାତି ପାଇଁ ଏକ ବିରାଟ ଆଶୀର୍ବାଦ
- Soulfull Stanzas — 59 - 62
- Pondering Pages of Geeta Maitri — 63 - 68
  For Curious minds....
- Volunteer's Brigade — 69 - 70
- गीताव्रती सूची — 71 - 77





प.पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज
संस्थापक अध्यक्ष, गीता परिवार - कोषाध्यक्ष, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास

संत उद्गार

श्रीमद्भगवद्गीता के 11वें अध्याय को विश्वरूपदर्शन कहा गया है क्योंकि इसमें भगवान के अत्यंत दुर्लभ स्वरूप का वर्णन दिया गया है। श्रीभगवान ने स्वयं कहा -

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः॥11.52॥

अर्जुन इस रूप का दर्शन करके धन्यता का अनुभव करते हैं। यह श्लोक इसलिए मेरे स्मरण में आया क्योंकि भगवान ने कहा है इस रूप के दर्शन करने की योग्यता मात्र भक्ति से प्राप्त होती है।

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन। ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप॥11.54॥

आज गीता परिवार के विश्वरूप का दर्शन हो रहा है। सभी एक दूसरे को विशेष रूप से न जानते हुए भी अत्यंत प्रेम से एक दूसरे के साथ रहते हैं। इतनी अधिक संख्या में कार्यकर्ता एक साथ जुड़कर अनुशासनपूर्वक कार्य करते हैं यह भगवान का चमत्कार है जो कृपापूर्वक गीता परिवार के ऊपर किया। यह सब कार्य करते हुए कार्यकर्ताओं के अन्तःकरण में जो भक्तिभाव है वही सर्वोच्च है।

यह भगवद्गीता अत्यंत विलक्षण है। भगवान ने इस विलक्षण शास्त्र को अर्जुन के समर्पण व भक्ति से प्रसन्न होकर सभी को प्रदान किया। गीता परिवार के साधक अर्जुन के छोटे छोटे अंश ही तो हैं। प्रतिदिन इतनी निष्ठा के साथ गीता का पठन व पाठन करते हैं और इसी के प्रभाव से आज गीता परिवार विकसित होता गया। यह परिवार किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि स्वयं श्रीभगवान का परिवार है अतः स्वयं भगवान ही इसका संचालन कर रहे हैं।

हम गीता परिवार में भगवान का कार्य करते हैं एवं भगवान ने 11वें अध्याय में 55वें श्लोक में कहा जिसे आदि शंकराचार्य भगवान ने

समस्त गीता शास्त्र का सारभूत श्लोक कहा।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः। निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥11.55॥

अर्थात् मेरा कार्य करने के जो परायण है,वह मुझे प्राप्त होता है अतः भगवान का यह कार्य ही हमारी पूजा है जिसे गीता परिवार के साधकों ने चरितार्थ कर दिया। आज यदि कोई पूछे कि गीता के अन्तिम अध्याय में कहा है

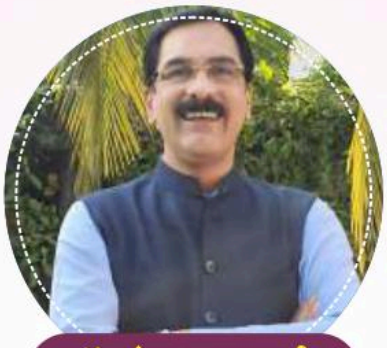
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥18.46॥

इसका व्यावहारिक दृष्टांत क्या हो सकता है तो मैं गर्व से कह सकता हूँ कि गीता परिवार के हमारे साधक इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। गीता परिवार के कार्यकर्ता सभी साधकों के भीतर बैठे कृष्ण की पूजा करते हैं एवं अत्यंत संयत मन से करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि मुझे अत्यंत संयम एवं श्रद्धा से प्रभु की उपासना करनी चाहिये। यह कार्य ही हमारी सबसे बड़ी पूजा है।

भगवान ने कहा है मत्परम: जिसका आशय है - 'अहमेव परमो यस्य स: मत्परम:' अर्थात् जिसके लिये मैं ही परम हूँ। आज सभी गीता परिवार के कार्यकर्ताओं के लिये किसी भी अन्य कार्य से गीता परिवार का कार्य सर्वोपरि है। सभी को लगता है कि गीता परिवार का कार्य अवश्य होना चाहिए। मैंने अपने छात्र जीवन मे तीन लेख लिखें - कृष्णं शरणं गच्छामि, धर्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि। अर्थात् भगवान कृष्ण के शरण मे हूँ, मैं उनके द्वारा बताए गए धर्म के शरणागत हूँ अतः उसका पालन करना मेरा कर्तव्य है और संघ जिसका अर्थ है समूह, इसका आशय है कि गीता परिवार यह हमारा संघ है और हम इसके शरणागत हैं। आइये जो भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा बताये कार्य को कर रहा है ऐसे गीता परिवार के हम सभी शरणागत हो जायें।

- स्वामी गोविन्ददेव गिरि





डॉ. संजय मालपाणी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार

आत्मन्येवात्मना तुष्टः

जीवन की आपाधापी में कई बार ऐसे प्रसंग आते हैं कि हमारा तनाव और रक्तचाप (Blood Pressure) बढ़ जाता है। जब तनाव में कोई निर्णय हम करते हैं तो वह निर्णय गलत होने की संभावना भी अधिक हो जाती है। क्रोध में, निराशा में, दुःख में अथवा तनाव में हमारा मन विचलित रहता है। मन और मस्तिष्क जब एक दिशा में न हो तो शब्द भी संयमित नही होते। ऐसी स्थिति में पराजय की संभावना निश्चित ही बढ़ जाती है।

कुरुक्षेत्र के मैदान पर महावीर अर्जुन की स्थिति कुछ ऐसी ही थी। अपनों को युद्धभूमि में सम्मुख देखकर होने वाले प्रचण्ड नरसंहार का भविष्य उन्हें स्पष्ट दिख रहा था, इससे अर्जुन चिन्ताक्रान्त थे।

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः॥

उपरोक्त दो श्लोकों में अर्जुन अपनी हतप्रद अवस्था स्वयं विदित करते हैं। अर्जुन के सभी गात्र शिथिल हो चुके हैं, मुख शुष्क हो चुका है, शरीर गलितगात्र हो चुका है, गाण्डीव धनुष हाथ से गिर रहा है, शरीर में दाह का अनुभव हो रहा है, कुछ भी करने से शरीर मना कर रहा है, मन भ्रमित हो चुका है। यह सभी लक्षण यह दर्शाते है कि अर्जुन निराश हो चुके हैं। हम भी अनेक बार ऐसी अवस्था के शिकार होते हैं और शिकार करने वाला हमारा ही अपना मन होता है। ऐसी स्थिति में अर्जुन लड़ता तो निश्चित ही पराजित होता। केवल श्रीकृष्ण की शरणागति के पश्चात् प्राप्त गीतोपदेश के कारण अर्जुन विजय को प्राप्त हुए। हम भी ऐसी अवस्था में गीता की शरण में जाकर हमारे ही मन को ठीक करें तो अनायास उस नकारात्मकता पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरे ही अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने स्थितप्रज्ञ होने का जो मार्ग बताया है वह हमारे लिए अत्यन्त उपयुक्त है। स्थितप्रज्ञ के लक्षण बताते समय आरंभ में ही भगवान ने कहा -

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

अर्थात् जो व्यक्ति कामनाओं से मुक्त होकर स्वयं से स्वयं संतुष्ट रहना सीख लेता है वह स्थितप्रज्ञ होता है। हम अपने सुख की खोज बाहर करते हैं। परिस्थिति पर तथा दूसरों पर हम अपने सुख को निर्भर रखते है। मुझे यह वस्तु प्राप्त हुयी तो मैं सुखी बनूँगा, उसने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया तो मैं आनंदित रहूँगा... ऐसी कामनाएँ सदैव मन में रखने से हमने अपने आप को दुःखी रहने की आदत लगा ली है। भगवान कहते हैं कि आप के आनंद का झरना अंदर ही है, न की बाहर! 'आत्मन्येवात्मना तुष्टः' यह एक संकल्पना हम अपने जीवन में लाते ही दुःखों का दूर जाना आरंभ होता हैं।

प्रातः सूर्योदय के साथ उठते ही भगवान का स्मरण हो, प्रकृति के प्रति धन्यवाद का भाव हो, मुख पर प्रसन्नता हो, योगासन-प्राणायाम- ध्यान हेतु समय निकालें, कुछ अच्छा सुनें और भक्तिमय पूजन करें, सात्त्विक आहार लें। ऐसा करने से हमारी चित्तवृत्तियाँ प्रसन्न रहती हैं। यह अभ्यास निरंतर कुछ दिन निग्रहपूर्वक करने से स्वयं से स्वयं संतुष्ट रहने की आदत लगने लगती है।

दिनभर के कार्य में भगवान के लिए ही कार्य कर रहे हैं यह भाव रखना, सभी से मैत्री का भाव बनाए रखना, किसी भी व्यक्ति पर या प्रसंग में क्रोधित नहीं होना, अपनी प्रतिक्रियाओं को संयमित रखना, भूल से भी किसी के भी प्रति नकारात्मक नहीं बोलना। इस प्रकार की छोटी-छोटी आदतें स्वयं में आए इसका अभ्यास करने से यह आनंद का झरना सदैव प्रवाहित रहता है।

गीता का अभ्यास करते-करते जीवन में गीता उतारने का प्रयास ही जीवन के कल्याण का एवं शाश्वत विजय का मार्ग हैं।

- डॉ. संजय मालपाणी



सम्पादकीय



डॉ. आशू गोयल
अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार

रामः शस्त्रभृतामहम्

'शस्त्रधारियों में राम मैं हूँ!'

परम परमेश्वर सचिदानन्दघन भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है - रामः शस्त्रभृतामहम् अर्थात् शस्त्र धारण करने वालो में राम मैं हूँ! अद्भुत बात है भगवान कृष्ण, कृष्ण भी है एवं राम भी है। आइये तनिक रामजी के शस्त्र क्या हैं उनको जान लें। जैसे भगवान कृष्ण ने युद्ध के मैदान में अर्जुन को ज्ञान दिया वैसे ही भगवान राम ने युद्ध के मैदान में विभीषण को ज्ञान दिया। उस ज्ञान में भगवान राम ने अपने शस्त्रों के बारे में जो बताया उसको तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के लंका काण्ड में बड़ी ही सुन्दरता से वर्णन किया है

ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥

ईश्वर का भजन ही (उस रथ को चलाने वाला) चतुर सारथि है। वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है।

भगवान कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में प्रचलित अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग किया ही नहीं, भगवान राम के बताये शस्त्रों के बल पर ही भगवान कृष्ण ने महाभारत का युद्ध जीता। इसीप्रकार गीता परिवार भी राम जी के इन शस्त्रों का प्रयोग कर रहा है, गीता परिवार ने लर्नगीता प्रोग्राम को दिव्य रथ ही बना लिया जिसकी प्रभा 182 देशों में विस्तारित हो गयी, आज लर्नगीता में आठ हजार कार्यकर्ता निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं जो रामजी की सेना के समान ही अनुपम पराक्रम कर रहे हैं। आठ लाख से भी अधिक गीता पिपासुओं को ये कार्यकर्ता गीतामृत पहुँचा रहे हैं! इस लर्नगीता कार्यक्रम के 82 विभाग ही इस रथ के तेजोमय चार घोड़े हैं जो मन

के समान गति से गीता को पूरे विश्व में घर घर एवं हर कर तक पहुँचा रहे हैं। राम जी के शस्त्रों के प्रतीक ये सभी श्रीराम के ही योगेश्वर स्वरुप के संकल्प को पूर्ण करने में लगे हैं, गीता मैत्री न्यूज़लेटर भी रामायण की तरह लर्नगीता के कार्यरूपी चरित्र को स्वयं में समेटने का कार्य करता है जो कि पूर्णत: तो संभव नहीं किन्तु अंशत: अवश्य कर रहा है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं एवं उन्होंने अपना जीवन धर्म के मार्ग पर चलते हुए व्यतीत किया। वे एक उत्तम योद्धा भी थे तथा उन्होंने अपने शस्त्रों का प्रयोग मात्र धर्म की रक्षा के लिए किया। गीता परिवार का मानना है कि राम के शस्त्रों का प्रयोग केवल धर्म की रक्षा के लिए किया जाना चाहिए। गीता परिवार अपने शस्त्रों का प्रयोग केवल सत्य और धर्म को स्थापित करने के लिए करता है।

इस षष्ठम संस्करण में विदेशो में हुए गीता मैत्री समारोहों को बड़ी ही सुन्दरता से लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है, साथ ही Linguistic Kaleidoscope भाग के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं में लर्नगीता के विषय में अनेक प्रकार से लिखा गया है जो लर्नगीता पर बनी एक रंगीन फिल्म के समान प्रतीत होता है, 'Soulful Stangas' भाग में कुछ कविताओं को भी संकलित किया गया है जो विशेषरूप से गीता परिवार व लर्नगीता प्रोग्राम पर लिखी गयी हैं। आशा है पाठकों को यह संस्करण आनन्द एवं लर्नगीता की विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा।

सुधि पाठक अगले अंक हेतु अपने लेख, चित्र अथवा अन्य सामग्री newsletter.geetamaitri@gmail.com पर भेज सकते हैं। समिति द्वारा चयनित लेख, कवितायें व अन्य सामग्री अगले अंक में समाहित की जायेगी।

- डॉ. आशू गोयल



स्तर 2 शुभारम्भ समारोह



26th Batch - Jul23 - 7 जुलाई 2023

https: www.youtube.com/live/J47Lxk4Fn6I?si=VesPVWErQcyA66-t

अत्यन्त हर्ष एवं आनन्द के साथ 26वें स्तर - 2 (जुलाई) बैच का शुभारंभ समारोह दिनांक 7 जुलाई 2023 को सायं 7.00 बजे आरम्भ हुआ।

परम श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविंददेव गिरिजी के आशीर्वादों के साथ गीता परिवार के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय श्री आशू भैया की उपस्थिति में सौ. मृदुला दीदी असावा ने कार्यक्रम का सूत्र संचालन किया। हनुमान चालीसा पाठ के उपरांत मृदुला दीदी ने दीप प्रज्ज्वलन हेतु एक सुंदर काव्य के द्वारा राजस्थान, जयपुर से भावना दीदी शर्मा को आमंत्रित किया।



आओ एक दीप जलायें,
भगवद्गीता घर घर लायें
हर मुखमंडल खुशियां डोलें,
ज्योतिर्मय हो मन लहराये
निशा दिवस बन जाये,
हर कर गीता आये
बरसते प्रेमरस में सभी नहायें
ज्ञान का अलख जले,
निर्भय जन मन प्राण हों
आज गंगा धरती पर लायें



विजया ताई गोडबोले की सुमधुर वाणी की ध्वनि मुद्रिका द्वारा शारदा स्तवन के साथ दीप प्रज्ज्वलन सम्पन्न हुआ। तदुपरांत आदरणीय आशू भैया गोयल जी ने सभी साधकों का स्वागत अपनी ओजस्वी वाणी से किया।



आ. आशू भैया ने कार्यक्रम का प्रास्ताविक आरम्भ करते हुए कहा कि भगवान की मंगलमय कृपा से आज हम पुनः एक नवीन शुभारंभ उत्सव मना रहे हैं। यह हमारी जीवन यात्रा को नवजीवन देने वाला क्षण है। मन आनंद से भर गया है, मुझे वह दिन याद है जब 2020 में कोरोना के संकट काल में हमने 2500 प्रशिक्षार्थियों के साथ यह

गीता ज्ञानयज्ञ आरम्भ हुआ था। आज छह लाख सोलह हजार प्रशिक्षार्थी, तेरह विभिन्न भाषाओं में लगभग 2000 वर्गों में प्रशिक्षकों सहित लगभग पाँच हजार सेवियों द्वारा इस अद्भुत गीतायज्ञ में अपने अज्ञान एवं दुर्बलताओं की आहुति देकर ज्ञानवान् बनेंगे।

यह संभव हुआ है परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महराज के अनुपम कृपा एवं संकल्प से, एक महापुरुष की दिव्य ज्ञानदृष्टि से, जिनकी दूरदृष्टि मार्गदर्शक पाथेय बन गयी है। हम नहीं जानते थे कि एक छोटा सा बीज एक दिन बड़ा सा वटवृक्ष बन जायेगा, एक ऐसा गीता परिवार बन जायेगा, जो विश्व के सभी लोगों का समावेश कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का वाक्य सार्थक करेगा। गीता परिवार में जो एक बार आ जाए वह फिर जाने का विचार भी नहीं ला सकता, यहाँ कोई अपने मित्र के कहने पर, कोई किसी रिश्तेदार के निर्देश पर, कोई आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे इन्स्टाग्राम, फेसबुक या WhatsApp पर जानकारी पाकर जुड़ा हैं।

यह गीता आरंभ में संस्कृत भाषा में होने के कारण थोड़ी जटिल लगती है किन्तु बिना मूल्य अमूल्य सेवा देने वाले प्रशिक्षक इसे सरल बना देते हैं। जिस प्रकार मां के लिए अपने बेटे के तोतले बोल भी प्यारे होते हैं, ठीक उसी प्रकार आपके उच्चारण त्रुटिपूर्ण होते हुए भी आप प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

गीता परिवार का उद्देश्य केवल संस्कृत का शुद्ध उच्चारण सिखाना ही नहीं वरन् इन अमूल्य गीता में बताये गये योगों को जीवन का अंग बनाकर आपके जीवन में उतारने की शिक्षा देना है। योगशास्त्र क्या है ?

योगासन ही योगशास्त्र नहीं है, यह तो योगशास्त्र का अति सूक्ष्म अंग है। गीता योग सिखलाती है। गीता समग्र योग की बात सिखलाती है '**योगः कर्मसु कौशलम्**' कुशलता से किसी कार्य को करना योग कहलाता है।



यो न हृष्यति न द्वेष्टि,
न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी,
भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥



जो अनुकूल प्रतिकूल की परवाह न करते हुए समत्व भाव से सारे कर्म उस परमात्मा से जोड़ देता है, वह योगी भगवान को प्रिय है। हम जितने गीताजी में रममाण होंगे उतना हमारा उत्कर्ष होगा, हमारी सोच व कृति दोनो में परिवर्तन आता है और

सुखदुःखे समे कृत्वा,
लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व
नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

जय पराजय लाभ हानि किसी बात की परवाह न करने की स्थिति में हम आ जाते हैं।



अब दूसरा प्रश्न यह है कि .....

गीताजी कंठस्थ क्यों की जाये ?



यदि हम गीताजी कंठस्थ न करें तो वह ग्रंथ में ही सीमित रहेगी, यदि आपके पास ग्रंथ नहीं तो गीताजी नहीं। कंठस्थ करने से गीताजी सदैव आपके साथ रहेंगी, रात - दिन, सोते - जागते आप भगवद्स्मरण कर सकते हैं।

शुद्ध उच्चारण क्यों आवश्यक हैं ?

शुद्ध उच्चारण से गीता के श्लोक गेय हो जाते हैं। गेय होने पर भाव समा जाते हैं, वह केवल एक क्रिया नहीं रह जाती, गेयता मन को आनंद देती है। एक बार कंठस्थ होने पर गीताजी जन्म जन्मांतर हमारे साथ रहती हैं। एक तीन वर्ष का बालक मां की गोद में बैठकर, सारी गीता कंठस्थ करता है, यह उसके पूर्व जन्म का सुकृत है। श्री आशू भैया के इस वक्तव्य के पश्चात् कंठस्थीकरण के प्रात्यक्षिक हुए जिसमें आठ वर्ष का छोटा बालक कु. जयेष्णु, श्रीमती शिल्पा राठीजी, श्रीमती सोनाली महावर जी, श्रीमती सनिका जी व श्रीमती जयश्री जी सम्मिलित हुए।

प्रात्यक्षिकों का आनंद लेते व देते हुए श्री आशू भैया ने सभी से जीवन की व्यस्तता से कुछ समय निकालकर 40 मिनट की कक्षा के लिए प्रोत्साहित किया।

भुवनेश्वर उड़ीसा में हो रहे मैत्री मिलन का व UAE (Dubai) में होने वाले 16 जुलाई के स्नेह मिलन का आमंत्रण जूम प्रांगण में उपस्थित सभी जनों को दिया। गीता कक्षाओं से संबंधित कुछ सकारात्मक प्रतिक्रियायें L2 में प्रविष्ट साधकों ने दीं, जिसमें एक तामिलनाडु के निवृत्त पुलिस निरीक्षक का कथन **'जो गीता अब तक कोर्ट तक सीमित थी, वह दैनंदिन जीवन में आ गयी'** बड़ी सटीक व मार्मिक था। मृदुला दीदी का सूत्र संचालन सराहनीय था। इसी प्रकार अन्य भी बहुत सुंदर एवं भावुक मनोगत प्रशिक्षार्थियों द्वारा बोले गये। कार्यक्रम का समापन प्रार्थना के साथ हुआ। सभी आगामी वर्ग हेतु उत्साही थे।

स्तर 4 शुभारम्भ समारोह

5th Batch - May23 - 17 जुलाई 2023

https://www.youtube.com/live/9tZdw9wLe9U?si=NoGAh5ME0jTf8xa5



मई 2023, (स्तर 4, भाग -II) का शुभारंभ समारोह 17 जुलाई 2023 को सायं 7:00 बजे हुआ। भक्तिरसपूर्ण सुमधुर प्रार्थना से तन मन शुद्ध कर, जूम प्रांगण को ज्योतिर्मय करने के लिए मुम्बई से तकनीकी सहायक व ट्रेनर श्रीमती गायत्री सिंह जी ने सूत्र संचालक के रूप में कार्यक्रम का आरंभ किया। ईश्वर की आराधना के पश्चात् स्वागत भाषण व गीता संदेश देने हेतु गीता परिवार के आधारस्तंभ, ऑनलाईन गीता संथा वर्ग के संचालक, गीता परिवार के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, बहुमुखी प्रतिभा के धनी हमारे आदरणीय आशू भैया गोयल जी पधारे।

सभी साधकों को संबोधित करते हुए आ. आशू भैया जी ने कहा कि भारत के हर कोने से, विभिन्न संप्रदायों से, विभिन्न मठों से, तीन धामों की गीता यात्रा कर आप सभी इस चतुर्थ धाम में आ पहुंचे हैं। ऐसा एक भी सम्प्रदाय नहीं है जहाँ गीता का आदर न होता हो। केवल भारतीय आचार्य विनोबा भावे या लोकमान्य तिलक ने ही गीताजी पर भाष्य नहीं लिखे, वरन् शास्त्र परंपरा को मानने वाले पाश्चात्य तत्त्वचिंतक (Physicist)Oppenheimer से लेकर (philosopher of Pessimism) Schopenhauer तक द्वारा गीता पर भाष्य व टीका लिखी गयी हैं। कोई भी ऐसा नहीं जो गीताजी से प्रभावित न हुआ हो। गीताजी पर आज तक अठारह सौ (1800) प्रामाणिक टीकायें हुई हैं। आपके जीवन में गीताजी ने मात्र श्लोक सीखने के लिए प्रवेश नहीं लिया है, वरन् एक असीम उपलब्धि के स्वरूप में आपके क्लेश शांत करने हेतु, उलझनों को सुलझाने हेतु, स्वास्थ्य लाभ देने हेतु आपको चुना है। प्रारम्भ में जटिल लगने वाली संस्कृत भाषा, शनैः शनैः त्रिष्टुप छंद के श्लोक भी अब मुखोद्गत कराने लगी है।

अब प्रश्न उठता है कि यदि अन्य कोई भी भाषा (फ्रेंच, जैपनीज, जर्मनी, मॅन्डेरिन) सीखते या अन्य ग्रंथ पढ़ते, तब भी क्या दैवी घटनायें घटतीं, जो आज आप अनुभव कर रहे हैं। इसका उत्तर है.....

यह भगवान कृष्ण के मुखारविन्द से निकली मंगलमयी वाणी है, जिसे हम शुद्धता से उच्चारित करते हैं। परिणामतः सारा वातावरण भक्तिमय हो जाता है। श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि महाराज कहते हैं .....

'Chanting with Pure and correct Pronunciation creates such Vibrations which alters the Brain cell's programming'

योग क्या है ? श्लोकों का शुद्ध उच्चारण शारीरिक व मानसिक दोनों व्याधियों को नष्ट करता है। भगवद्वाणी का प्रसार दैवी शक्तियाँ करती हैं, ये शक्तियाँ हमारा मानसिक संतुलन संभाले रखती हैं, जिसे योग कहते हैं।

गीता में योग की व्याख्या कुछ इसप्रकार है - समत्वं योग उच्यते, जीवन में समता ही योग है। प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को संतुलित रखना ही योग है। योग के दो प्रकार हैं

1. योगः कर्मसु कौशलम् (कुशलता से कर्म करना योग कहलाता है) इसे बहिरंग योग कहते हैं।

2. **समत्वं योग उच्यते** (कर्म करने पर यदि अपेक्षित परिणाम न मिले तब भी संतुलित रहें) तब इस समत्व योग को अंतरंग योग कहते हैं।

हमारे जीवन में अनेक उलझनें रहती हैं, इसिलिये हम संतुलित नहीं रहते। गीताजी पढ़कर यह समत्व जीवन में आता हैं। आपके जीवन का क्या उद्देश्य हो ?

आप सभी साधकगण अब ज्येष्ठतम (Super Senior) हो गये हैं, आप अब केवल चालीस मिनट की कक्षा व 1 - 2 घंटो के विवेचन सत्र तक सीमित न रहें। अब आप स्वाध्याय आरंभ करें। कानपुर IIT की gitasupersite पर जाकर महापुरुषों की श्लोकों पर लिखी मीमांसा व अर्थ चिंतन का अध्ययन कर सकते हैं। महापुरुषों के विशाल कोष उपलब्ध हैं, उन्हें आप सब पढ़ें।

'Action plan should be with us, think how can we implement this in our life.'

पास व साथ रहने वालों के साथ उदारता दिखायें, आस पड़ोस से ही आप यह आरम्भ कर सकते हैं। अपना जीवन सत्कार्य में लगायें, सेवा दें, सेवा से साधना प्रगल्भ होती है, पुष्ट होती है, स्थायी होती है। साधना से स्थैर्य आता है।



गीता परिवार ज्ञानी, सुशिक्षित व सुसंस्कारित गुणीजनों से परिपूर्ण है। बाहर कोई कितने ही बड़े ओहदे पर क्यों न हो, गीता परिवार में वह गीता सेवी ही कहलायेगा। आप इन सेवाओं मे से कोई भी सेवा अपने लिए चुन सकते हैं। प्रचार कार्य कर सकते हैं, गीताव्रती तक परिक्षायें उत्तीर्ण कर सकते हैं। यह यात्रा आपके जीवन में नया पड़ाव लाएगी, आप सदा के लिए इस यात्रा के पथिक बन जायेंगे। आप आजीवन यह चालीस मिनट की कक्षा कर सकते हैं। यह नि:स्वार्थ, निष्काम यज्ञ है, आईये इस यज्ञ में सेवा की आहुति देकर जीवन कृतार्थ करें।

कंठस्थीकरण के प्रात्यक्षिक

आदरणीय आशू भैया के सकारात्मक मार्गदर्शन के पश्चात् गीताव्रती उत्तीर्ण साधकों के प्रात्यक्षिक हुए। USA California से 51 वर्षीय श्रीमती सुनीता सोमाणी, संभाजीनगर से 65 वर्षीय श्रीमती मीना अर्जुन पटवाल तथा अकोला से 11 वर्षीय समर्थ राठी ने श्लोकांक के साथ श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का उच्चारण कर प्रात्यक्षिक दिये। गीताजी जब ग्रंथ से कंठ में आ जाये, तो वह हमारी हो जाती है। नींद में भी वह मस्तिष्क में रहती है, यह जन्म जन्मांतर तक साथ रहती है। तीन वर्ष का बालक अपनी मां की गोंद मे बैठ जब प्रात्यक्षिक देता है, तब वह इस जन्म के ही नहीं, पिछले जन्म के भी पुण्यकर्म वहन करता है।



साधकों के अनुभव व मनोगत

कुछ साधकों ने अपने अनुभव कथन किये। आबुधाबी से अशोक भैया ने कहा - देवता जिसकी रक्षा करते हैं वह चरवाहों के जैसे डंडे लेकर पहरा नहीं देते, उसे उत्तम बुद्धि से युक्त करते हैं। महाराष्ट्र लातूर से तुकाराम भैया ने कहा - गीता पढ़ने से दैवी गुणों की वृद्धि और आसुरी बुद्धि कम हो गयी है। गीता परिवार में आकर ज्ञानेश्वरी की यह पंक्तियाँ याद आयीं .....

अवघाची संसार सुखाचा करीन, आनंदे भरीन तिन्ही लोक॥

प्रयागराज से आर. आर. शुक्ला भैया का कथन ....

जिन्दगी की पुस्तक खाली ही रहती यदि गीता परिवार में न आते। गीता परिवार के साथ आज जीवन में एक नया मार्ग प्राप्त हुआ। अंत में सभी गीतासेवियों के आभार प्रदर्शन का कार्य परभणी से श्री मनीष भैया सतपुते ने किया। श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविंद देवगिरि जी महाराज की दूरदर्शिता को वंदन कर, गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आशू भैया गोयल व गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री संजय भैया मालपाणी का शतशः आभार मानकर गीता यात्रा का रथ चलाने वाली 85 विभागों के सभी गीता सेवियों के धन्यवाद के साथ कार्यक्रम अंतिम पड़ाव पर उडूपी की गायत्री दीदी की प्रार्थना व हनुमान चालीसा से समाप्त हुआ।



अनीता दीदी का निवेदन सम्पूर्ण कार्यक्रम को एकसूत्र में बांधने में सफल रहा।

अन्य शुभारम्भ समारोह

27th Batch - Jul23 L1 Opening Ceremony - 21st July 2023
https://www.youtube.com/live/_-v3_ecp35o?si=GK6WmlOOuOD_ZTNj

13th Batch - Apr23 L3 Opening Ceremony - 21st August 2023
https://www.youtube.com/live/62NH-tG98WA?si=bBL0pthj90fnz27L

27th Batch - Jul23 L2 Opening Ceremony - 4th September 2023
https://www.youtube.com/live/fqFc7D1vTPo?si=bgHxpgyF1j-QaCrw

28th Batch - Sep23 L1 Opening Ceremony - 15th September 2023
https://www.youtube.com/live/t5mzsvR7R7M?si=8d4Jgiimh0ibSjcC

14th Batch - Jun23 L3 Welcome Ceremony - 22nd September 2023
https://www.youtube.com/live/9iYLOwhaxIw?si=cLHkVknElABaEU7L

A Divine Odyssey

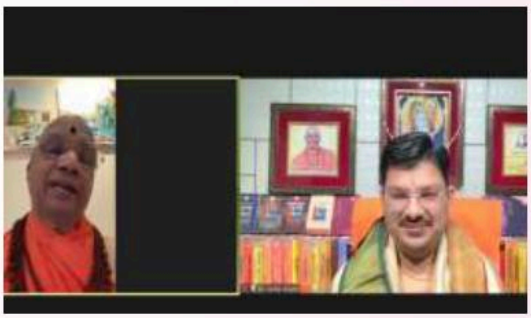
GLOBAL AKHAṆḌA AṢṬĀDAŚA GĪTĀ PĀRĀYAṆA

https://www.youtube.com/playlist?list=PLt9vl5oHqdoEInKbWUkdop4COXHiC5Ez2

In a historic milestone, Geeta Pariwar recently accomplished a monumental feat with the successful completion of the Online Akhanda Ashtadasa Geeta Parayana. This colossal endeavor was made possible through the divine blessings of Shri Krishna and under the guidance of the revered Param Pujya Swami Govindadev Giri Ji Maharaj, respected Sanjay Malpani Ji, and esteemed Ashu Goyal Ji. The hearts of all involved swelled with pride and gratitude towards the supreme power and the visionaries who orchestrated this spiritual extravaganza. The profound verse from the sacred Shrimadbhagavadgeeta

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥2.69॥

beautifully encapsulates the essence of the Online Akhanda Parayana. It transcended time and boundaries, guiding participants through an unforgettable pilgrimage, leaving indelible footprints in their intellects to progress further on this divine path. Scheduled on the auspicious Geeta Jayanti Mahotsava, from Saturday, 23rd December, 6 am to Sunday, 24th December, 12 AM (IST), the event unfolded as a testament to the commitment and dedication of the Geeta Pariwar.



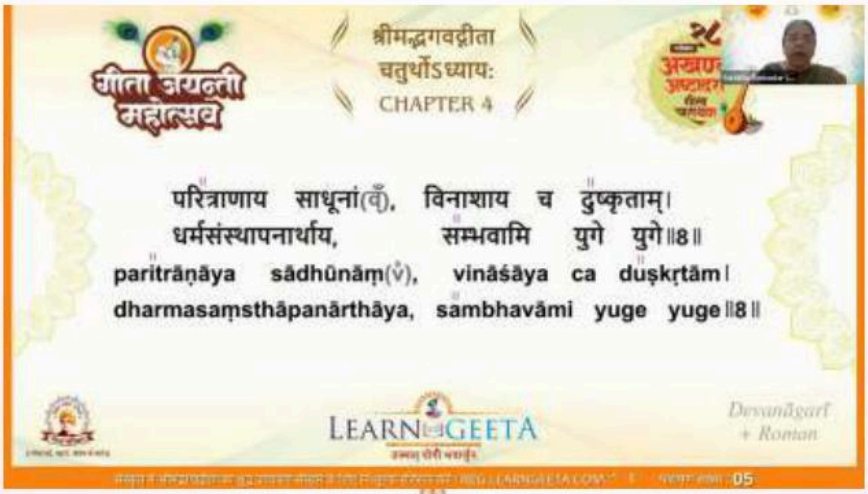
The guiding principle of "yogaḥ karmasu kauśalam" was evident in the diligent efforts of the team. They proved to be both "Karma Yogis" and "Gudakeshis" (conquerors of sleep). Behind the scenes, hands worked tirelessly in areas of creativity, technology, planning, and communication. The numbers speak for themselves. The backend team is necessary for any project to run in harmony. Our backend team comprised of 146 members, out of which there were 10 Group Coordinators, 24 Technical Supporters (excluding NRI's), 17 Video Editors, 20 members from the Planning Team, 25 Recording Tech, 15 Sharing Techs, 35 Backend support team (Messaging/Backup/calling).

The ambrosial chanting was carried out by a group of 308 members, which included 224 Trainers (Excluding NRIs), 18 Sadhaks, 18 Kids, 30 NRIs and 18 Anchors. Led by visionaries who continuously motivated the team. Geeta Pariwar was immersed in a blissful journey that spanned 42 uninterrupted hours. The soulful chants transcended digital barriers, creating a sense of belonging through a divine string that connected hearts globally.

Swamiji's message, "Har Ghar Geeta, Har Kar Geeta," resonated as a melodious string during this Geeta Jayanti Mahotsava, adding another layer to the event – Har Swar Geeta. This magical occurrence, where The Divine Geeta became the heartbeat for lakhs globally, wouldn't have been possible without the relentless efforts of the brilliant team. Their passion, fueled by the eternal power of Geeta, made this event a monumental success. In conclusion, Geeta Pariwar extends its heartfelt congratulations and blessings to the entire team and the sadhaks who joined from across the globe in creating magnificent history. This unique experience has bestowed an unforgettable and unfathomable divine bliss, serving as a source of motivation for the journey ahead.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥9.22॥

For those who unwaveringly contemplate and worship Me with undivided focus, I personally ensure their well-being and the maintenance of what they have. The Online Akhanda Ashtadasa Geeta Parayana stands not just as an event but as a divine odyssey that has left an indelible mark on the souls of those who participated, igniting a flame that will continue to illuminate their spiritual paths.



गीता चिन्तनिका

4, 5, 6वाँ अध्याय - 13 जुलाई 2023

https://www.youtube.com/live/Mnd1qn9_80w?si=ks5NToF20S9wJUI6

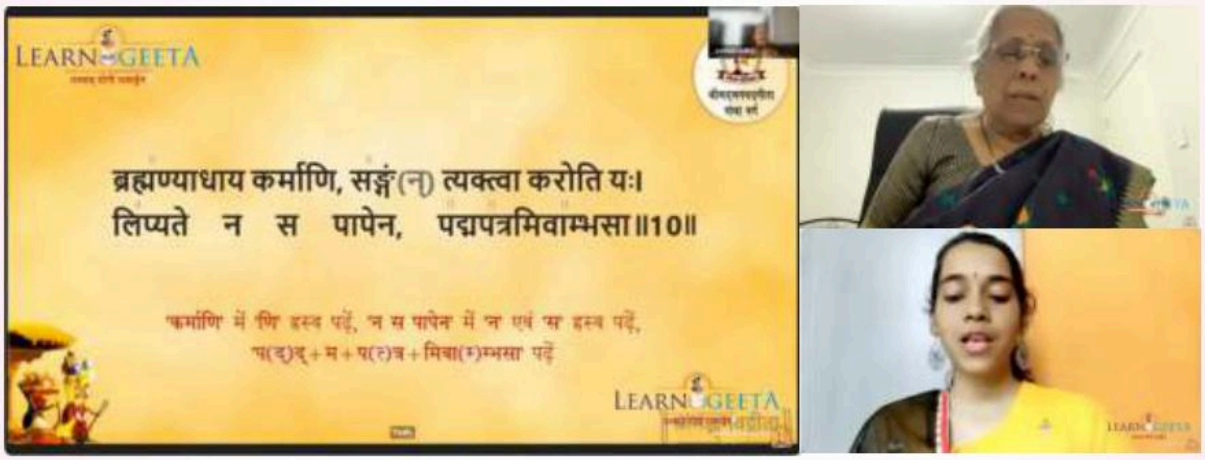


प्रति-एकादशी श्रीमद्भगवद्गीता पारायण आणि चिंतन- कामदा एकादशी गुरुवार १३ जुलै २०२३ कामदा एकादशी गुरुवार १३ जुलै २०२३ या दिवशी अध्याय चार, पाच, आणि सहा यांचे पठण आणि चिंतन झाले. कार्यक्रमाची सुरुवात, "ईश्वर भक्तिभाव से बहती संस्कारों की धारा" या गीताने झाली. त्यानंतर हनुमान चालीसा पाठ आणि श्रीकृष्णाष्टक झाल्यानंतर, श्रीमती किरण अरोरा जी यांनी सूत्रसंचालन करण्यास सुरुवात केली. त्यांनी सांगितले श्रावण महिन्यातील पहिल्या एकादशीला कामिका एकादशी असे म्हणतात. आपल्या हातून जाणता-अजाणता घडलेल्या पापांपासून या एकादशीच्या व्रतामुळे सुटका मिळते. कार्यक्रमांमध्ये यानंतर ओम प्रकाश जी. बडोदा गुजरात यांनी चतुर्थ अध्यायाचे पठण केले. लक्षी दीदी व्यास अहमदाबाद गुजरात यांनी पंचम अध्यायाचे पठण केले. षष्ठम अध्याय मेघा दीदी परळी वैजनाथ, व देवांश पुणे यांनी अनुक्रमे सादर केले. अत्यंत अस्खलितपणे सर्व साधकांनी अध्यायांचे पठण केले नंतर याच अध्यायांचे विवेचनही पार पडले. सर्वप्रथम श्रेष्ठ अशा चतुर्थ अध्यायाचे सुनंदाजी पुणे यांनी विवेचन केले.

पूज्य स्वामीजी गुरु गोविंद जी महाराज यांना प्रणाम करून त्यांनी सांगितले की भगवद्गीता ही जीवन गीता आहे. भगवान श्रीकृष्ण परमात्म्याने अर्जुनाच्या माध्यमातून संपूर्ण मानव जातीस जीवन जगण्याचा आदर्श मार्ग कसा असावा याचा उपदेश केला आहे. हे श्रीकृष्णाने प्रथम सूर्याला सांगितले होते. काळाच्या ओघात ही परंपरा लुप्त झाली म्हणून श्रीकृष्णांनी ते ज्ञान पुन्हा अर्जुनाला सांगितले व त्याला उर्जितावस्था प्राप्त करून दिली. साधारण कर्म व नियत कर्म, धर्माधिष्ठित कर्म, योग, यज्ञ, आणि ज्ञानयज्ञ सर्वश्रेष्ठ आहेत. शांती व समाधान, ज्ञानींना शरण जाणे, नम्रतेने वागणे, इंद्रिय मन बुद्धी यांचा निग्रह, हे सुद्धा यज्ञ आहेत, योग, तप, स्वाध्याय यांनाही यज्ञच म्हटलेले आहे, आणि हा यज्ञ सर्वश्रेष्ठ आहे, परमात्म्याची प्रचिती व प्राप्ती योगानेच होते आणि हे ज्ञान प्राप्त करण्यासाठी तत्त्ववेत्ते, ज्ञानी, साधुसंत यांना शरण जाणे हेच मानवी जीवनाचे कर्तव्य आहे, असे त्यांनी सांगितले.

अध्याय पाचवा - लक्षी दीदी नागपूर, कर्म संन्यास योग नावाच्या सहाव्या अध्यायाबद्दल बोलताना म्हणाल्या, मानवी जन्मात येऊन मन व इंद्रिये नियंत्रित करणे गरजेचे आहे. याशिवाय योगप्राप्ती शक्य नाही. कर्म संन्यास व कर्मयोग दोन्ही कल्याण कारक आहेत. परंतु हे अर्जुना तुझ्यासाठी कर्मयोग श्रेयस्कर आहे आणि म्हणून तोच मी तुला सांगतो, कारण तू गृहस्थाश्रमी आहेस व गृहस्थाने भगवद्गीता समजणे व आचरण करण्यासाठी संन्यास घेण्याची आवश्यकता नाही, म्हणून सरळ सोपा कर्म मार्ग मी तुला सांगतो. अर्जुना आपण केलेले प्रत्येक कर्म त्याच्या फळाची आशा न धरता मला अर्पण कर, म्हणजेच श्रीकृष्ण

परमात्म्याला अर्पण कर, जसे की पाण्यात असून सुद्धा कमळाला चिखल लागत नाही, त्याप्रमाणे मला कर्म अर्पण करण्याने साधकाला त्याचा दोष लागत नाही, मनुष्याने साधना केली पाहिजे त्यामुळे अंतकरण पवित्र बनते, परमेश्वराची कृपा प्राप्त होण्यासाठीची पात्रता येते, स्वशुद्धी होते, आणि म्हणूनच मन व बुद्धी परमेश्वराच्या ठिकाणी असली पाहिजे. यानंतर सहाव्या अध्यायासाठी कृतीजी वंदन लखनऊ यांनी मार्गदर्शन केले. आत्मसंन्यास योग नावाच्या श्रेष्ठ अध्यायाबद्दल बोलताना कृतीजी म्हणाले- जोपर्यंत इंद्रियांवर आपण ताबा मिळवत नाही तोपर्यंत आपल्याला योगाभ्यास प्राप्त करणे शक्य नाही. आपण आपल्या अपयशाचे कारण नेहमी दुसऱ्या व्यक्तीला समजतो परंतु भगवान सांगतात की आपण स्वतःच आपल्या यश किंवा अपयशासाठी कारणीभूत असतो. मन व इंद्रिये यांच्या संयमाने आपणच आपले कल्याण करू शकतो. सर्वाभूती समानता त्याच्या ठाई असते, मित्र, शत्रू, साधू, चोर, यांना तो एकाच दृष्टीने पाहतो, की ते सर्वप्रथम जीव आहेत मनुष्य आहेत. अशा प्रकारे मन इंद्रियांना वश करणारा साधक परमशांती प्राप्त करतो.समापन प्रार्थना सोहम भैया यांनी केली व हनुमान चालीसा पठणाने कार्यक्रमाची सांगता झाली.



Other Sessions-

गीता चिन्तनिका सत्र - 7, 8, 9वाँ अध्याय - 29th July 23
https://www.youtube.com/live/QX6rOCfkEZE?si=cj86gy5GINGAWha1

गीता चिन्तनिका सत्र - 13, 14, 15वाँ अध्याय - 23rd Nov 23
https://www.youtube.com/live/dbaKJd1rslw?si=HeT17NKTv5PUQvkO

गीता चिन्तनिका सत्र - 16, 17, 18 वाँ अध्याय - 9th Dec 23
https://www.youtube.com/live/CXiooPFuf_g?si=6dVISMRG9FfnDgy5

आओ गीतासेवी बनें

Be A Geeta Volunteer 8th Oct23

https://www.youtube.com/live/Lb5BfE_Rvtw?si=ldQBvhpyl-CZmaRb

Be a Geeta Volunteer : A Path to Serving Humanity

Introduction



On the 8th of October 2023, LearnGeeta Pariwar organized a transformative webinar aimed at shedding light on the various departments crucial to the success of LearnGeeta. Distinguished senior volunteers took the stage to articulate the roles of volunteers and the specific requirements for each department. The gathering commenced with a heartfelt "Jai Shree Krishna," emphasizing the importance of balancing devotion and strength in our lives. This event, "Be a Geeta Volunteer," sought to encourage individuals to contribute their time and energy to the LearnGeeta community. To begin the program, Ms. Supraja Didi recited a prayer, highlighting the significance of reaching out to the divine for blessings and making our lives more meaningful with the time we have.

The Geeta Pariwar Network - Geeta Pariwar offers numerous opportunities for individuals to serve and be part of a vast network dedicated to spiritual growth and community service. These opportunities are spread across eleven distinct departments, each with a unique purpose and set of requirements.

1. **Calling and Support -** The Calling and Support Team serves as the foundation of the Geeta Pariwar network, where the initial interaction with members begins. This department is responsible for welcoming new members, assisting with attendance, resolving issues, providing support during events, and more. To join this department, individuals must be above 18 years of age, commit at least 15 to 20 minutes daily, and have a genuine willingness to assist others

2. **Technical Assistance and Communication -** Technical Assistance and Communication ensure that LearnGeeta sessions run smoothly and efficiently. This department is tasked with tasks like sharing session links, starting sessions on time, and managing technical aspects to guarantee an uninterrupted learning experience. Prospective volunteers should be at least 16 years old and possess a smartphone, laptop, or computer with a stable internet connection. Commitment is essential, as volunteers are expected to dedicate one hour every day for four weeks.

3. Group Coordinator - Group Coordinators play a crucial role in maintaining consistency and communication among all sewis. They ensure that different departments work cohesively to facilitate an effective learning journey. To become a Group Coordinator, one should be at least 25 years old, have coordination skills, basic technology knowledge, and the ability to allocate 1 to 2 hours daily.

4. Admission Department - The Admission Department is responsible for enrolling participants in the Learngeeta journey. It involves two sub-divisions: 'Adding' and 'Communications.' Volunteers in this department must be at least 16 years old and have basic smart phone skills. Training is provided before joining.

5. Creative Writing - The Creative Writing department creates summaries and discussions for Learngeeta sessions in multiple languages. Volunteers listen to live discussions, understand them thoroughly, and rewrite them for learners to understand better. This department provides flexibility, allowing volunteers to work on weekends and weekdays. Prospective volunteers should have a device and creative writing skills.



6. Graphic and Animation Department - The Graphic and Animation Department enhances announcements and messages with visual elements. Volunteers in this department should have graphic design knowledge and familiarity with social media. The work can be done at any time, and support is provided to newcomers.

7. IT and Software Development - The IT and Software Development department is vital to Learngeeta's success. Volunteers here work on maintaining codes, developing new pages, database management, mobile app development, and more. They receive training and aim to make Learngeeta accessible to all.

8. Offline Store - Learn Geeta Pariwar now offers offline services alongside online ones. The Offline Store allows individuals to order Shrimadbhagavadgeeta books in different languages to share the teachings of Lord Krishna. Joining this service enables one to serve society and connect with people globally.

9. Bal Sakha Department - The Bal Sakha Department caters to the youngest members of the Geeta Pariwar. Volunteers below 16 years can join and assist with various tasks, such as adding new learners and resolving issues.

10. Geeta Pracharak Dept. - Geeta Prachark services connect people with the LearnGeeta platform, providing essential tools like flyers, pamphlets, banners, and social media materials to spread awareness.

11. Trainers - Volunteering as a trainer involves teaching Geeta and deepening one's understanding of its teachings. To become a trainer, individuals should be at least 18 years old and have passed at least one of the Geeta exams with a score of at least 85%.

How to join a Department

To join any of these services, individuals can visit LearnGeeta.com and fill out the respective form for the department they wish to be a part of. To be part of more than one department, one should fill in separate form.



Conclusion

The LearnGeeta webinar provided detailed information about the eleven departments where individuals can serve as Geeta Volunteers. Following the informative sessions, a Question-Answer session allowed participants to seek further clarification on these roles. The event concluded with an inspiring message about the significance of service, emphasizing that by becoming a part of the Geeta Pariwar community, individuals can contribute to this profound Mahayagya, deepening their spiritual journey while serving humanity. Respected Ashu bhaiya and Geet Goving Bhaiya guided the participants clarifying their questions to their satisfaction.

Other Sessions

2nd Jul 23 - https://www.youtube.com/live/P6dfrDggjNQ?si=11X8YYYj27Cpp9ze

20th Aug 23 - https://www.youtube.com/live/n4CEIRmcg5w?si=Wg7LMKdfeJT4ncx6

10th Dec 23 - https://www.youtube.com/live/HAwByaHVVdI?si=HoclDdqP06ThsAfb

गीता मैत्री मिलन, उड़ीसा

डॉ. आशू जी गोयल के संग 9 जुलाई 2023

https: www.youtube.com live sg4ShNdxYXw?si XI8124-e0ega1-aA



गीता देश की एक-एक गली में गुंजायमान हो जाये इस उद्देश्य से हो रहे इन गीता मैत्री कार्यक्रमों की श्रृंखला में गीता परिवार पहुँचा भगवान् जगन्नाथ की भूमि में। उड़ीसा में 9 जुलाई 2023 श्रावण मास कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथि रविवार को गीता मैत्री मिलन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का आरंभ मंत्रोच्चार द्वारा कलश स्थापना के साथ किया गया। पूरा हॉल गीता मैया की जय के उद्घोष से गूँज उठा। तत्पश्चात् आदरणीय डॉ. आशू भैया जी, उनकी धर्मपत्नी आदरणीया पूजा दीदी जी व गीता प्रवीण रूपल शुक्ला दीदी जी, श्री केशव पात्रो जी, श्री प्रमोद मोहन्ती जी, श्री रघुनाथ पाड़ी जी द्वारा दीप प्रज्जवलन किया गया। दीप जो कि ज्ञान व सकारात्मकता का प्रतीक है। हमारी सभ्यता व संस्कृति की अलौकिकता का प्रतीक है।

कार्यक्रम के आरम्भ में 12वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि जयदेव जी के सुप्रसिद्ध गीत गोविन्द की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई। कहते हैं गीत गोविन्द भगवान जगन्नाथ जी को अत्यंत प्रिय है और जहाँ गीत गोविन्द गाया जाता है वहाँ भगवान जगन्नाथ जी स्वयं विद्यमान रहते हैं। कु. नव्या व कु. सुश्री बिटिया ने उड़िया शैली में मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मुग्ध कर दिया।

परमपूज्य गुरुदेव स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज ने ऑनलाइन रह कर अपने आशीर्वचनों से साधकों को भक्ति एवं ऊर्जा से पूरित कर दिया और बताया कि गीता पठन-पाठन ही विश्व कल्याण का मार्ग है। सभी गीताव्रती साधकों को आदरणीय आशू भैया जी ने शाल व पुष्प गुच्छ से सम्मानित किया। गीताव्रती चिरंजीवी स्पंदन हर्षित व चिरंजीवी चंदन चर्चित जी को सादर नमन जिन्होंने बहुत ही छोटी आयु में गीता जी का कंठस्थीकरण कर लिया है।



आ. आशू भैया जी ने सभी को 'अपनी बात अपने से' इस विषय के मध्यम से आत्मसंवाद का महत्व बताया उन्होंने बताया कि हमारा चित्त ही चित्रगुप्त है जो हमारे हर सत्य असत्य से परिचित रहता है। उन्होंने बताया कि एक सफल व्यक्ति के जीवन में पांच बातों का समन्वय आवश्यक है - 1) ज्ञान 2) वित्त 3) स्वास्थ्य 4) परिवार 5) अध्यात्म

ज्ञान - जीवन में व्यवहारिक ज्ञान आवश्यक है और व्यवहारिक ज्ञान हमें बड़ो की सेवा करने से प्राप्त होता है। ज्ञान असीमित है।

हमें ज्ञान अर्जित करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। ज्ञान की उत्सुकता सदैव बनी रहनी चाहिए। हम अपने बुजुर्गो के अनुभवों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। और यह वरिष्ठों के अनुभव से प्राप्त ज्ञान ही जीवन जीने हेतु सच्ची पूँजी है। राष्ट्र को मजबूत बनाने हेतु भी वृद्धों की सेवा एवं उनसे सीखना अत्यावश्यक है इससे हम भूत से सीख लेकर भविष्य को और सुंदर बना सकते हैं। एक राष्ट्र को मजबूत बनाने हेतु ज्ञान सबसे बड़ा साधन हैं अतः निरन्तर अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहें।



वित्त - Money is a great servant but bad master. वित्त का प्रबंधन करें। भविष्य को ध्यान में रखकर वित्त खर्च करे। कर्ज की आदत न डालें। संतोष की आदत डालें। वित्त का उपयोग भोग एवं सदुपयोग दान से होता है। अतः उसका उपयोग उसीप्रकार करें। हम जितना उसका सदुपयोग करेंगे उतना ही उसमे वृद्धि भी होगी। अतः दानादि हृदय के द्वार खोलकर करना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है।

स्वास्थ्य - Prevention is better than cure. सदा मुस्कुराते रहें। मुस्कराहट सबसे बड़ी औषधि है। भगवान ने गीता में भी इस पर जोर डाला है। वे स्वयं युद्ध क्षेत्र में अर्जुन को मुस्कुराते हुए ही गीता कहते हैं। साथ ही उन्होंने प्रसन्नता एक मानसिक तप बतलाया है। अतः जीवन मे सदा प्रसन्न रहना आवश्यक है। प्रसन्नता शांति से आएगी एवं शांति से स्वास्थ्य।

परिवार - परिवार में संतुलन बना कर रखें, दायित्वों का पालन करें। आज जो हमारे अधिकार है कल वही हमारे दायित्व हैं। बालक वही सीखते हैं जो देखते हैं। अतः अपना व्यवहार संतुलित रखें। जब बालक आपके सुव्यवहार को देखेंगे तो वे भी वैसा ही ग्रहण करते हुए उन्नति को प्राप्त होंगे एवं हम जानते है कि समाज अनेक परिवारों से मिलकर बना होता है अतः यदि हम समाज के लिए उपयोगी कार्य करना चाहते हैं तो आवश्यक है कि उसका आरम्भ परिवार से करें। हम घोषणा करते हैं - हम बदलेंगे युग बदलेगा। अतः परिवार में मधुरता बनाए रखें। सदैव समभाव रखें। छोटो को संरक्षण प्रदान करें व मित्रता का भाव बनाए रखें। तथा इस माध्यम से समाज मे भी इन सभी गुणों को विकसित करें।

अध्यात्म - स्वयं को जानना ही अध्यात्म है। पुरुष प्रकृति का सबसे अधिक उपयोग करता है। विभिन्न जंतुओं में अनेक शक्तियाँ है किंतु मनुष्य सभी का स्वामी है। अतः यदि हमारे पास शक्ति अधिक है तो दायित्व भी अधिक हैं। अतः मनुष्य को मनुष्य तभी माना जा सकता है जब उसके जीवन मे भक्ति या आराधना हो। यही वह तत्व है जो मनुष्य को अन्य जंतुओं से भिन्न दर्शाता है। अतः प्रतिदिन कुछ भक्ति, धर्म प्रचार व संरक्षण, समाज सेवा करें एवं BE SIMPLE BE SAMPLE बनें। 'देश हमे देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें।' हमे अवश्य ऐसा बनना है तथा अपने जीवन मे अध्यात्म तो प्रत्यक्ष लाना है।

इस प्रकाश आ. आशू भैया के द्वारा गहन दार्शनिक विचारों को बड़ी सरलता से सभी साधकों के समक्ष रखा। उन्होंने साधकों को टीम इलेवन जॉइन करने हेतु प्रेरित किया। टीम 11 का उद्देश्य है कि गीता परिवार के कार्य को ऑफलाइन माध्यम से विस्तारित करना। घर घर गीता पहुँचाने हेतु आवश्यक है कि हम धरातलीय स्तर पर कार्य करें। इस हेतु विद्यालयों, मंदिरों, सार्वजनिक हॉल इत्यादि उपलब्ध स्थानों पर गीता के पारायण, बाल संस्कार शिविर एवं अन्य सभी कार्यक्रम कर सकते हैं। इससे जन जन तक प. पू. स्वामीजी का संदेश पहुँच सकता है।

अंत में प्रश्नोत्तर सत्र में आदरणीय आशू भैया जी ने प्रबुद्ध गीताप्रेमियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट किया। तत्पश्चात प्रार्थना के साथ सभा का समापन किया गया।

UAE SNEH MEET

AN OFFLINE INTERNATIONAL EVENT - 16th Jul 2023

https://www.youtube.com/live/BzP0nIVMM3k?si=l-ENsFYUWLO3Y1QV



अत्यंत हर्ष का विषय है कि जिस गीता परिवार का बीजारोपण 1986 में प. पू. स्वामीजी द्वारा संगमनेर में किया गया था आज वह वट वृक्ष के रूप में परिणत हो चुका है और उसकी छाया न केवल भारत वर्ष किन्तु विश्व के 163 देशों तक जा चुकी है। अब तक इस वटवृक्ष की शाखायें ऑनलाईन माध्यम से फैली हुई थी, किन्तु दिनांक 16 जुलाई को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय ऑफलाईन गीता स्नेह मिलन UAE में हुआ।

कार्यक्रम का आरंभ गीता जी के 12वें अध्याय भक्तियोग से किया गया और प. पू. स्वामीजी के विशेष रूप से भेजे गये आशीर्वचनों से सभी ने कृतज्ञता का अनुभव किया। परम पूज्य स्वामी जी ने समझाया कि गीता क्यों पढ़नी चाहिये और अपने जीवन में क्यों लानी चाहिए।



गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी जी एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. आशू गोयल जी ने ऑनलाइन जूम माध्यम से श्रोताओं को संबोधित किया। आदरणीय श्री संजय भैया जी ने बताया कि जीवन में योग का क्या महत्व है। गीता जी का पठन-पाठन हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए और योग हमारे शरीर के लिए अति आवश्यक है।

मुख्य वक्ता के रूप में लर्नगीता कार्यक्रम की प्रोग्राम संयोजक गीता प्रवीण रूपल शुक्ला दीदी जी भारत से वहाँ पहुँची व अत्यन्त गूढ़ विषय 'अहं ब्रह्मास्मि - The Concept of oneness' का निरूपण सहज, सरल व मनमोहक ढंग से किया। उन्होंने बताया कि हम सभी में ईश्वर तत्त्व विद्यमान है। 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी। उन्होंने चंद्रमा का उद्धरण देते हुए बताया कि जिस प्रकार चंद्रमा एक है किन्तु यदि हम किसी बर्तन में पानी भर कर चंद्रमा की परछाई देखें तो हमें भिन्न - भिन्न बर्तन में विभिन्न चंद्रमा दिखाई पड़ते हैं उसी प्रकार हम सभी जीव अलग-अलग होते हुए भी उसी एक ईश्वर की प्रतिकृति हैं। अब इससे किसी के मन में विचार आ सकता है कि फिर सभी जीव उतने पवित्र क्यों नहीं है जितनें ईश्वर? तो यह हम सबके पात्र पर निर्भर करता है। पात्र जितना स्वच्छ होगा चंद्रमा भी उतना ही स्वच्छ दिखाई देगा।



क्रोध पर नियंत्रण रखें और क्रोध पर नियंत्रण रखने का सरल उपाय बताया कि क्रोध बढ़नें न दें। उसे महत्व न दें। क्रोध आने पर कुछ समय शांत रहकर उसे रोका जा सकता है। एक अध्याय गीता का पढ़ें क्रोध अपने आप शांत हो जाएगा। हम जितना अध्यात्म तत्त्व के पास जाते जाएंगे उतना ही आनंदित रहेगें।



चले विवेकानंद मार्ग पर शुभ संदेश हमारा यह गीता परिवार के गीत की पंक्तियाँ आज आशू भैया के सान्निध्य में रूपल दीदी ने चरितार्थ किया।

आदरणीय आशू भैया जी ने प्रश्नोत्तर सत्र में बताया कि सद्गुरु की पहचान कैसे हो? हमें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नियम बना कर चलना होगा और उन नियमों का सख्ती से पालन करना होगा। धर्म की व्याख्या करते हुए बताया कि हमारे निश्चित कर्म ही हमारा धर्म है। भगवान् ने अर्जुन को अपना कर्तव्य न छोड़ने का उपदेश दिया क्योंकि कर्तव्य छोड़ कर किसी का भी कल्याण सम्भव नहीं है। गीता का ज्ञान हमारे ऋषि मुनियों ने संभाल कर हम तक पहुँचाया है और हमें गीता सीख कर अपने ऋषि मुनियों का ऋण चुकाना है।

इस कार्यक्रम के नियोजन हेतु आबूधाबी से बार बार दुबई आकर टेक मैनेजमेंट टीम के प्रमुख श्री सूरज शर्मा भैया ने अद्भुत परिश्रम किया व उनके साथ मिलकर अक्षता दीदी, पूजा दीदी, आकांक्षा दीदी आदि सभी कार्यकर्ताओं ने भी इस आयोजन का बीड़ा उठाया एवं इसको सफलता के उत्कर्ष पर पहुँचाया। श्री वैद्यनाथन जी ने पूरी रात जागकर इस स्नेह मिलन के लिए पोस्टर एवं बैनर्स को प्रिंट करवाकर रात में ही कार्यक्रम स्थल पर लगवाए। श्रीमती सविता बत्रा दीदी का मंच संचालन बहुत ही अद्भुत रहा।

सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि उसी कार्यक्रम में अत्यंत उत्साह के साथ UAE में गीता परिवार की तीन शाखाएँ दुबई, शारजाह व आबूधाबी में स्थापित हो गयीं हैं।

यह कार्य अत्यंत तीव्र गति से चलायमान है। स्वयं योगेश्वर भगवान ही यह कार्य कर रहे हैं, ऐसा अनुभव कार्यक्रम में सभी उपस्थित साधकों व गीतासेवियों ने किया। ऑनलाइन देश विदेश से जुड़कर हज़ारों साधकों ने इस आयोजन का आनंद प्राप्त किया। UAE में नवीन टीम - 11 का भी गठन हुआ जो कुछ इसप्रकार है -



टीम 11 - UAE

1. श्री सूरज शर्मा जी- अध्यक्ष
2. श्री वैद्यनाथन जी - कोषाध्यक्ष
3. श्रीमती अनुजा लाहोटी जी - सचिव
4. श्रीमती भूमिका शाह जी
5. श्रीमती सुमति जी
6. श्रीमती पूजा राय जी
7. श्रीमती सविता बत्रा जी
8. श्रीमती आकांशा राव जी
9. श्रीमती अक्षता जी
10. श्रीमती मनीषा अत्रे जी
11. श्रीमती मनीषा जगेतीआ जी

GEETA MAITRI MILAN, JAIPUR

with Dr. Sanjay Ji Malpani 17th Sep 2023

https://www.youtube.com/live/d1qbEtrpTHg?si=cI5tggQ0-1ZpRlTH



Learngeeta is an innovative educational system designed to disseminate the practical application of Geeta in real-life scenarios, ensuring correct pronunciation and recitation in a simplified manner accessible to learners worldwide. The program's rapid popularity can be attributed to its effective blend of advanced techniques, incorporating both art and science, including cutting-edge IT solutions.

To celebrate the success stories, deciding the way forward in order to obtain blessings of our visionaries, offline meetings are planned at regular intervals at prominent places across the country.



In a similar fashion, a splendid program unfolded on the 17th of September, 2023, a Sunday, at the Deepa Memorial Hall of Tagore International School in the Pink City, Jaipur, Rajasthan. The magnificence of the event was heightened as every participant adorned a distinctive Bhagawa-colored uniform. The enchanting commencement of the program featured the recitation of Mantras, resonating through the hall, led by a special group of Vedic students from Pushkar Ved Mahavidyalya. The ambiance was further enriched with soulful renditions of spiritual compositions such as Shree Madhurashtakam (Adharam Madhuram...), Yogesham Sacchidanandam, Ishwar Bhakti Bhaaw se Bahati, and more. The scene unfolded like a glimpse of a different world, where every element resonated with Bhakti, Devotion, and Samarpan (surrender). The entire setting bore the semblance of a divine dwelling, a Devalok, creating a unique and captivating atmosphere.



The Chief Guest of the programme was National Working President of Geeta Pariwar,



Dr Sanjay Ji Malpani who is well known for his explanations of the Geeta in a lucid way.

The hall was brimming with a distinguished gathering, and as the main organizer of the event, Shri Deepak Bhaiya made his entrance, the atmosphere became charged with emotion. Carrying Geeta ceremonially on his head, he was accompanied by his wife, Smt. Shashi Gupta. The poignant scene unfolded after the Saraswati Pooja, where Shri Deepak Bhaiya and other dignitaries, including the esteemed educationalist Shri Govind Maheshwari Ji from Kota, bestowed honors upon the respected Sanjay Bhaiya. This honor was symbolized by the placement of a traditional Rajasthani turban on his head, embodying the rich cultural values of Aan, Baan, and Shan in Rajasthan.

A cultural dance of Rajasthan (Padharo Mharo Desh) has been performed to welcome the chief guest and invites before address of Chief Guest.



Shri Sandeep Jhawar Ji, introduced about the Geeta Pariwar he said that with the blessings of Param Pujya Swami Shri Govind Dev Giri ji Maharaj, we are able to run this programme in173 countries, more than 1000 Schools and in 8 languages, he further gives the brief introduction of Geeta Sevi, Geeta Paranagat and Geeta Pravina.

The young Samarth, who is a just 4 years , was the centre of attraction as recited the Geeta Shlokas asked by Shri Sanjay Bhaiya. The little boy was the inspiration for all who learn Geeta Ji.

Resp. Sanjay Bhaiya is the renowned scholar of Shrimadbhagvadgeeta, Geeta Visharad, holding various prestigious positions, address the audience in length focusing mainly on -

- Nirvair (No enemy, love to all)
- Yuktaharaviharasya (what to eat and what to do)and
- The team 11
- Kshatriya Dharma
- Krishna Vichar
- Samatva Yoga (Balancing)



He explained how the journey of Geeta Pariwar has taken place from limited members and resources to the largest network of the globe .

Besides the above points, he touched many finer aspects of the Geeta ji and the programme

journey and development in very simple and emotional way by citing some of the anecdotes.

During his address, he graciously invited the Kota Team 11 onto the dais, along with several other distinguished guests, to acknowledge and honor their pivotal role in transforming the Learn Geeta program into a resounding success. Their efforts transcended boundaries of language, race, and religion in an astonishingly short period.

Emphasizing the need for such Team 11 formations in every city and village, he underscored their crucial role in advancing moral education—an imperative for the times ahead. Further, he delved into the Panach Sutras, shedding light on their relevance in the context of artificial intelligence.

Kavita Didi took the stage during the program to elucidate the goals and objectives of the Rampratishtha App. She extended a warm invitation to all sadhakas (devotees) to download the app, encouraging them to submit their daily Hanuman Chalisa recitations. These collective prayers would be offered to Ramlala, along with the names of individual contributors. Rupal didi explained the concept of Team - 11 and urged everyone to join the group.

As the program drew to a close, certificates were distributed to the esteemed invitees, followed by captivating cultural dances. The vote of thanks marked the official conclusion, although a select few were requested to stay for an important meeting determining the next course of action to enhance the program's effectiveness and success.

To ensure a harmonious end to the colorful and grand event, all invitees were warmly invited to partake in Prashadam before departing, aligning with the program's comprehensive objectives.



GEETA MAITRI MILAN, USA

with Pujya Swami Ji - 1st Oct 2023

https://www.youtube.com/live/0RJVxXGwYiU?si=ys_nhiq9d1AroEAC

Harmony Beyond Borders



A bright October morning in 2023 dawned on the BAPS Shri Swaminarayan Temple in Robbinsville, New Jersey, USA. Excitement buzzed in the air as the Geeta Maitri Milan event unfolded, graced by two spiritual giants: Param Pujya Swamiji Shri Govinddev Giri ji Maharaj and Param Pujya Swami Bhadreshdas Muni ji Maharaj. The stage, adorned grandly, soon filled with eager attendees, their voices resonating with prayers and chants.

As the Swamijis arrived, a divine aura seemed to radiate, enveloping everyone in warmth and reverence. Their presence, like a comforting embrace, touched the hearts of all present. The proceedings began with a prayer recitation-

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् | देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ||



Following a solemn prayer that set the spiritual tone for the gathering, Dr. Sanjay Malpani ji, the National Executive President of Geeta Pariwar, took center stage to extend a warm welcome. In a gracious and eloquent welcome speech, Dr. Sanjay Malpani ji not only greeted both the revered spiritual leaders and the assembled attendees but also provided a comprehensive introduction to the multifaceted activities orchestrated by Geeta Pariwar.

With a touch of enthusiasm, Dr. Sanjay Malpani ji elucidated the diverse spectrum of Geeta Pariwar's initiatives. These encompassed the nurturing environments of Bal Sanskar Kendras, the reach and accessibility of online Geeta learning programs, the virtual sanctuary

of e-Sanskar Vatika, the melodic recitations of Vishnusahasranama Stotra, the protective verses of Ramaraksha Stotra, the devotional hymns encapsulated in Hanuman Chalisa, and a myriad of other endeavours dedicated to spiritual enlightenment.

Dr. Sanjay Malpani's articulate presentation not only welcomed the spiritual luminaries and attendees but also painted a vivid portrait of the expansive and inclusive nature of Geeta Pariwar's noble undertakings. His words served as an enlightening prelude to the spiritual feast that awaited the eager hearts and minds gathered in the divine embrace of the Geeta Pariwar community. He painted a beautiful picture of Geeta Pariwar as a family, not an institution. He spoke of the Geeta's universal appeal, a source of light for all regardless of age, culture, or background. His words resonated especially with the younger generation in the audience, sparking a desire to connect with their roots and embrace the Gita's timeless teachings.

After Dr. Sanjay Bhaiya ji's speech, Dr. Ashu ji Goyal International Working President at Geeta Pariwar, who was addressing the event via zoom, spoke about Geeta Pariwar's aim and future plans to spread Geeta across the world. With his visionary leadership, he took the audience on a captivating exploration of Geeta Pariwar's ambitious plans for the future. He also discussed Geeta Pariwar's progress during and after the COVID-19 pandemic, highlighting its transition from an offline to an online platform. He gave a detailed introduction to the work and philosophy of Geeta Pariwar, explaining how it started small and grew into a large organization over time.



Then the moment came everyone had been waiting for - the discourses by the Swamijis themselves. Each word dripped with wisdom, offering profound insights into the Geeta's verses. First, Param Pujya Swami Bhadreshdas Muni ji Maharaj shed light on the path to inner peace. His words instilled a sense of calmness and equanimity in the gathering. He emphasized the core values of a true devotee – freedom from malice and seeing the divine in everyone. Drawing parallels with true friendship, he urged the audience to extend love beyond borders and boundaries.

Quoting the Bhagavadgeeta, he highlighted the importance of being a friend to all living beings and fostering compassion.

Addressing a common dilemma faced by many, Swami Ji delved into the challenge of balancing emotions and responsibilities. He likened this struggle to the moral dilemma

Arjuna faced on the battlefield, torn between duty and emotions. Arjuna's emotional turmoil, as depicted in the Gita, became a profound example of how even the strongest individuals can be overwhelmed by emotions.



Reflecting on Arjuna's emotional journey, Swami Bhadreshdas Maharaj Ji described it as a profound psychological example. He highlighted the significance of Arjuna's dual surrender – at the beginning and towards the end of the Geeta. This surrender marked a transformative understanding and acceptance of duty.

Exploring Arjuna's restless mind, Swami Ji shared Bhagavan Krishna's wisdom on practice and detachment. The advice emphasized regular practice to steady the mind, akin to the wind settling down with time. Detachment, he explained, wasn't about staying away but about not letting external factors control one's inner state.

Positive Resolution for the Future

With a Pariwar of nearly 7.5 million, Swami Bhadreshdas Muni Ji announced a positive resolution – to introduce the Geeta to more than 100 million people. Recalling past resolutions at the Akshardham temple, he expressed joy and gratitude, highlighting Swami Govindadev Giri Ji Maharaj's guidance as an incredible blessing. Acknowledging the collective journey, he invited everyone to hold onto the teachings, assuring that the secrets of the Gita would effortlessly unfold in their lives.

Following the awe-inspiring and soul-stirring discourse by the esteemed Param Pujya Swami Bhadreshdas Muni ji Maharaj, the spiritual ambiance was further enriched as Param Pujya Swamiji Shri Govindadev Giri ji Maharaj started delivering his speech.

In his speech, Swamiji first expressed immense joy in sharing the wisdom of the Bhagavad Gita with the audience. While reflecting on his lifelong contemplation of the Gita's teachings since the age of 15, Swamiji noted that the joy experienced in sharing this wisdom at Robbinsville surpassed all previous endeavors.

Swamiji acknowledged the unique spiritual essence of the event held on American soil. While Bharat (India) naturally fosters spiritual discussions, the presence of a large and spiritually awakened audience in America was truly remarkable. He emphasized the universal relevance of the Bhagavad Geeta, foreseeing a day when all people in America would yearn for its profound wisdom. He urged everyone to strive to spread the teachings of

the Geeta, ensuring its benefits reach everyone.

Drawing parallels between Arjuna's dilemma in the Geeta and real-life situations, Swamiji highlighted the importance of discernment in decision-making. The Geeta, he explained, guides individuals to navigate conflicts within themselves and make choices aligned with their higher duty. He shared a key takeaway from the Geeta - the importance of never giving up in life. Quoting verses that reprimand Arjuna, he stressed the significance of maintaining confidence and self-belief in the face of life's challenges.

Swamiji compared life to a game of cricket, with the Geeta serving as the strategy guide. Encouraging everyone to play the game of life with enthusiasm and determination, he emphasized the need to balance the pillars of the mind in the face of joy, sorrow, gain, and loss.



Highlighting the Geeta's guidance on becoming dear to God through the practice of reading and spreading its teachings, Swamiji praised the dedication of the Geeta Pariwar members and saluted the volunteers for their hard work. He also emphasized unity and friendship within the Geeta Pariwar, regardless of educational backgrounds. He urged members to prioritize sincerity and dedication, stating that devotion and service with sincerity are more valuable than mere knowledge. Comparing the work of the Geeta Pariwar to running a perfume shop, Swamiji emphasized the continuous benefit of being in proximity to the divine through regular Geeta reading. The fragrance of the Geeta, he assured, would linger in their lives, bringing continuous success.





Swamiji correlated physical and mental well-being with readiness for the divine practices of Yoga. Emphasizing the significance of consistent study of the Bhagavad Geeta and a steadfast commitment to global welfare, he delineated this as the route to life's triumphs. Swamiji conveyed his association with the Geeta Pariwar and underscored the transformative influence of wholeheartedly embracing the teachings of the Geeta.

In conclusion, Swamiji expressed gratitude to all members of the Geeta Pariwar, confident that their efforts would ensure the contemplation of the Bhagavad Geeta persists in the lives of many. He congratulated everyone on their commitment to this divine journey and encouraged them to keep moving forward together.

The culmination of the event was a heartening ceremony where Geeta-Vratis and the newly formed Team 11 USA were felicitated by Param Pujya Swamiji Shri Govinddev Giri ji Maharaj. Rupal didi, attending the event from the Zoom meet, announced the names of Team 11 members as Swamiji bestowed blessings upon them, their faces aglow with pride. Witnessing this recognition of selfless dedication served as a powerful reminder of the ripple effect of even the smallest acts of service.

As the sun dipped below the horizon, casting long shadows on the temple grounds, Dr. Ashu Bhaiya ji delivered a concluding speech filled with gratitude. He thanked both Swamijis, organizers, volunteers, and every single attendee for contributing to this extraordinary day. He ended with a call to action, inviting everyone to embrace the spirit of seva and become active participants in Geeta Pariwar's mission.

The Geeta Maitri Milan wasn't just an event; it was an awakening, a reaffirmation of faith, and a celebration of community. It left all attendees with hearts brimming with gratitude, minds buzzing with newfound understanding, and souls yearning to share the light of the Gita with the world. As they stepped out of the temple, carrying the echo of the Swamijis' words and the warmth of shared devotion, they knew that this was just the beginning of a beautiful journey – a journey of self-discovery, guided by the eternal light of the Geeta.



GEETA MAITRI MILAN, THAILAND

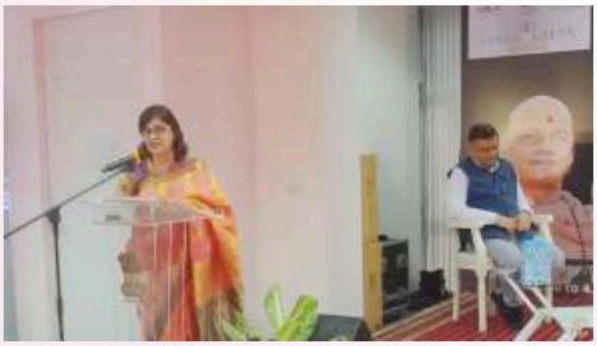
with Pujya Swami Ji & Dr. Ashu Ji Goyal - 26th Nov 2023

https://www.youtube.com/live/2vNQv4praqA?si=I1Hn-q5cjmplumv-



परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज जी को शत्-शत् नमन। थाईलैंड के गीतामयी यात्रा में अत्यंत ही आनंद की अनुभूति हुई।

सभी गीता परिवार के सदस्य उत्साह और अनंत आनंद से प्रफुल्ललित थे। जोरदार तैयारी के साथ गीता परिवार के गीता परिवार के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आशू भैया जी गोयल का स्वागत शंखनाद व पुष्प माला पहनाकर किया गया। गीता जी का पूजन सभी महानुभावों गीता परिवार के कोषाध्यक्ष श्री सिद्धार्थ जी हवेलिया, थाईलैंड के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुनील कोठारी जी, स्वामी विवेकानन्द कल्चरल सेंटर के डायरेक्टर श्री चैतन्य प्रकाश योगी जी व स्वयं आदरणीय आशू भैया जी द्वारा संपन्न हुआ। गीता जी का 12वाँ अध्याय भक्तियोग का पठन सभी बाल गोपालों द्वारा किया गया। यह अत्यंत गौरव का विषय है कि गीता परिवार का संरक्षण थाईलैंड में भी हो रहा हैं। दीप प्रज्ज्वलन में सभी अतिथिगण उपस्थित थे। इस तरह तेजस्वी दीप सुशोभित किया गया। गीता परिवार के अध्यक्ष व संस्थापक, श्री राम जन्मभूमि अयोध्या के कोषाध्यक्ष परम पूज्य स्वामी गोविंद गिरि जी महाराज के पावन चरणों में शत्-शत् नंदन करते हुए थाईलैंड का गीता मैत्री मिलन समारोह आरंभ किया गया। गीता जी जो स्वयं श्री भगवान पद्मनाभ (विष्णु जी) के मुखारविंद से प्रकट हुई है, ऐसे गीता जी को भाव सहित आत्मसात् करना हमारा मुख्य कर्तव्य है। ऐसे अद्भुत गीता माता को सभी ने प्रणाम किया व गीता मैत्री मिलन हेतु भारत से पधारे गीता परिवार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, 180 देश से अधिक देशों में ऑनलाइन गीता संस्था वर्गों में गीता कक्षाएँ संचालित कर रहे व सभी देशों से लगभग 8,00,000 साधकों के प्रिय, हमारे सबके मार्गदर्शक, श्रीमान आदरणीय आशू भैया जी गोयल का थाईलैंड देश की भूमि पर हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया। गीता परिवार के कोषाध्यक्ष आदरणीय सिद्धार्थ हवेलिया भैया का भी स्वागत किया गया। व्यवसाय, भजन, समाज कल्याण कार्य में निरंतर कार्यरत् आदरणीय सुशील कोठारी जी का भी स्वागत किया गया। स्वामी



विवेकानंद कल्चरल सेंटर एम्बैसी ऑफ़ इण्डिया चैतन्य प्रकाश योगी जी का भी हृदय से स्वागत किया गया। आप भारतीय संस्कृति के समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करते हैं एवं भारत में थाईलैंड के लोगों को बहुस्तरीय आदान-प्रदान को बढ़ावा देने का भी कर रहे हैं। मानवाधिकार, कर्मठ कार्यकर्ता, कश्मीरी नेता सुशील पंडित जी का भी स्वागत किया गया। थाईलैंड की विभिन्न संस्थाओं के सभी अध्यक्षों का भी स्वागत किया गया। आज का

दिन गीता परिवार थाईलैंड के लिए दीपावली के समान है। गीता परिवार के सभी सदस्यों का भी स्वागत किया गया। गीता परिवार की कर्मठ कार्यकर्ता रूपा दीदी ने सभी का विशेष सम्मान किया। सिद्धार्थ हवेलिया जी ने भारत के गीता परिवार के कार्यों को संक्षिप्त में वर्णन करके समझाया, ऐसा गीता परिवार जिस पर संतों की दूर दृष्टि पड़ी। इसके पश्चात् गीता परिवार के संचालक, संस्थापक स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज का आगमन कार्यक्रम में हुआ और सभी ने परम पूज्य स्वामी जी को शत्-शत् नमन किया। परम पूज्य स्वामी जी ने योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में नमन किया।

श्रीमान सुमित कोठारी जी ने स्वामी जी का स्वागत व वंदन किया। अत्यंत सुंदर व मनमोहक वातावरण था, परम पूज्य स्वामी जी ने महान व आध्यात्मिक परंपरा का महायज्ञ प्रारंभ किया। आपने उसमें अकल्पनिक सफलता अर्जित की है।

उसके उपरांत गीता संथा वर्ग के प्रोग्राम डायरेक्टर व अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय आशू भैया जी गोयल का परिचय दिया गया। इन्होंने भगवान की वाणी तस्माद्योगी भवार्जुन को अपने जीवन में सार्थक किया हैं।

"योग वाशिष्ठ" के सप्त सोपान



थाईलैंड गीता मैत्री मिलन के शुभअवसर पर आदरणीय आशू भैया ने योग वाशिष्ठ के सप्त सोपान विषय पर अपने ज्ञान चक्षुओं को प्रदीप्त कर सभी को मार्गदर्शन का किया। आदरणीय आशू भैया ने कहा कि आज मेरे लिए अत्यंत आनंद का दिन है कि थाईलैंड की धरती पर अपने भारत के भाई बहनों के समक्ष गीता जी को प्रस्तुत होते देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह साधारण बात नहीं है विदेश की भूमि पर अपने संस्कृति का स्वाध्याय किया, यह देख कर मेरी धारणा थाईलैंड के लिए बदल गई है। सांस्कृतिक दृष्टि से जनमानस भारत से जुड़े हैं। इस तरह आदरणीय आशू भैया जी ने स्वामी जी को प्रणाम किया और कहा कि गीता परिवार की इतनी शाखाएँ देश-विदेश में है तथा गीता साधकों से मिलकर अत्यंत आनंद की प्राप्ति होती है यह सब आश्चर्य की बात है एवं यह सब साधु संतों, महापुरुषों के संकल्प से होता है, भगवान का आशीर्वाद होता है, तो देखों कैसा अद्भुत कार्य हो रहा है। इस तरह एक छोटी कक्षा संचालित कर दिन प्रतिदिन गीता कक्षाएँ बढ़ती ही चली गई। आज लाखों घरों व शहरों तक यह गीता जी पहुंच गई हैं। इस प्रकार लगभग 50,000 लोग प्रति माह जुड़ते हैं। गुरु शिष्य परंपरा को हमने अपनाया। सभी साधकों में सेवा भाव हैं। वैसे वे सभी भाव से सेवा देते हैं और यह सभी नि:शुल्क कक्षाएँ हैं सभी कक्षाएँ भगवद् कृपा से चलती हैं। परमपूज्य स्वामी जी की कल्पना थी कि विश्व तक गीता जी को पहुँचाना एवं यह स्वामी जी का स्वप्न 2020 में साकार हो गया। आज हम सभी मिलकर गीता जी के दीपक से विश्व में प्रकाश कर रहे हैं। स्वामी जी व हम सभी इस सेवाकार्य में सहयोगी हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हम अयोध्या में राम मंदिर बनते देख रहे हैं, कृष्ण मंदिर और काशी विश्वनाथ को इसी रास्ते पर हम देखते हैं। हमारी पीढ़ी को गौरव मिल रहा है भारत माता के उन्नयन व उत्कर्ष का समय आ गया है जिसके हम साक्षी हैं। योग वाशिष्ठ में महर्षि वशिष्ठ द्वारा भगवान् राम को यह सात सीढ़ियाँ ज्ञान की बताई गई। ज्ञान प्राप्त करने के लिए सात सीढ़ियाँ चढ़नी चाहिए, यह महर्षि वशिष्ठ का कहना है। यह जीवन यात्रा अंग है। 84 लाख योनियों में घूमते घूमते हमने मनुष्य जीवन प्राप्त किया है।

जीवन पथ में ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। जीवन में सफलता व उन्नयन होना चाहिए इसलिए सेवा भाव में हम लगते हैं इसे हम

अभ्युदय कहते हैं। हम पूजन करते हैं, दान, धर्म करते हैं, साधना करते हैं इसे नि:श्रेयस कहा जाता है।

परम शक्ति को हम प्राप्त कर सकते हैं, अनुभव करते हैं इस प्राप्ति हेतु जिस मार्ग पर हम चलते हैं वह योग वाशिष्ठ हैं। भगवान् कहते हैं कि अगर भक्ति करते-करते मेरी प्राप्ति नहीं हुई तो अवश्य ही आप किसी योगभ्रष्ट के घर में जन्म लेंगे। यह भगवान का कहना है योग वाशिष्ठ की सात सीढियाँ आगे बताई गई हैं।

ये सात सीढ़ीयाँ कुछ इस प्रकार है:

1) **शुभेच्छा** - जो इच्छा हो उस तरह से भगवद् सेवा करें और शुभेच्छा अवश्य करें। गलत विचारों को टालना चाहिये। इसी को हम शुभेच्छा कहते हैं।

2) **विचारणा** - अच्छे विचारों का संकल्प अवश्य करें। जैसा हम विचार करते हैं, हम वैसे ही बनते हैं, इसलिए हमारे विचारों पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

3) **तनुमानसा** - जो मनुष्य तन मन की परवाह को छोड़ देता हैं। तन व मन को भगवान में लगाने के लिए, इस जन हित को जान जाता हैं यही तनुमानसा है।

4) **सत्वापत्ति** -अधिक से अधिक समय भगवान में लगाना।

5) **असंसक्ति** - ऐसे लोग जो संसार और भगवान दोनों को पाना चाहते हैं।

6) **पदार्थाभावनी** - जिनको संसार के हर कण में, सारे पदार्थ में भगवान दिखते हैं।

7) **तुरीया** - यह स्थिति में अनुभव किया जा सकता है। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति जैसी स्थिति को पार करता है, उसे तुर्यगा स्थिति कहते हैं।



आदरणीय आशू भैया ने कहा गुरु व संत कृपा से इंद्रियों को वश में किया जा सकता है। यह फल, साधन, कृपा भगवान में सब लगाने से प्राप्त होती है एवं यह किसी किसी को ही मिलता है। इस प्रकार आदरणीय आशू भैया ने अपनी वाणी को विराम दिया और सभी को धन्यवाद कहा।

तदोपरांत परम पूज्य स्वामी जी का परिचय दिया गया। वह गीता परिवार के संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक उपक्रमों का संयोजन करते हैं व गीता परिवार संचालन का संपूर्ण कार्य आपके निर्देशन में हो रहा है। भारत में वेदों का अस्तित्व पुनर्स्थापित करने हेतु वेद विद्यालयों की स्थापना परम पूज्य स्वामी जी ने की है। परमपूज्य स्वामी जी विभिन्न विषयों पर समान अधिकार रखते हैं; श्री भागवत, श्रीरामचरितमानस, देवीपुराण, महाभारत, महापुराण, देवी भागवत अनेक ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त गुलाब राव महाराज, शंकर वेदांत, दर्शन शास्त्र, भारतीय प्रबंध शास्त्र, आदि पर अनेक व्याख्यान अपने दिए हैं। आप मराठी, हिंदी, गुजराती, संस्कृत, मारवाड़ी, अंग्रेजी भाषा के जानकार हैं। विदेशों में भी आपकी तेजस्वी वाणी का लाभ उठाया जा रहा है। भारत के हर बालक पर भारतीयता का संस्कार हो यह स्वप्न लिए, धर्म सिखाने, गगन में जय जय कार किये ऐसे स्वामी जी को आशीर्वचनों हेतु आमंत्रित किया गया। परमपूज्य स्वामी जी ने भजन से आरंभ किया।



स्वामी जी ने कहा - इस सुवर्ण भूमि के निवासी मेरे सारे भाई-बहनों के लिए मेरा सादर जय श्री कृष्ण। स्वामी जी ने कहा इस सुंदर भूमि पर आकर के अपनी परंपरा के चिन्ह पाकर मन, चित्त आह्लादित हो गया। गीता मैया के इस आयोजन देखकर मन आनंदित हो गया है। जब भक्ति के मार्ग पर प्रवेश करके परमात्मा के साथ संबंध को निश्चित करना होता है तब इस संबंध में प्रभु की आराधना करते हैं तो संबंध में गहराई आती है। भगवान का अर्जुन के साथ क्या संबंध है? इस संबंध को भगवान् सखाभाव से कहते हैं। इसका जो भाव है वह हमारी गीता परिवार का भाव है। कुछ गीताप्रेमियों का साथ में मिलना गीता मैत्री मिलन कहा जाता है, ऐसा अपनापन गीता परिवार में है। कोई भी भक्त जब बोलता है तो उसमें अनेक जिज्ञासा होती है। संवाद होना यहाँ आवश्यक हैं। आप संवाद अवश्य करिये भक्तों के कुछ प्रश्न स्वामी जी ने लिये-

प्रश्न 1- मनुष्य ईश्वर को मानता है परंतु मनुष्य ईश्वर की नहीं मानता ऐसा क्यों?

उत्तर - मनुष्य ईश्वर की तो छोड़ो खुद की भी नहीं मानता क्योंकि मनुष्य को उतना ज्ञान नहीं हैं। जीवन के हर क्षेत्र में ज्ञान है पर ज्ञान की बात को मनुष्य मानता नहीं है, उपदेश करता है।

मनुष्य को अपने विवेक का आदर करना चाहिए। अपने विवेक का आदर करो। तभी मनुष्य ईश्वर की भी मानेगा। यही प्रश्न अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण को किया था।

भगवान कहते हैं कामना जागती है कामना पूर्ण न होने पर क्रोध व लोभ होता है यह दोनों रजोगुण के कारण उपलब्ध होते हैं। हम रजोगुण के कारण भगवान् को नहीं मानते। मन की चंचलता के कारण मनुष्य भगवान् को नहीं मानता। ऐसा सबके साथ होता है, अपने ऊपर विजय प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। आत्मा पर विजय आपको गीता पढ़ने प्राप्त होती हैं एवं आत्म विजय प्राप्त करते-करते, विश्व विजय प्राप्त हो जाता है। जो रोज भगवान के में मन लगाएगा उसे आत्मा पर विजय प्राप्त होगी। चंचलता कम हो जाएगी रजोगुण समाप्त हो जाएगा।

शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या धृतिगृहीतया। आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्॥6.25॥

यह बदलाव धीरे-धीरे आता है। साधकों का मन जब ईश्वर में लगे , ईश्वर के साथ वे जब एक रूप हो जाए तभी मनुष्य ईश्वर को भी मानेगा और ईश्वर की भी मानेगा।

धीरे-धीरे मन बाहर के आकर्षण के कारण से, मनुष्य ईश्वर को नहीं मानता। अपने मन के साथ छोटे बच्चों की तरह व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 2- भगवान हमें कहाँ जाने को कह रहे हैं?

उत्तर - भगवान अपने चिंतन की बात करते हैं, जो परमात्मा की आराधना करेंगे वह सद्गति को प्राप्त होगा। दर्शन शास्त्र के अनुसार सारे संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जिसमें सत्यता या सत्त्व, तम, रज गुण नहीं है। जीवन के विकास के लिए सभी आवश्यक है। संसार के सभी सुखों के लिए आपको पदार्थों पर, व्यक्तियों पर, परिस्थितियों पर निर्भर करना पड़ता है।

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः। स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति॥ 5.24॥

अंत में आपका मन किसी पदार्थ में अटका है तो आप तमोगुण में जन्म लेंगे और यदि किसी व्यक्ति के मन में रजोगुण है तो वह जन्म के समय रजोगुण में जन्म लेगा। यदि परमात्मा का चिंतन है का अंतिम क्षण में ही आप सतोगुण में जन्म लेंगे। उत्तम गति प्राप्त करेंगे आप वही होते हैं जो आपका मन होता है इसलिए आपको सोच बदलने की आवश्यकता है। अगर गीता के अनुसार सोचना हम सीख जाते हैं तो यह जीवन हमारा आनंद में और सुख में होता है और परलोक भी आनंदमय होता है। इस तरह परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गुरु जी ने महाराज ने अपनी वाणी को विराम दिया।



उसके उपरांत थाईलैंड में बच्चों के द्वारा 12वें अध्याय का सुंदर कंठस्थ श्लोकों का गायन हुआ। और गीता परिवार के सभी बालकों को उपहार वितरित किए गए। लर्न गीता कार्यक्रम की लीगल एडवाइजर श्रीमती प्रियंका हवेलिया जी ने टीम 11 की घोषणा की व उनका सम्मान किया।। गीताव्रतियों की घोषणा की एवं सभी भारतीयों गीता साधकों का मंच पर सम्मान किया गया। परमपूज्य स्वामी जी ने सभी गीताव्रतियों को उपाधि से सम्मानित किया। गीता परिवार की प्रथम गीता विचक्षण थाईलैंड के बैंकॉक में से हैं प्रिय रूपा दीदी का सम्मान किया गया। थाईलैंड में हर घर गीता, हर कर गीता को सभी ने आत्मसात् किया है। सभी टीम 11 के सदस्यों का स्वागत किया गया। गीता परिवार की ओर से सभी को बधाई व शुभकामनाएँ दी गई। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। सबका आभार प्रदर्शन किया गया।

इस प्रकार से थाईलैंड का गीता मैत्री मिलन का संपूर्ण कार्यक्रम अद्भुत रहा।

GEETA MAITRI MILAN, SINGAPORE

with Pujya Swami Ji - 27th Nov 2023

https://www.youtube.com/live/witK5vPy1qY?si=My59Th3dG5ewrN9K

मुख्य संयोजक श्री कमलजी मालवीय ने श्रद्धेय परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी के सम्मान और वंदन के साथ गीता मैत्री मिलन सिंगापुर का शुभारंभ किया। इस अवसर पर ऑनलाइन जुड़े अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ. आशूजी गोयल का भी स्वागत किया गया। तत्पश्चात् श्री सोमणजी, हनुमानजी, गीता परिवार सिंगापुर के कोषाध्यक्ष और ऑफलाइन गीताजी का नियोजन करने वाले गीता परिवार के कोषाध्यक्ष श्री सिद्धार्थजी हवेलिया ने ऑफलाइन और ऑनलाइन कार्यक्रमों से जुड़े सभी गीता प्रेमियों का अभिनंदन और स्वागत किया।



दीपकजी ने श्री सिद्धार्थजी का परिचय देकर उन्हें गणमान्य सदस्यों का परिचय देने का कार्य सौंपा।

तत्पश्चात् श्रद्धेय स्वामीजी, गीता परिवार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आशूजी गोयल, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री संजय जी मालपाणी, रूपलजी शुक्ला और कविताजी वर्मा का परिचय दिया। प्रार्थना के पश्चात् सिद्धार्थजी ने गीता परिवार की कार्यप्रणाली से सभी को अवगत कराया।

गीता परिवार की स्थापना आज से 37 वर्ष पूर्व, सन् 1986 में, परम श्रद्धेय स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज की देखरेख में हुई। स्वामीजी का तभी से अपना एक मिशन वाक्य है "गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें"। स्वामीजी के जीवन का मूल मंत्र है "हर घर गीता, हर कर गीता"।

गीता परिवार की स्थापना पंच सूत्रों पर आधारित है - भगवद्भक्ति, भगवद्गीता, भारतमाता, विज्ञानदृष्टि, स्वामी विवेकानन्द

गत 37 वर्षों से ऑफलाइन कार्य होते आ रहे हैं। सन् 2020 से कोरोना की आपदा आने के पश्चात् ऑनलाइन कार्यक्रम हो रहे हैं।

ऑनलाइन लर्न गीता कार्यक्रम के अंतर्गत 181 देशों से 8 लाख से अधिक साधक 2000 ज़ूम कक्षाओं में 13 भाषाओं में 19 समय सत्रों पर 8000 गीता सेवियों की सहायता से गीताजी के श्लोकों के शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु कार्यरत हैं। सौ से अधिक पुस्तक प्रकाशन व दस भाषाओं में सरल पठनीय गीता उपलब्ध है। इस प्रकार गीताजी की गूंज सारे विश्व में व्याप्त है।

उपलब्धियां :

- 75 करोड़ सूर्य नमस्कारों का समावेश गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में है।

- 35,000 बालकों द्वारा गीता महोत्सव का आयोजन।
- 12,500 बालकों द्वारा योग महोत्सव का आयोजन।
- विश्व की सबसे बड़ी ऑनलाइन गीता संथा वर्ग का पंजीकरण (गिनीज गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स) में समावेशित है।
- प्रधानमंत्री जी द्वारा लर्नगीता उपक्रम की सराहना।

अचंभित कर देने वाला महान् कार्य चालू है। श्री सत्यनारायण शर्मा जी ने श्रद्धेय स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी को प्रवचन के लिए आमंत्रित किया और कहा, "स्वामीजी की उपलब्धियों पर इतनी जोरदार तालियां बजाएँ कि उनकी गूंज अयोध्या धाम तक पहुँचे।" मुख्याध्यापक के पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात्, श्री सत्यनारायण जी ने जो गीता जिज्ञासु परीक्षा दी उसका प्रमाणपत्र स्वामीजी के हाथों प्राप्त किया।



"पंढरीनाथ भगवान की जय!" के उद्घोष के साथ, स्वामीजी ने अपना वक्तव्य शुरू किया।

World Hindu Congress के लिए बैंकॉक आना था, और जब आना ही था तो हिन्दु संस्कृति के प्राचीनतम और सर्वोच्च प्रतीक के रूप में खड़े अंकोरवाट मंदिर के दर्शन की लालसा थी। कंबोडिया जाना था, थाईलैंड से कंबोडिया पास है, लेकिन सिंगापुर का आकर्षण सिंगापुर खींच लाया। सिंगापुर में गीता परिवार का कार्य अति उत्तम चल रहा है। स्वामीजी की विनम्रता देखिए, वे बोले, "मुझे दर्शन देने के लिए आए हुए सभी साधकों का मैं स्वागत करता हूँ।"

भगवद्गीता का मुख्य स्वर मैत्री का है। शांत, लालन, सख्य, माधुर्य, दास्य और वात्सल्य भाव का है। सभी भावों से जब गीता की ओर देखते हैं तो सख्य भाव की प्रधानता दिखाई देती है। भगवान अर्जुन को सखा मानते हैं, अर्जुन भी कृष्ण को सखा ही मानते हैं। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, सख्य भाव की अनुभूति अधिक है।

अर्जुन भगवान से बोले:

'सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण हे यादव हे सखेति। अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रमादात्प्रणयेन वापि'॥11/41॥

उत्तर में भगवान अर्जुन से क्या कहते हैं, सुनिये:

'स एवायं मया तेद्य, योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति, रहस्यं ह्येतदुत्तमम्' ॥4/3॥

अर्जुन तुम मेरे भक्त हो, सखा हो, मित्र हो।

कृष्णार्जुन संवाद यह मित्रों का संवाद है। गीता के अनेक भाष्य हुए, उसमें ज्ञानेश्वर महाराज का भाष्य सर्वोपरि है।

ज्ञानेश्वर महाराज श्रीमुख से क्या कहते हैं: "अरे पता है, मैं तो निराकार हूँ, पर फिर भी मैं साकार क्यों बन गया हूँ? क्योंकि जो मुझसे इतना प्रेम करते हैं, उनके दर्शन करना चाहता था।"

अब दर्शन के लिए नेत्रों की आवश्यकता होती है, तो ज्ञानेश्वर महाराज की भाषा में भगवान कहते हैं:

तो पहावा हे डोहाळे, म्हणोनि अचक्षुशी मज डोळे। हातीचेनी लीलाकमळे, पुजूं त्याचे॥12.223॥

माताओं को गर्भावस्था में कुछ खाने, कुछ पहनने की तीव्र इच्छा होती है, जिसे मराठी में डोहाळे कहते हैं। भगवान कहते हैं, "मुझे अपने भक्तों के दर्शन की तीव्र इच्छा होती है। मन में इतना आवेग आता है कि कब अपने भक्त के मस्तक पर अपने हाथों से कमल का फूल चढ़ाकर पूजा करूं। यह है भगवान् के द्वारा भक्त की पूजा।" भगवद्गीता, रामचरितमानस, श्रीमद्भागवत—इन सभी ग्रंथों का स्वर एक ही है।

स्वामीजी ने भक्ति के तीन प्रकार बताए हैं:

- पहली जो भक्त भगवान की करते हैं।
- दूसरी जो भक्त अपने गुरुदेव की करते हैं।
- तीसरी जो भगवान भक्तों की करते हैं।



इसलिये मैं सीधा कंबोडिया नहीं गया और आप लोगो के दर्शन करने पहले सिंगापुर आ गया। थोड़ा प्रवास ज्यादा करना पड़ा, परन्तु प्रिय लोगों के लिए इतना कष्ट कोई विशेष बात नहीं। आप सभी सिंगापुरवासियों का स्वागत और बधाई कि आप गीता परिवार से जुड़े हुए हैं। एक बात याद रखना मित्रों कि गीता परिवार का काम भगवान का निजी कार्य है। भगवान दिव्य देशों में अनेक स्थानों पर विराजे हैं। स्थान में भगवान का अत्यंत आसक्ति का भाव होता है। कार्य में कौन सा कार्य भगवान को सबसे अच्छा लगता है? जब यह सोचते हैं तो भगवान कहते हैं, "गीता मे हृदयं पार्थ"। अर्जुन, गीता मेरा हृदय है, बाकी सब काम मेरे अन्यान्य अवयव हैं। इसलिए जो गीता पढ़ता है, वह मुझे अत्यंत प्यारा है।

भगवान की पूजा करना चाहिये, भगवान के लिए गीत गाना चाहिये, उसे सजाना चाहिये, सुलाना चाहिये, जगाना चाहिये। ये सब भगवान को अच्छा लगता है, इससे भगवान की सेवा होती है। लेकिन मुझे वह सबसे प्रिय है जो गीता को हाथों में लेकर पढ़ता है। गीता का अध्ययन करने वाला मुझे ज्ञानयज्ञ से पूजित करता है।

पूरी गीता कहने के पश्चात् भगवान ने अर्जुन से कहा, "मैं उससे बहुत प्रेम करता हूं जो गीता पढ़ता है।" भगवान किस किससे प्रेम रते हैं, यह उन्होंने बारहवें अध्याय में बताया है।

अद्वेष्टा सर्व भूतानां, मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहङ्कारः, समदुःखसुखः क्षमी।

अठारहवें अध्याय में आकर भगवान ने कहा, "जो सद्गुणों का अभ्यास करते हैं, आरती करते हैं, तिलक लगाते हैं, वे तो मुझे प्रिय हैं ही, परंतु जो गीता पढ़ते व पढ़ाते हैं, वे मुझे अत्यंत प्रिय हैं। वर्तमान में तो मैं प्रेम करता ही हूं, लेकिन भविष्य में भी मैं किसी से इतना प्रेम नहीं करूंगा जितना गीता पढ़ने व पढ़ाने वालों से करूंगा।"

भगवान् अर्जुन से कहते हैं, "अपना कार्य करना मत छोड़ो। कोई व्यापार करता है, कोई अध्यापन करता है, कोई सैनिक है, कोई राजनेता है, कोई परमार्थ करता है। परमार्थ समय साध्य वस्तु नहीं, वरन् वृत्ति साध्य है। सभी अपना काम प्रामाणिकता से करो, लेकिन मुझे मत भूलो।

किसी भी गोपी ने अपना काम नहीं छोड़ा। वह काम करती रही, कृष्ण मथुरा गए, लेकिन एक भी गोपी ने अपना घर नहीं त्यागा। नारदजी ने कहा, 'भक्त की भक्ति कैसी हो? यथा व्रज गोपिका जो यह कहती रहीं', 'मैं कृष्ण की हूँ, कृष्ण को याद करती हूँ' अपना काम करते समय यह भावना रखती है कि यह काम मैं कृष्ण के लिए कर रही हूँ। बिलोना करती हैं तो कृष्ण के लिए, सोचती हैं, कृष्ण आएंगे, माखन खाएंगे। रसोई बनाती हैं तो कृष्ण के लिए, कि कृष्ण आएंगे, कहेंगे 'क्या बनाया है? भूख लगी है। सजती हैं तो कृष्ण के लिए, कि कृष्ण प्रसन्न होंगे, कहेंगे, कितनी सुंदर लग रही हो। गोपियों का बिलौना करना, गोपियों का रसोई बनाना, गोपियों का सजना सब कृष्ण के लिए। कार्य अपना करती हैं, याद भगवान को करती हैं।

अर्जुन, अध्यापन, राजनीति, व्यापार, सारे जो भी काम करो, कर्तव्य समझकर भगवान के लिए करो।

जीव भगवान का है और शरीर संसार का। शरीर से करना संसार का काम और मन से करना भगवान को याद, तो जीवन आनंद से चलेगा।

मेरी भक्ति करने वालों का नाश नहीं होगा। संकट नहीं आएगा ऐसा नहीं, लेकिन उस संकट से मैं तुम्हें उबारूंगा। मैं तुम्हें खड़ा करूंगा, यह भगवान का वचन है।

ये सारे छोटे-छोटे चरण बहुत महत्वपूर्ण हैं, ये तीन बातें भगवान ने कहीं। आत्मज्ञान कैसे प्राप्त करें?

उत्तम महापुरुष का चयन करें। स्वयं स्वामीजी ने अपने जीवन में तीन महापुरुषों का चयन किया:



1. पूज्य करपात्री महाराज
2. पूज्य राजेश्वर शास्त्री द्रविड
3. पूज्य गोपीनाथ जी कविराज

ऐसे महापुरुष अगली पीढ़ी को देखने नहीं मिलेंगे। आपका व्यवहार अत्यंत विनम्रता का होना चाहिए। एक पुलिस कमिश्नर ने किसी महात्मा का वाक्य सुना, "रोज माता-पिता को प्रणाम करना चाहिए।" उसने सुना, उसे अच्छा लगा तो वह माता-पिता से जोर से बोला,

"कल से जब मैं ड्रेस पहनकर तैयार होकर निकलूं तो दरवाजे पर खड़े रहना, मैं आपको प्रणाम कर जाने वाला हूं।"

"जीवन का उद्देश्य आनंदपूर्वक जीना है।"

जीवन में आनंद का ही अनुभव करें। भगवान गीता को जीवन का आनंद कहते हैं। क्षणिक आनंद आपके सामने बहुत हैं, वह क्षणभंगुर हैं। जिसने मेरी भक्ति सीख ली, वह परम आनंद उठाते हैं।

भगवान अर्जुन से कहते हैं, "जिनके चित्त में मैं बस गया हूं, वे लोग सही रूप में जीवन का आनंद उठाते हैं।"

मच्चित्ता मद्गत्प्राणा बोधयन्त: परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥ 10/9॥

यह आनंद क्या होता है? जो इसे लेते हैं, उन्हें पता है। हम लोग हमारे उत्सव, हमारे फंक्शन मनाते हैं, बाहर से वाहवाही मिलती है, लेकिन अंदर से तनाव देते हैं। आनंद के लिए किया गया काम कभी-कभी कष्टदायी होता है। उसकी रिएक्शन होती है, यह short lived होता है। Percy B Shelley ने कहा,

"Our sweetest songs are those, that tell us of saddest thought."

प्रत्येक विषय का अपना स्थान होना चाहिये। ठाकुरजी मंदिर में हों, भोजन रसोईघर में ही बने, जूते जूते की जगह ही हों, हर वस्तु अपनी निर्धारित जगह पर ही हो। वैसे ही काम, क्रोध, मद, मत्सर कितना व कहां होना चाहिए, यह हमें भगवद्गीता सिखाती है।

"Life is not mathematical, it's chemical."

जीवन की chemistry भगवद्गीता सिखाती है।

Life is for perpetual enjoyment.



विश्व आनंद का आविष्कार है। हमने आज तक क्षणिक आनंद को ही सर्वोच्च माना है।

पूरी गीता याद करें, क्रम से करें। न हो तो छोटा टुकड़ा करें, लेकिन समय नहीं है, आयु हो गई है, ऐसा न कहें। एक छोटा सा निर्णायक चरण भी आपका उद्धार करेगा। भगवान् गीता में कहते हैं, "बड़े-बड़े भय का नाश होता है, मनुष्य निरंतर आगे बढ़ता जाता है, इसलिए गीता पढ़ना-पढ़ाना।"

पढ़ने से confidence नहीं आता, जब दूसरों को पढ़ाते हैं, अपना ज्ञान पक्का होता है। दूसरों को ज्ञानी बनाने के लिए पढ़ाना, अपना ज्ञान पक्का करने के लिए पढ़ाना, क्योंकि गीता साक्षात् भगवान् की वाणी है। गीता परिवार ऐसा अद्भुत परिवार है, जहाँ न पढ़ाने वाला कुछ चाहता है, न पढ़ने वाला कुछ देता है।

सेवा करने वाले आठ हजार लोग रोज एक घंटा देते हैं, यह सामान्य बात नहीं है। एक विशेष निर्धारित समय देना होता है। यह गीता का महान ज्ञानयज्ञ वास्तव में हमारे जीवन को अलौकिक, प्रकाशित और सुगंध से भरने वाला है। गीता परिवार ने जिस तरह से गीता पढ़ने और पढ़ाने की व्यवस्था की है, वह अद्भुत है। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि, जिस प्रकार से गीता परिवार ने संस्कृत की गीता पुस्तक प्रकाशित की है, संसार में ऐसा कोई नहीं जिसने ऐसा काम किया हो। न भूतकाल में, न वर्तमान में, इतनी सुंदर गीता की पुस्तक किसी ने नहीं लिखी।

हम गीता पढ़ाने के आग्रही हैं। संस्कृत की मूल गीता आवश्यक है। उसका अनुवाद समझने और जानने के लिए किया जा सकता है, लेकिन कंठस्थ करना है तो संस्कृत में ही करना होगा। गायत्री मंत्र का अनुवाद नहीं हो सकता, संस्कृत मूल भाषा में ही उसका महत्व है। भगवद्गीता में भगवान् ने जो कहा है, वैसी उत्तम बात आज तक किसी ने नहीं कही। मनुष्य के रूप में जन्मे हुए प्रत्येक व्यक्ति को गीता का एक अध्याय रोज पढ़ना चाहिए। गीता पढ़ लो तो बाकी कुछ भी पढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

सिंगापुर के मैत्री मिलन में आकर मुझे बहुत आनंद हुआ। सभी को धन्यवाद और आशीर्वाद के साथ स्वामीजी का वक्तव्य समाप्त हुआ।



LINGUISTIC KALEIDOSCOPE



Learngeeta a management marvel

https://www.youtube.com/live/sg4ShNdxYXw?si=Xl8124-e0ega1-aA

Learngeeta Program is in itself a Marvel, Epitome of Dedication and a Brilliant case study for all the corporates and so-called management Gurus.

It's a Marvel for many reasons

- Took a CONTRARIAN APPROACH in the Covid Pandemic and started ONLINE GEETA CLASSES,
- Took the BOLD step of simplifying the SANSKRIT GRAMMAR so as to come out with the MOST SIMPLE, EFFECTIVE and CORRECT PRONUNCIATION RULES .
- But it's a MANAGEMENT MARVEL, where the whole Program is Decentralized in terms of Working yet its all so well connected, that a single push on one Departments makes the whole Process move.



As a Sadhak the whole management and efficiency marvel of online Geeta classes always bewildered me.

- How are they always able to start the classes on time ???
- why the classes are never skipped??
- how are they able to share the Shloka and the PDF so efficiently???

I was itching to know all.

I found all the faculties were volunteers, SO I waited eagerly for the MUCH HYPED "AAO GEETA SEVI BANE" Program. Another magical thought and managemental wizardry, where through a series of well-planned presentations all Major departments are showcased, like a bewitched child I was agape with excitement and nervous both at the same time.

When as a volunteer I joined the Sewi Team, I came to know about the whole efficient system. How, immediately with the start of a batch, the technical training sessions that is the TTG starts simultaneously the training sessions of the group coordinator start as well as the training sessions of trainers, I was amazed and bewildered at the whole system of volunteers teaching or training new volunteers for Seva, it just seemed like the replica of the Vedic system which we followed where in gurus taught their disciples and the disciples became gurus to their disciples and so on.

Efficient Management: The Mirror of Self

Success of any Organization Starts with the Management, its Policies and the handling of Human resources, thus in a Program as Vast and as Pious as LearnGeeta ,where Volunteers

were handling all the affairs, A conscious effort was made to keep it away from being Corporatised, absence of any donation link or request form on the main website is one such example.

The policies are designed in such a way that TRANSFORMATIONS have to happen,

The daily audios, the Solo Videos, all are so well planned that your device then is self-habituated to play only these, nothing else,

The first transformation, in my case, happened here when my device now had only these shlokas, all other apps like Insta, twitter, Facebook all were uninstalled...THE SYSTEM REBOOTING HAD BEGUN.

Transformations take place at various levels the first transformation as a Sadhak had happened.

After Joining the Sevi Team, I realized what was awaiting me. My system, was about to get Rebooted- The second Transformation was about to begin.

I was giving seva---This was the First feeling

How much seva I am giving-The Self patting was the second feeling
I am blessed to be giving Seva-Was the Third

I am just doing my part-Is the current

Reinventing Self, Realizing the Evils of Ego, and maintaining a balanced approach, all these aspects get imbibed into self just by giving Seva.

I request you to just, read through the above lines once again, does it not look like a Promotion tag of a Personality Development Course??? Yes it does, and this is what you get, a Proper Personality development opportunity, just by Giving seva. The PRIZE for Good Seva is MORE Seva, this is the SEVI MANTRA

The Decentralised and Bottom to Top Management Approach gives a Sewi immense freedom for performing the required seva, and more often than not those expectations are surpassed.

Taking Care of the "Product Life Cycle"

Like in any Management class we read about the Life Cycle of a Product and how to be innovative to keep the interest going on, well in this Program even that has been taken care of, read further to be amazed

- To keep the Sadhaks engrossed Memorization Exams are held, and thus the Sevis also get opportunity to be part of Something New,
- To help in exam preparations Extra Classes are held, again giving Sadhaks and Sevis more opportunities

- Different 'Geeta Resources' are held at various levels for Sadhaks as well as the Sevis
- Regular updation in the course material

This all is well thoughtful approach to keep the "Product life cycle" always in the Growth Stage.

FLOW OF IDEA : This Fluid and Flexible approach has enabled the EVERLASTING "GROWTH STAGE" of the Program.

FOR THE SADHAKS, BY THE SADHAKAS & OF THE SADHAKAS: This is the Main Management MOTTO of the Program.

- Dinesh Pandita, Delhi



സർവ്വം കൃഷ്ണമയം



ജനിമൃതിദുഃഖങ്ങളകലുന്നു ഭഗവാനേ
തിരുവായ്മൊഴികളുൾക്കൊണ്ടിടുമ്പോൾ
സകലജഗത്തിനും നാഥനാം കൃഷ്ണാ നിൻ
കഴലിണ മാത്രമാണെന്നാശ്രയം.



സുഖദുഃഖഭേദങ്ങളില്ലെന്റെ ചിന്തയിൽ
സമമായി നിന്ദാസ്തുതികളെല്ലാം
നിർമ്മമമാകുന്നെൻ ഹൃദയവികാരങ്ങൾ
തവഭക്തിയിൽ ചിത്തമാമഗ്നമായ്

ശത്രുവും മിത്രവുമില്ലെനിക്കവിടുത്തെ
ഭക്തരെല്ലാം സ്വന്തബന്ധുക്കളായ്
സകലചരാചരത്തിങ്കലുമവിടുത്തെ
പ്രകടമായ് കാണുന്നെന്നന്തരംഗം.

ഭഗവദ്ഗീതയാമമൃതു രുചിച്ചെന്റെ
വികലമാം ചിന്തകൾ നിർമ്മലമായ്
പാർത്ഥനുമാത്രമല്ലഖില ലോകത്തിനും
വഴിതെളിയ്ക്കൂ ധർമ്മജ്ഞാനമേ നീ

- Lathika P, Ernakulam



ಗೀತಾ ಪಾರಾಯಣ



ನಾವು ೪ನೇ ಹಂತಿನ ಗೀತಾ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ಮುಗಿಸಿದ ನಂತರ (ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಚಾರಧಾಮ್ ಯಾತ್ರೆ) ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶ್ರೀಮುಖದಿಂದ ಬಂದಂತಹ ೭೦೦ ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಶುದ್ಧ ಹಾಗೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಪಠಿಸಿದ ನಂತರ ಆಗುವ ಆನಂದವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಲಾಗದು. ಇದೊಂದು ಹೆಮ್ಮೆಯ ವಿಷಯವೂ ಹೌದು. ಅನೇಕ ಜನರು ಈ ೧೮ ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ದಿನ ನಿತ್ಯವಾಗಿ ಸಾಧಾರಣ ೨ಗಂಟೆಯೊಳಗೆಯೇ ಪಠಿಸುತ್ತಾರೆಂದು ನಾನು ಕೇಳಿದ್ದೇನೆ. ನನ್ನ ವಯ್ಯಕ್ತಿಕ ಇಚ್ಛೆ ಕೂಡ ಇದೇ ಆಗಿತ್ತು . ೪ನೇ ಡಿಸೆಂಬರ ೨೦೨೨ ರಂದು ಗೀತಾಜಯಂತಿಯ ದಿನ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ನಾವು ಮುಂಬಯಿ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಹಲವಾರು ಸೇವಾರ್ಥಿಗಳು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ನಮ್ಮ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣವನ್ನು ಎರಡುವರೆ ಗಂಟೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ್ದೆವು. ಇದಾದ ನಂತರ ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಪ್ರತಿ ತಿಂಗಳು ಬರುವಂತಹ ಏಕಾದಶಿ ದಿನ ಮುಂಬಯಿಯಲ್ಲಿರುವ ಬೇರೇ ಬೇರೇ ದೇವಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣವನ್ನು ಪ್ರಚಾರ ಕಾರ್ಯ ಸಹಿತ ನೆರವೇರಿಸುತ್ತಾ ಬಂದಿದ್ದೇವೆ .

ಸೆಪ್ಟೆಂಬರ್ ತಿಂಗಳಿನಿಂದ ನಾವು ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಆನ್ಲೈನ್ (zoom meet ಹಾಗೂ youtubeನಲ್ಲಿ)ನಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ರವಿವಾರ ಸಂಪೂರ್ಣ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣವನ್ನು ಬೆಳಗ್ಗೆ ೭:೦೦ಗಂಟೆಗೆ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ದೀಪಪ್ರಜ್ವಲನೆಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ನ್ಯಾಸ , ಗೀತಾಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಗೀತಾಮಹಾತ್ಮೆ , ಧ್ಯಾನಮ್ ಸಹಿತ ೧೮ ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ಕ್ಷಮಾಯಾಚನೆ , ಗೀತಾ ಆರತಿಯೊಂದಿಗೆ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸುತ್ತೇವೆ. ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ವಿವಿಧ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಹಿಸುವಂತಹ ಸಕ್ರೀಯ ಸೇವಾರ್ಥಿಗಳು ಹಾಗು ಎಲ್ಲಾ ಗೀತಾ ಸಾಧಕರು ೧೮ಅಧ್ಯಾಯದ ಪಾರಾಯಣೆಯಲ್ಲಿ ಪರಾಯಣರಾಗಿ ಪಠಣ, ಶ್ರವಣ ಮಾಡಿ ಅತ್ಯಂತ ಆನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆಂದು ಹೇಳಲು ಅತಿವ ಹರ್ಷವಾಗುತ್ತದೆ. ತದ ನಂತರ ಹನುಮಾನ್ ಚಾಲೀಸಾದೊಂದಿಗೆ ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಮುಕ್ತಾಯವಾಗುತ್ತದೆ

ಇದಲ್ಲದೆ ಪ್ರತಿದಿನ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಚಾರಧಾಮ ಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ಅಂದರೆ ನಾಲ್ಕು ಹಂತವನ್ನು ಮುಗಿಸಿದ ಗೀತಾಪ್ರೇಮಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಗೀತಾವ್ರತಿ ಸಾಧಕರು ಬೆಳಗ್ಗೆ ೬:೩೦ ಗಂಟೆಗೆ ಹಾಗೂ ರಾತ್ರಿ ೯:೩೦ ಗಂಟೆಗೆ ಒಂದು ಅಧ್ಯಾಯದ ಪಠಣ ತದನಂತರ ಐದು ಬಾರಿ ಹನುಮಾನ್ ಚಾಲೀಸಾದ ಪಠಣ, ಶ್ರವಣ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಈ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸುತ್ತಿರುವ ನಿಮೆಲ್ಲರಿಗೂ ಭಗವಂತ ಆಯುರಾರೋಗ್ಯ ಐಶ್ವರ್ಯ ಕರುಣಿಸಲಿ. ಸ್ವಾಮಿ ಗೋವಿಂದದೇವ್ ಗಿರಿಜೀ ಗುರುದೇವ ಅವರ ಇಡೀ ವಿಶ್ವವನ್ನೇ ಗೀತಾಮಯ ಮಾಡುವ ಈ ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ನಾವೂ ಆದಷ್ಟೂ ನಮ್ಮ ಸಮಯವನ್ನು ಗೀತಾಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಪ್ರಚಾರದಲ್ಲಿ ನಮ್ಮನ್ನು ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ನಮ್ಮ ಜೀವನವನ್ನು ಪಾವನವಾಗಿಸಿಕೊಳ್ಳೋಣ.

- Shruti Nayak, Mumbai

गीता परिवारसँगको मेरो नाता र प्रयास



https: www.youtube.com live d1qbEtrpTHg?si cI5tggQ0-1ZpRITH

पृष्ठभूमि

जीवनको आरोह-अवरोहको गतिसँगै सन् 2019 को डिसेम्बरदेखि शुरु भएको कोरोनाले सन् 2022 को अन्त्यसम्म नेपाल र नेपाली लगायत सबैलाई धेरै आक्रान्त बनायो। सो अवधिमा कतिपयलाई पारिवारिक बिछोडका अति कष्टप्रद मार्मिक क्षणमा पुर्यायो। मलाई भने यो कोरोनाकाल अवसर भएर आयो, जसको फलस्वरूप म यो गीता परिवारमा जोडिन सकें।

कोरोना शुरु भएपछि घरबाट निस्किएर हिड्ने वातावरण नै थिएन। त्यो बेलामा सबै जना घरभित्रै थुनिएर रहेको अवस्था थियो। सामाजिक सञ्जालको प्रयोग व्यापक रुपमा भएको देखियो। मेरो पनि सेवानिवृत्त जीवन, वृद्ध एवं रोगी मातासँगको बसाई, कसरी समयको सदुपयोग गर्ने भन्ने चिन्ता भइरहेको समयमा फेसबुकमा विभिन्न किसिमका आध्यात्मिक, योगकक्षासम्बन्धी सूचनाहरु आउन थाले। आफु पनि आध्यात्मिक परिवेशमा हुर्किएको हुनाले त्यसप्रति झुकाव नहुने कुरै भएन।

यसैबेला पतंजलि योग समिति, नेपालले जुममार्फत योग शिक्षकको तालिम दिने कुरा आयो। मेरो सहभागिता रहेको सातौं ब्याचको सो प्रशिक्षणमा श्रीमद्भगवद्गीताका केही श्लोकहरुको विवेचन प्रा.डा. गुरुप्रसाद सुवेदीले गराउनुभएको थियो। सम्पूर्ण शास्त्रहरुको सार भएको श्रीमद्भगवद्गीता विभिन्न संस्थाहरु जस्तैः योग चौतारीमा डा. चिद्घन स्वामीजी महाराज र आचार्यश्री सुदर्शन जोशी, युवा नेपाल समितिमा डा. करुणा आर्या, भक्तिपथ फाउन्डेसनमा आचार्यश्री रामु पौडेलले जुमबाट पढाइरहनुभएको र आफूलाई पनि ती कक्षामा सकृयतापूर्वक भाग लिने सौभाग्य प्राप्त भयो।

गीता परिवारमा प्रवेश

यसैबीच सन् 2022 को जुलाई महिनातिर सामाजिक सञ्जालको फेसबुकबाट गीता परिवारले विश्वको सवैभन्दा ठूलो गीता कक्षा, निःशुल्क रुपमा विभिन्न 12 भाषामा वैदिक उच्चारणका साथमा जूमकक्षाबाट पढाइ हुने जानकारी प्राप्त भयो। उत्सुकतापूर्वक मैले पनि फारम भरें र मेरो L1 को कक्षा 1111 व्याच 22 अगस्त 2022 बाट शुरू भयो। उद्घाटन सत्रको मनमोहक दृश्य, आदरणीय पूज्यनीय गुरुदेवहरु स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरीजी महाराज, स्वामी श्रीरामदेवजी महाराज आदिका समीपमा भएको भव्य कार्यक्रम अवर्णनीय रह्यो। अहिले पनि मानसपटलमा साना नानीहरुको गीताजीको अन्ताक्षरी, बालबच्चा (3 वर्ष देखिका) एवं वृध्दवृध्दा (90वर्ष सम्मका) को चरणानुसार/ श्लोकांक अनुसारको मधुर लयमा सुनाइएको श्लोकहरूको कन्ठस्थिकरण आदि पहिलो पटक सुन्न र हेर्न पाएको दृश्य घुमिरहेकै छ।

कक्षाको अनुभव

प्रशिक्षक आदरणीय दिदी श्रीमती लक्ष्मी उपाध्यायबाट मेरो L1 को कक्षा शुरु भयो। एकदमै मृदुभाषी, सरल, नरिसाउने,

नझर्किने, शुद्ध उच्चारण नगरुञ्जेल सिकाइरहने आदि विशेषतासहितको प्रशिक्षक, प्रत्येक अक्षर र शब्दको वर्णन, सुमधुर लय, छोटकरीमा व्याकरणको वर्णन, ह्रस्व-दीर्घमा दिनु पर्ने समयको गति, सामुहिक र ब्यक्तिगत पठन अनुभव गर्दा साँच्चै नै वैज्ञानिक शिक्षणपद्धति रहेको कक्षाको रसास्वादन गर्ने मौका मिल्यो। यसैबीच श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् को कक्षा प्रमुख प्रशिक्षक आदरणीय दिदी श्रीमती सोनाली कालाजीसँग लिने मौका प्राप्त भयो । यस्तै यहाँबाट संचालित श्री रामरक्षा स्तोत्रम्, हनुमान चालिसा पढाउने शिक्षक पनि सोही गुणका, यसरी हेर्दा मानवलाई साच्चै मानव बनाउने ग्रन्थ यही गीताजी रहेको वहाँहरुको ब्यवहारले देखायो। प्रत्येक सत्रको समापनमा हुने आनन्दोत्सव, प्रत्येक सत्रमा आएका सच्चरित्रवान् प्रशिक्षक, प्राविधिक सहायक, समूह सवन्वयकर्ता, ब्याच समन्वयकर्तासंगको सम्पर्क र सम्बन्ध पनि अविश्मरणीय नै छ। गीताजीको अध्ययन र मननले यस्तो ब्यक्तित्वको विकास हुने जानकारी त्यहिँबाट नै प्राप्त भयो ।यसरी पढदै L1, L2, L3 र L4 को कक्षा समापनमा गइरहेछ।

गीता सेवीमा प्रवेश र प्रयास

यसरी गीता परिवारमा प्रवेश पाएर जुम मार्फत अध्ययन गर्दै जाँदा सोको ब्यवस्थापन कसरी भएको होला, क-कसको भूमिकामा कस्तो काम भएको होला, आफ्नो PRN पाँच लाख भन्दा बढी अंकको भएको तर नेपाली भाषाको कक्षामा सहभागिता न्यून संख्यामा भएको, विश्वमा हिन्दू राष्ट्रको रुपमा चिनिएको नेपाल अधिराज्यबाट खोइ त श्रीमद्भगवद्गीताको अध्ययनमा सहभागिता ? आदि प्रश्नहरुले मेरो मन मस्तिष्कलाई गिजोल्न थाल्यो।

यस्ता प्रश्नहरुको उत्तर खोज्ने क्रममा विस्तारै आफ्नो ग्रुपमा मेसेजहरु आउन थाले। गुरुदेव स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरीजी महाराजको प्रमुखत्वमा डा. आशुजी गोयल भैयाजी, डा. संजयजी मालपाणी भैयाजी लगायतका व्यक्तित्वहरुको ब्यवस्थापनमा बिभिन्न 36 विभाग मार्फत यो संस्थाले गति प्राप्त गरिरहेको आफूले बुझें। संसारमा रहेका नेपालीभाषी ब्यक्तिको सहभागितामा कसरी वृद्धि गर्न सकिन्छ भनेर प्रशिक्षक दिदीसंग ब्यक्तिगत सल्लाह गरें। वहाँबाट प्रचारक, कलिङ् एण्ड वेलकम आदि सेवाबाट सहभागिता वृद्धि गर्न सकिन्छ भन्ने जानकारी प्राप्त भयो। तत्कालीन अवस्थामा हिन्दी र अंग्रेजी भाषामा मात्र प्राप्त सूचना र पठनसामाग्रीहरुलाई कसरी नेपाली भाषामा पनि अनुवाद गरेर प्रसार गर्ने भन्ने अभिलाषाले कुत्कुत्याइरह्यो।

युट्युवमा गीता परिवार नेपालको सर्च गरेर हेर्दा आदरणीय पुजनीय गुरुदेव स्वामी गोविन्ददेव गिरीजी महाराजको प्रमुखत्वमा नेपालमा पनि जयकिसनजी सारडाको अध्यक्षतामा गीता परिवारको पहिलो अन्तर्राष्ट्रिय शाखा स्थापना भएको देखियो। यो हेर्दै जादाँ मेरो मित्र आदरणीय लक्ष्मणजी नेवटिया पनि रहनु भएको सो युट्युवबाट ज्ञात भयो। अब मैले सिधैं वहाँलाई कल गरें। वहाँ आफ्नो पुत्र बिरामी भएकाले सो बेला दिल्लीमा रहेको र थप सेवा र कार्यको लागि अध्यक्षको नंम्बर दिनुभयो। वहाँलाई मैले फोन गरें। वहाँ पनि काम विषेशले कलकत्ता रहेको र नेपाल आएपछि सम्पर्क गर्ने जानकारी दिनुभयो।

वेलकम र माईग्रेसन कलिङ्बाट सेवामा प्रवेश

वृद्ध माताजीलाई छोडेर भौतिक रुपमा कतै जान नमिल्ने र कोरोनाको महामारी कायमै रहेकोले कलिङ, माइग्रेसन, वेलकमको फारम भरेर तालिम लिएँ। करिब 40 बर्षको मेरो नेपाल सरकारको सेवानुभवले पनि मलाई सहयोग नै गर्यो। मोबाइलडाटामा

मासिक प्याक लिएर गीतापरिवारबाट प्राप्त लिस्ट अनुसार कक्षामा जोडिन चाहनेहरुलाई फोन र काउन्सिलिङ गर्दै जोड्न लागें। पहिलो प्रयासमा कम सहभागी जोडिए पनि राम्रो अनुभव प्राप्त भयो।

टिममा रहनुभएका आदरणीय मृदुला दिदी, वेदांग राजन्स भैयाजी, योगीता दिदी आदिको सहयोग अवर्णनीय नै छ। वहाँहरुको सहजीकरणको कारणले जुलाई 2023 को व्याचमा 300 भन्दा वढी र सेप्टेम्बर 2023 को ब्याचमा 400 भन्दा बढी नेपालीभाषी साधक जोड्न सफलता मिल्यो।

नयाँ रजिष्ट्रेशनमा आफु आवद्ध रहेका आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सामाजिक संघसंस्थाका व्यक्तित्वलाइ सर्वप्रथम जोड्ने, वहाँमार्फत पनि अरु जोड्ने यस्तै चेन एवं पिरामिड शैलीमा साधकहरुलाई काउन्सेलिङ गर्नु पर्ने, गीता परिवारबाट लिस्टमा प्राप्त ब्यक्ति लगायत वहाँ मार्फत सोही ब्याचमा केही ब्यक्तित्वलाइ तुरुन्तै जोड्न प्रेरित गर्ने, निरन्तर फलोअप गर्ने, सम्बन्ध विस्तार गर्ने र साधक संख्यामा निरन्तर वृध्दि आउने कुरा निर्विवाद देखिएको मेरो अनुभव छ। सत्रको शुरुदेखि आनन्दोत्सवसम्म बेलाबेलामा वहाँहरुको कक्षामा जाने, मोनिटर गर्ने, गाह्रो-साह्रो अप्ठ्यारोमा आफ्नो ठानेर तत्कालै सहजिकरण गरि दिएमा गीताजीको प्रत्यक्ष प्रभाव पर्ने त्यहाँ देखिन्छ र वहाँबाट गीता परिवारमा भविष्यमा सेवा प्रवाह निश्चित रूपले प्राप्त हुने देखियो।

प्राविधिक सेवा

निश्चित समयसम्म वेलकम एण्ड कलिङको सेवा गरेपछि थप समयको सदुपयोगको लागि प्राविधिक सेवाका लागि फारम भरेर अभिजित भैयाजीबाट तालिम लिएँ। नझर्किइकन, बोलाई बोलाई, नजानुञ्जेल सिकाउने वहाँको कला (बानी) र आफ्नो पूर्व अनुभवले चाँडै यो काम सिकियो। यसमा हाम्रो दिनेशजी पण्डिता भैयाको प्रेममय व्यवहारको पनि उल्लेखनीय भूमिका छ। यसरी प्राप्त तालिमको आफैंले स्वागत गरेका व्यक्तिसामु सदुपयोग गर्दा धेरै आनन्द महसुस भयो। आफ्नो ग्रुपमा आफ्नै भाषामा कन्टेन्ट पनि शेयर गर्दै, अनुवाद गरेर सेयर गर्दै, साधकको दु:खसुखमा तत्कालै साथ दिँदै अघि बढ्दा साधकको संख्यामा वृद्धि गर्न सहयोग भयो नै साथसाथै साधकहरु अगाडिको परीक्षा दिन र सेवा दिन तत्पर रहेको पाईयो। यसरी प्राविधिक सेवालाई पनि निरन्तरता दिइरहेको छु।

अनुवाद र प्रचारकको सेवा

यसैबीच आदरणीय दिदी श्रीमती लक्ष्मी उपाध्यायसंग बिचबिचमा गीताको सेवासम्बन्धी कुराहरु भइरहेको थियो। यसैमा म्यासेजहरु नेपालीमा ट्रान्सलेसन गर्नुपर्यो भन्ने कुरा भयो। यो काममा मेरो सहमतिमा आदरणीय विमलजी जैन भैयाजीलाई हाम्रो अध्यक्ष जयकिशनजी शारडाले भनेर वहाँमार्फत यो ग्रुपमा पनि जोडिएर आदरणीय दृष्टी दिदी, आदरणीय जागृती त्रिवेदी दिदीमार्फत मेसेजहरु अनुवाद गर्ने काम नित्य निरन्तर गरिआईएको छ। यसैगरी नेपालीमा JPEG तयार गर्न हिन्दीको कन्टेन्टलाई नेपालीमा अनुवाद गरी L3 सम्मका JPEG तयार भई प्रयोगमा आइसकेका छन्।

अफलाइन स्टोर, प्रचार प्रसार एवं उपसंहार

यसरी गीता परिवारमा जोडिएर विभिन्न सेवाहरु मैले गरेको जानकारी आदरणीय अध्यक्ष जयकिशनजी सारदा भैयाले थाहा पाउनु भएछ। अहिले सेवाको विषयमा हामी निरन्तर आवश्यक सल्लाह पनि गर्छौं। गीता परिवार नेपालमा पनि उल्लेखनीय

सदस्य संख्यामा वृद्धि भएको छ र विक्रम सम्वत 2080 को अन्त्यसम्ममा कम्तिमा 1000 जना साधक पुर्याउने लक्ष्य छ। गीता परिवारबाट प्रकासित सरल पठनीय श्रीमद्भगवद्गीताको पुस्तकको अफलाइन स्टोर नेपालभर विस्तार गर्न पनि गीता परिवार नेपाल सफल भएको छ। यो सेवा पनि मध्य क्षेत्रको निमित्त मैले नै गर्न पाएको छु। यसरी यो शाखा हाल सकृय भएको आभाष हुन थालेको छ।

मैले आउँदो ब्याचका लागि अहिलेदेखि नै प्रचार-प्रसार गर्न योगसमूहमा आवद्ध साधकहरुलाई आ-आफ्नो केन्द्रका सदस्यलाई परिवारसहित जोड्न र अगाडिको सेवा गर्न पनि भनेको छु। यसबाट पनि उल्लेखनीय साधक वृद्धि हुने आशा गरिएको छ।

अन्त्यमा, रजिष्ट्रेशन लगायतको अप्ठ्यारालाइ निराकरण गर्न आदरणीय शान्तनु चक्रवर्ती भैयाजीको योगदान पनि उल्लेख्य छ। नेपाली साधकको संख्या वृद्धि गर्न सम्पूर्ण टिमले कार्य गरेको छ । यसलाई हामीले एउटा प्रणालीको रुपमा विकास गर्दै जानु पर्नेछ। जो जति नेपालीभाषी साधकको गुणात्मक वृद्धिमा हृदयदेखि लाग्नुभएको छ, वहाँहरु सबैलाई सत् सत् नमन बन्धन गर्दछु।

- गुणराज पोखरेल, नेपाल



એક શબ્દમાં ધર્મની વ્યાખ્યા એટલે "દક્ષતા"



શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતા એ મહાભારતનો સાર છે અને મહાભારત ભગવદ્ગીતાનો વિસ્તાર છે. મહાભારતના વન પર્વમાં યક્ષ અને યુધિષ્ઠિરનો સંવાદ આવે છે. તેમાં યક્ષ યુધિષ્ઠિરને પૂછે છે કે, એક શબ્દમાં ધર્મની વ્યાખ્યા શું હોઈ શકે? ત્યારે યુધિષ્ઠિરનો ઉત્તર આપે છે કે, "દક્ષતા એ ધર્મ છે" આ ઉત્તર આપણા જીવનપથ પર ચાલવાનો આપણને માર્ગ સૂચવે છે.

જ્યારે પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવ સ્વામી શ્રી ગોવિંદ દેવગિરિજી મહારાજ આ સંવાદ પર તેમનું પ્રવચન આપે છે, ત્યારે જ આપણે ખરા અર્થે દક્ષતાને સમજી શકીએ છીએ. દક્ષતા એટલે સાવધાનતા. મનુષ્ય દર ક્ષણે જો સાવધાન રહે તો તે પોતાના કોઈપણ ધર્મને ચૂકી શકતો નથી. પૂરી ભગવદ્ગીતા ડગલે ને પગલે આપણને સાવધાન રહેવાનું જ શીખવે છે. ભગવદ્ગીતામાં જ્યાં જ્યાં ભગવાને લક્ષણો બતાવ્યા છે, તે આપણને સતર્ક થવાનું જ સૂચવે છે. અન્ન, યજ્ઞ, તપ અને દાન કેવું હોવું જોઈએ, એ આપણે નક્કી કરવાનું છે, ભગવાને તેના પણ અહી લક્ષણો જ કહ્યા છે માટે આપણે આ કર્મો કરતી વખતે પણ દક્ષતા રાખવી જરૂરી છે. મોહને કારણે જ્યારે અર્જુન શું કરવું તે વિચારી શકતો નહોતો ત્યારે ભગવાને આછું સ્મિત આપી અને અર્જુનને ઠપકો આપતા કહ્યું,



क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ, नैतत्त्वय्युपपद्यते। क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं, त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥२.३॥

ભગવાન બોલ્યા "હે પાર્થ! તું આ નપુંસકતાને તથા હૃદયની આ તુચ્છ દુર્બળતાને ત્યજીને યુદ્ધ માટે ઊભો થઇ જા." આમ ઠપકો સાંભળી, સાવધાન થયેલા અર્જુને ભગવાનને સહાયતાની વિનંતી કરી; જેના કારણે આપણને ભગવદ્ગીતા રૂપી અમૃત મળ્યું. મનુષ્ય પણ વિકટ પરિસ્થિતિમાં મુંઝાય જાય છે ત્યારે જો તે થોડો શાંત થઈને વિચારે તો ધીરે ધીરે માર્ગ પણ મળતો જ જાય છે. મહાભારત થવાનું મૂળ કારણ દ્યુત પ્રસંગ હતો. પાસા ફેંકવાનો ધર્મરાજ યુધિષ્ઠિરને અવસર જ મળ્યો નહોતો; તે સમયે જો તેઓ સતર્ક થઈ ગયા હોત, તો આવી અણધારી ઘટના સર્જાત જ નહીં. દ્યુત પ્રસંગમાં જ બીજી ઘટના

એવી બની હતી કે, જ્યારે પાંડવોને વનવાસ થયો ત્યારે દુર્યોધન, દુશાસન, કર્ણ અને શકુની દ્વારા જે વાણીનો વિલાસ કરવામાં આવ્યો, તેઓ પોતાની વાણી માટે સાવધાન રહ્યા નહી. તેને કારણે યુદ્ધ સંભાવી થઈ ગયું. મનુષ્ય પણ જ્યારે જ્યારે સતર્કતા ચૂકે છે ત્યારે તે પોતે જ પોતાનું અમંગળ સર્જે છે, કદાચ તે સમયે નહી તો પછી જ્યારે કર્મ પાકે ત્યારે તે દુઃખ કારક ફળ ભોગવે છે. મનુષ્ય બીજું કઈ ન કરી શકે તો કંઈ નહી પણ પોતે શું બોલે છે તેના ઉપર જો તે સતર્ક રહે તો ઘણી અણગમતી ઘટનાઓને ટાળી શકે છે.

જો વિદ્યાર્થી અભ્યાસ સમયે ગાફેલ રહે, તો તે સારા ગુણાંક મેળવી શકતો નથી. જેને કારણે તેના જીવનમાં તેને ન તો સારી ઉચ્ચ શિક્ષા મળી શકે છે અને ન તો સારી નોકરી મળી શકે છે. આમ થવાનું મૂળ કારણ છે, જે સમયે તેને અભ્યાસમાં સમય આપવાનો હતો ત્યારે તે બેદરકાર રહ્યો. આમ દરેક પ્રવૃતિ માટે જેમ જેમ આપણે વિચારીએ, તેમ તેમ આપણને સમજાશે કે, વ્યક્તિના સજાગતાના અભાવે જ તે દુઃખી થાય છે.

ભગવાન ભાગવદ્ગીતામાં કહે છે તેમ, સુખદુઃખે સમે કૃત્વા, લાભાલાભૌ જયાજયૌ। ભગવાન અર્જુનના માધ્યમથી આપણને સમજાવે છે, સુખ હોય કે દુઃખ હોય, લાભ હોય કે ગેરલાભ હોય બંનેમાં મનુષ્યએ સમતા રાખવી જોઈએ. આ સમતાનો ગુણ ત્યારે જ ઉદ્ભવી શકે જ્યારે વ્યક્તિ સાવધાન રહે. આમ દક્ષ રહેવું એટલું સરળ નથી. આપણે થોડી પ્રતિકૂળ સ્થિતિમાં જેવા મુકાઈએ તેવા આપણે આ સતર્કતા ખોઈ બેસીએ છીએ. તે માટે ઉત્તમ ઉપાય છે, ઈશ્વરની શરણ. નિરંતર ઈશ્વરનું ચિંતન જ આપણને દક્ષતા આપી શકે છે.

ગીતા પરિવારે આવા જ અનેક ઉદ્દેશ્યોથી ગીતા સંથા વર્ગ શરૂ કર્યા. જે કારણે આપણે યેનકેન પ્રકારેણ ઈશ્વર ચિંતન સાથે આપણાં સાંસારિક કાર્યો આનંદ પૂર્વક કરી શકીએ છીએ. જે જે લોકો અહી જોડાયા છે તેઓ સૌ આ વાતને અવશ્ય માનશે જ કે, ગીતા પરિવાર સાથે જોડાયા પછી તેમના જીવનમાં પહેલા કરતાં વધુ આનંદ આવ્યો છે. આ આનંદ બીજો કોઈ નથી પણ કોઈને કોઈ પ્રકારના સત્કાર્યો દ્વારા સતત ઈશ્વર સાથે રહેવાની વૃત્તિ બની ગઈ છે તેના કારણે છે. જો આપણે બારીકાઈથી આપણો આ ગીતા યાત્રાનો અભ્યાસ ઉપર નજર કરીએ તો આપણાં જીવનમાં પણ આપણી પોતાની સાવધાનતા પહેલા કરતાં વધી છે તેવું લાગશે.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां, ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां, योगक्षेमं वहाम्यहम्॥९.२२॥

આમ અનન્ય ભાવે નિશ્ચય પૂર્વક જો આપણે ઈશ્વર સમીપ રહીશું તો આપણાં યોગક્ષેમનું વહન ભગવાન કરશે એવું તેઓ પોતે જ ભાગવદ્ગીતામાં આપણે કહે છે. આપણે તો માત્ર સાવધાન રહી ઈશ્વર સ્મરણ કરતાં કરતાં આપણાં કાર્યો કરવા જોઈએ. આપણાં કાર્યો માત્ર આ જીવન માટે જ નથી, આ તો ભવોભવ માટે છે. માનવ યોની એ એક જ કર્મ યોની છે, બાકી બધી ભોગ યોનીઓ છે. આપણને આ અમૂલ્ય માનવ જીવન મળ્યું છે, એટલે આપણે માત્ર આ જન્મ માટે જ નહીં પણ આપણી આ અનંત યાત્રા માટે સતર્ક રહી એવા સત્કર્મમાં જોડાયેલા રહીએ, જે આપણાં આ અનંત જીવન યાત્રાનો દરેક પળે ઉદ્ધાર જ કરતો રહે.

આપણને જ્યારે જ્યારે સમય મળે ત્યારે આપણે પરમ પૂજ્ય સ્વામીજીના પ્રવચનો સાંભળીએ તેમ જ સ્વામીજી દ્વારા કહેવાયેલા પ્રવચનોના અંશ રૂપી આપણાં વિવેચકો દ્વારા થતાં ગીતાજી પરના વિવેચનો સાંભળીએ, જે આપણી મનોસ્થિતિને ઊર્ધ્વગામી બનાવતી રહેશે.

- जतिन वेद, मुम्बई

अभयम्





अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यास्तप आर्जवम्॥ 16.1॥



श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भग्रवान 16हें अध्याय जे पहरिएं ऐं ब्रिएं श्लोक में दैवी गुण ब्रुधाया आहिन। अभयम्, शुद्ध सतोगुणी थियण, ज्ञान, योग, निष्ठा, दान, इन्द्रियुन जो दमन, यज्ञ करण, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शांति, चुगली न करण, सभनी प्राणियुनि ते दया करण, तृष्णा खां बचण, कोमल सुभाव, चपलता जो त्याग, क्षमा, धृति, पवित्रता, द्वेष न करण, अभमान न करण इहे सब दैवी आहिन। भग्रवान सब खां पहरियों पद अभयम् चयो आहे। अभयम् यानी जिते भय सफा न हुजे। भय माना डपु; डपु छाखे थो चइजे, डपु छा जो थींदो आहे? मुखां कुझ गलत न थी वञे, मुहिंजी ज़िन्दगीअ में कुझ गलत न थी वञे, मूंसां केरु धोखो न करे। इहो सब सोचे सोचे अंदर में घबराहट थींदी आहे ऐं उन खे ई डपु चइबो आहे। डप जा जुदा जुदा नमूना आहिन, जीअं त अंदर जो डपु, ब्राहिर जो डपु वगेरह।

माण्हूं जड़ुहिं को पाप करे थो, कहिं ते अत्याचार करे थो, कहिं सां गलत वहंवार करे थो त उनजे अंदर में डपु पैदा थिए थो। को ब माण्हूं शास्त्रनि में मना कयल वहंवार तेसीं ताईं कंदो आहे, जेसीं ताईं उन जे मन में इहा लालच आहे त मुहिंजो सरीर ठीक रहे, मुखे मान सम्मान मिलंदो रहे, संसार जा सब भोग़ पदार्थ मिलंदा रहनि। छाकाण त हुन जो सिर्फ हिक ई उद्देश्य हूंदो आहे, संसारी जड़ शयूं हासिल करण ऐं उन्हनि जी सम्भाल करण। मतलब त हुन खे इहो डपु हमेशह रहंदो आहे त हिननि संसारी शयुनि जो नास न थी वञे ऐं इन्हीअ करे हू कड़ुहिं ब बेडपो कोन थी सघंदो आहे।

पर जहिं वक्त हुनजो उद्देश्य भग्रवान जी प्राप्ति, चिन्मय-तत्त्व जी प्राप्ति थी वेंदो आहे, उन्हीअ वक्त खां ई पाप, अत्याचार, अन्याय, गलत वहंवार सभेई छुटी वेंदा आहिन। हकीकत में इहो उद्देश्य त पहरीं खां ई ठहियल आहे; उनखां पोइ ई असांखे हीउ सरीर मिलियो आहे, इनलाए उन उद्देश्य खे सिर्फ सुञाणणो आहे, ठहियल त पहरीं खां आहे।

ब्राहिरां अचण वारो डपु छा खे थो चइजे? जीअं त चोरनि, डाकुनि, शीहं, नांग, विछूंअ वगेरह प्राणियुनि खां जेको डपु थिए थो इहो ब्राहिर जो डपु आहे, जहिं में सरीर जे नास थियण जो इम्कान हुजे। कहिं मिट माइट, दोस्त सां रिश्तो टुटण जो डपु ब ब्राहिर जो डपु चइबो। हिन में माण्हूं हुननि सभनी जूं सब ग़ाल्हियूं, भले उहे सही नीतीअ वारियूं न हुजनि, यानी मञण जहिड़ियूं न हुजनि, तड़ुहिं ब मञींदो आहे, डप जे करे। हिक ब्रिए नमूने जो ब डपु आहे, उहो कहिड़ो आहे ?

माण्हूंअ खे इहो डपु ब थींदो आहे त मुखां गुरू, संत-महात्मा, माता-पिता ऐं वड़ुनि जे वचननि जी अवज्ञा न थी वञे, शास्त्र ऐं कुल जी मर्यादा जे खिलाफ कुझ कर्म न थी वञे। हकीकत में इहो डपु त हुअण ब खपे छाकाण त हिन जे हुजण सां साधक सही रस्ते ते ऐं सही नमूने हलंदो।

असांखे हीउ मानुष जनम मिलियो आहे; जेसीं करण जोग्रो न कंदासीं, ज्ञाणण जोग्रो न ज्ञाणंदासीं ऐं हासिल करण जोग्रो हासिल न कंदासीं, तेसीं ताईं डपु बिल्कुल खतम कोन थी सघंदो। जेतरो जेतरो भग्रवान ते विश्वास रखबो, जेतरो जेतरो भग्रवान ड्राहुं हलयो, ओतरो ई बेडपो थी सघबो। पाणेई मन में विचार ईंदो त मां परमात्मा जो अंश आहियां, इनकरे मुहिंजो कड्हिं ब नास कोन थींदो त पोइ मां छो डिज्ञां? भग्रवान सां लिंव लग्री वेई; उन सां नातो ग्रंडजी वियो

त पोइ कुटुंब में ममता कोन रहंदी, एतिरे कदुर जो पहिंजे सरीर में ब ममता कोन रहंदी। ममता जे न हुअण सबब मरण जो डपु कोन रहंदो त ब्रिए कहिं डप जो त सुवाल ई पैदा नथो थिए। यानी साधक बिल्कुल बेडपो थी वेंदो चइबो त अभय थी वेंदो मतलब त हुन में दैवी सम्पदा अभयम् अची वेंदी।

- Seema Sahani, Udaipur



பகவான் கிருஷ்ணன் அருளிய பகவத் கீதையில் (Trigunas) முக்குணங்களைப் பற்றி கூறியிருப்பதாவது:



குணம் ஒரு மனிதனின் உடல், சமூகம், உளவியல் மற்றும் ஆன்மீக நிலையைக் குறிப்பதாகும். இயற்கை (Ptakriti)யின் இந்த குணங்கள் மூன்று வகைப்படும்.

சத்வ-சாத்வீகம்/ சமநிலை

ரஜோ- ராஜஸம்/ உணர்ச்சிமிக்க நிலை

தமஸ் - தாமஸம்/ மந்தநிலை.

இந்த மூன்று குணங்களின் வெளிப்பாடுகள் தனித்துவம் வாய்ந்தவை. மனிதனின் உணவு முறைகளும் இதனைச் சார்ந்து நமது ஆளுமையை மாற்றும்.

சத்வ குணம் பொதுவாக சிந்தனைத் திறனை வலுப்படுத்துவதாக இருக்கும். இவர்கள் சைவ உணவை உண்டு நேர்மறை எண்ணங்களுடன் வாழ்வார்கள். ரஜோ குணம் உணர்ச்சிகளால் உந்தப்படும். இவர்கள் உணர்ச்சியைத் தூண்டிவிடக் கூடிய கடின, காரமான உணவை உண்டு ஆக்ரோஷ நடத்தையை வெளிப்படுத்துவர். தமோ குணம் மந்த புத்தியை பிரதிபலிக்கும். இவர்கள் பழைய உணவை உண்டு பிற்போக்கான நடத்தை உள்ளவர்களாய் வாழ்வார்கள். எல்லா மனிதருள்ளும் இந்த மூன்று குணங்களும் உண்டு.

சத்துவ குணம் என்பது தூய்மையாகவும், ஒளிவிடும் தன்மையுடனும்

உயிரை உடலுடன் மகிழ்ச்சி– ஞானம் ஆகியவைகளால் இணைக்கும் தன்மை கொண்டதாகவும் இருக்கும். அந்த சத்துவ குணம் உயிரை மேம்படுத்தி, மறுபிறவி இல்லா முக்திக்கு வழிகோலும். இதனை தூயதாயிருக்கும் கண்ணாடியோடு ஒப்பிடலாம். கண்ணாடியின் வாயிலாக வெளிச்சம் நன்கு வெளியாகும்.சத்வ குணம் ஆத்ம பிரகாசத்தை விளக்குகிறது.

ரஜோ குணம் என்பது காமம் மற்றும் பற்று ஆகியவைகளால் உயிரை உடலுடனும், அவற்றின் செயல்கள் , பலன்கள் ஆகியவைகளால் இணைக்கும் தன்மை கொண்டது. அதன் காரணமாக மறுபிறவி எடுக்கும் தன்மை கொண்டதாக அமையும். விறகுக் கட்டை எரிகின்ற தீயை வளர்ப்பது போல ரஜோ குணம் வினைப் பற்றை வளர்க்கிறது.

தமோ குணவான்களின் நம்பிக்கை அஞ்ஞானத்தில் உருவானது.அவர்கள் செய்யும் தானமும் அகாலத்திலும், தவறான இடத்திலும், தவறானவர்களுக்கும் வெறுப்போடும், திட்டியும் பணிவில்லாமல் இருக்கும்.

அத்தியாயம் 14 – ல் 4-லிருந்து 23-வரை மூன்று குணங்களைப் பற்றிய விரிவான விளக்கங்கள் உள்ளன.

மேலும் அத்தியாயம் 18 – ல் 27 ஸ்லோகங்கள் முக்குணங்கள் பற்றியதாகும்.

சத்வம், ரஜஸையும், தமஸையும் அடக்கி மேலெழுகிறது. இதுபோல் ஒவ்வொரு குணமும் மற்ற இரண்டையும் அடக்குகிறது.

எந்த உயிர் இந்த மனித குணங்களை வெற்றி கொள்கிறதோ, அந்த உயிர் தான் பரப்பிரம்மமான இறைவனடி சேர்கின்றது. பிறகு அந்த உயிருக்கு மறு பிறவியோ, மூப்போ, இறப்போ இல்லை.

இந்த முக் குணங்கள் ஒருவர் கொண்டுள்ள நம்பிக்கை, உட்கொள்ளும் உணவு, வாழ்வில் எளிமை, செய்யும் தானம் ஆகியவைகளைப் பொறுத்தே அமையும்.

முக் குணத்தவர்கள் அனைவரின் நம்பிக்கையும் அவர்களது முற்பிறவியைப் பொறுத்தது.

- Akila Jayaraman, Kolkata

గీతను నేర్చుకొంటూ, ఆత్మవిశ్వాసాన్ని పెంచుకున్నా.

కరోనా సమయంలో నాకు ఒక వరంలా దొరికింది, ఈ గీతాపరివార్ యొక్క భగవద్గీతా చార్ధామ్ యాత్ర.

మా అమ్మగారిని మాధ్యమంగా చేసుకొని కృష్ణ పరమాత్మ నాకు ఈ గీతాపరివార్ లింకును విమలారెడ్డి గారి ద్వారా పంపించారు. నేను ఈ సంస్కృత శ్లోకాలను పఠించలేను అనే భయముతో మొదట మా పాప(శిశిర) ని గీతాపరివార్ లో చేర్పించాను. మా శిశిర గురువుగారు అయినా వల్లీగారు గీతను చెప్పే విధానము చూసి గీతను ఇంత సులువుగా సంగీతంలా నేర్చుకోవచ్చా అని, నేను కూడా 2021 మార్చి లో చేరడం జరిగింది. గీతా పరివార్ లో నా చార్ధామ్ యాత్రను చక్కటి ప్రశిక్షకులు ఆధ్వర్యంలో పూర్తి చేసుకున్నాను.

ఒక ఆనందోత్సవంలో తేజస్విని దీదీ సేవలోకి రమ్మని చెప్పే విధానం నచ్చి నేను టెక్నికల్ అసిస్టెంట్ గా చేరాను. ట్రైనర్ గా అయితే పరీక్ష ఇవ్వాలి, తెర ముందు కనిపించాలి అని ఎన్నో భయాలు ఉండేవి. కాని గీతాపరివార్ నాకు కొంతమంది ఆత్మబంధువులను ఇచ్చింది. అందులో ఒకరు హారతిదుంపలగారు... ఆవిడ ప్రోత్సాహంతో నేను ట్రైనర్ గా సేవను అందించడానికి ముందుకు వచ్చాను. అలా నాలో ఉన్న స్టేజ్ ఫియర్ ను గీతా పరివార్ పటాపంచలు చేసింది.

మొట్టమొదటిసారి techగా ఆనందోత్సవంలో నేను ఏమీ మాట్లాడలేదు.... అంతా మీరే మాట్లాడండి అని ట్రైనర్ గారికి చెప్పాను. కానీ ఇప్పుడు నన్ను ఎంతోమంది చీఫ్ గెస్టు గా వారి ఆనందోత్సవాలకు ఆహ్వానిస్తున్నారు. నా యొక్క మాటలు వారికి ఎంతో స్ఫూర్తిని ఇస్తున్నాయి అని వారు మళ్ళీ తదుపరి ఆనందోత్సవంలో...సేవలోకి వచ్చి చెబుతున్నారు. అప్పుడు నాకు ఎంతో ఆశ్చర్యం మరియు ఆనందాన్ని కలిగిస్తోంది.

గీతా పరివార్ వారు మనకు ఒక్క భగవద్గీతనే నేర్పించడం లేదు... మనలో ఉన్న భయాలను, బిడియాలను, వత్తిళ్ళను, తొందరపాట్లను అన్నింటిని పోగొట్టి మనలో ఉన్న ఆత్మవిశ్వాసమును, సృజనాత్మకతను మరియు సహనమును బయటకు తెస్తున్నారు. ఎలా అయితే శ్రీకృష్ణ పరమాత్మ కురుక్షేత్రంలో గాండీవము చేజార్చిన అర్జునుని వెన్ను తట్టి లేపాడో అదేవిధంగా నన్ను గీతాపరివార్ వారు ఈ విధముగా తీర్చిదిద్దారు.

అలానే నన్ను గురువుగారైన శర్మగారు తెలుగు వివేచన ట్రాన్స్లేషన్ టీం లో చేర్చి ఇంకొక అవకాశం ఇచ్చారు. మొదటి వివేచన రాసేటప్పుడు నేను ఎంతో భయపడ్డాను, నేను రాయగలనా అని చాలా సంశయించాను, నాకు మొదటి వివేచన రాయడానికి ఒక రోజు పట్టింది కానీ తరువాత నాలుగు గంటల్లో ఆ వివేచన్ని ఎంతో ఆస్వాదిస్తూ రాసేదాన్ని. అలానే, గీతా పరివార్ వారు వ్యాకరణ తరగతులకు యాంకరింగ్ చేసే సేవను నాకు అందించారు.

ఇలా గీతా పరివార లో చార్ధామ్ యాత్ర... అని చేరిన నేను భగవద్గీతను నేర్చుకోవడమే కాకుండా నాలుగు లెవెల్స్ లోను ప్రశిక్షకురాలిగా 18 అధ్యాయాలు నేర్పించే అవకాశాన్ని అందజేశారు. అలానే ఎంతోమందికి స్ఫూర్తినిచ్చే వ్యక్తిగా నన్ను తీర్చిదిద్దారు.

ఇంతటి చక్కటి అవకాశాలను ఇస్తూ చక్కని ఉచ్చారణతో గీతను అందించిన గీతా పరివార్ వారందరికీ నా శతకోటి వందనాలు. అలానే ఇంతటి మహాయజ్ఞాన్ని మొదలు పెట్టిన పూజ్య శ్రీ గోవింద్ దేవ్ గిరీజీ మహారాజ్ గారికి నా మనఃపూర్వక పాదాభివందనాలు

- M.V. Shanti Varma, Hyderabad



জয় হোক সনাতন ধর্মের



অনেক সাধনার ফলে, অনেক পূর্ণতার ফলে, ভগবান শ্রীকৃষ্ণের কৃপায় আমরা

মানব কুলে জন্মগ্রহণ করেছি। এ জন্ম অনেক তপস্যার ফলে হয়েছে। আমাদের এই জন্মকে পরিপূর্ণভাবে , নিঃস্বার্থভাবে ভগবান শ্রীকৃষ্ণের চরণে উৎসর্গ করাই হবে একমাত্র উদ্দেশ্য। আর এই উদ্দেশ্য সফল হতে পারে একমাত্র পবিত্র গীতা র মাধ্যমে। আমরা জানি, বিশ্বাস করি , অন্তরে লালন করি শ্রীমদ্ভগবত গীতাই হল একমাত্র পথ যার অবলম্বনে আমাদের এই মানব জনম সুন্দর ও সার্থক হতে পারে। দিকে দিকে যে অরাজকতা অস্থিরতা ,মিথ্যাচার ,দুরাচার বিভিন্ন রোগব্যাধিসহ মানব জাতি আজ জরাজীর্ণ সর্বক্ষেত্রে মানুষ অসহায় নিরুপায় কি করবে বুঝেও বুঝতে পারেনা ।। করতে চাইলেও মন সায় দেয় না এমন এক সন্ধিক্ষণে আমরা দাঁড়িয়ে ।। "মানুষ মানুষের জন্য " আজ আমরা ভুলেই গেছি । ভুলতে বসেছি মা-বাবার প্রতি আমাদের দায়িত্ব ও কর্তব্য , সন্তানদের প্রতি আমাদের দায়িত্ব ও কর্তব্য , সামাজিক দায়িত্ব ধর্মীয় দায়িত্ব ইত্যাদি । আমরা যেন কিসের মোহে ছুটে চলেছি আমরা নিজেরাই জানিনা কি সেই মোহ।। লোভ লালসা, মোহ কাম ক্রোধ এগুলো আজ আমাদের নিত্যদিনের সাথী। আমাদের এইসব মোহ থেকে বেরিয়ে আসতেই হবে তার জন্য প্রয়োজন শ্রীমদ্ভগবত গীতা। পৃথিবীর সকল ধর্মকে সকল ধর্মের মানুষকে মুক্তির পথ দেখাতে পারে আমাদের এই পবিত্র গীতা। আমরা বিশ্বাস করি আমরা লালন করি শ্রীমদ্ভগবত গীতা হল একটি পূর্ণাঙ্গ জীবন দর্শন। এই দর্শনকেই আমাদের জীবনে চলার পাথেয় করে নিতে হবে। নইলে আমরা শ্রীকৃষ্ণের চরণ থেকে বঞ্চিত হব। গীতা পরিবার এই মহৎ উদ্যোগটি নিয়েছেন ।এজন্য গীতা পরিবারকে অসংখ্য ধন্যবাদ। সকল সনাতনীদের এক জোট হতে হবে দলগত ভাবে , আমাদের এগিয়ে যেতে হবে নইলে আমরা হয়তো একদিন নিশ্চিহ্ন হয়ে যাব । সেদিন বেশি দূরে নয়। তাই এখন থেকেই আমাদের জীবনকে পবিত্র গীতার সাথে সঙ্গী করে রাখি। শুরু হোক পরিবার থেকেই। গীতার নির্দেশ মতো চলি। সকলে মিলেমিশে কাঁধে কাঁধ রেখে একাত্ম হয়ে বলি জয় হোক শ্রীমদ ভগবত গীতার জয় হোক সনাতন ধর্মের সারা বিশ্বে ছড়িয়ে পড়ুক গীতার বাণী দলে দলে জনসমুদ্রের মত গীতার বাণীকে অন্তরে ধারণ করুক সকলে এই প্রত্যাশা এই আশা রেখে,অন্তরে এই ভালোবাসা রেখেই গীতা পরিবারের সাফল্য কামনা করে আমার দুটি কথা শেষ করছি।

- Ratan Kumar Deb, Bangladesh







श्री कृष्णाचा जयजयकार
भला लाभला गीतापरिवार

सई ताईंनी अध्याय बारावा
सराव करवून शिकविला बरावा

छाया ताईंनी वर्ग घडविला
पंधरावा अध्याय सुलभ करविला

अभय दादांची होती साथ
कायम दिला मदतीचा हात

सुवर्णाताईंचे ऑडिओ ऐकून सुरस
गीता सोपी वाटू लागली खरच

ज्योतीताईंनी साधत प्रापंचिक मेळ
विडिओ तपासायला काढला वेळ

व्याकरण-विवेचन सादरीकरण शिक्षणाचे सूत्र
चारधामयात्रेचे सहज पार झाले पहिले सत्र

प्रभू हेचि दान सर्वांना देवो
श्रीभगवद्गीता कंठस्य होवो

- सौ. रश्मी प्रविण महाजन, थाणे

मनोगत

(१)"म", मन में आ रहा है बड़ा बदलाव
हूँ जबसे जुड़ा 'गीता', संग मैं !
है ये 'गीता परिवार', वृहत.....,
जिसके हैं साधक लाखों में !!

(२)"नो", नोट्स प्रिंट वीडियो के द्वारा
ये कराते सामग्री उपलब्ध !
नित लेते हैं ऑनलाइन कक्षाएं....,
कराते हैं नित गीता पाठ !!

(३)"ग", ग़र ना हो हिंदी संस्कृत का ज्ञान
तब भी कराते हैं ये याद !
है बड़ी सुलभ इनकी विधि.....,
हों जाते हैं सब श्लोक याद !!

(४)"त", तप साधना, हो ध्यान कैसे
ये बतलाते हैं गुरूजी !
हैं गीता परिवार के संस्थापक....,
श्रीगोविन्ददेवगिरी महाराजजी !

(५)"मनोगत", मनोगत है मेरा यही
कि, सभी जुड़ें इससे साधक !
दें जीवन को एक नयी दिशा....,
बनाए 'गीता', जीवन को है व्यापक !!

(६)"मनोगत", मनोगत है कि स्वयं पढ़ें
और पढ़ाएं 'गीता', सभी को यहां !
उतारें जीवन में गीता सार....,
तो, निश्चित होगा कल्याण यहां !!



गीता पढ़ें, पढ़ायें और जीवन में लायें

(१)"गीता ", गीता है जीवन का सार
आओ इसका नित्य पाठ करें !
तन मन में बसा लें प्रभु ध्यान.....,
मन से सदा संकीर्तन करें !!

(२)"पढ़ें ", पढ़ें गीता के नित्य श्लोक
भावों को मन में अपने उतारें !
करें ना जीवन में दुःख शोक.....,
हर पल प्रभु छवि ही निहारें !!

(३)"पढ़ाएं ", पढ़ाएं उसे जो मन लगाए
रखे जो धर्म शास्त्रों में निष्ठा !
जीवन में लाए बदलाव गीता.....,
बढ़ाएं प्रभु में प्रीत आस्था !!

(४)"और ", और की चाह मन में ना धरें
है जो उसी में आनंदित रहें !
अपना नहीं है यहां पे कुछ भी....,
फ़िर जीवन से मोह हम क्यों करें !!

(५)"जीवन ", जीवन है जब तक इस धरा पे
मोह माया का बंधन बना रहेगा !
इससे हो यदि पार पाना.....,
तो 'गीता', से हमको जुड़ना पड़ेगा !!

(६)"में ", मेंड ज्ञान की बना इर्द-गिर्द
स्वयं को भ्रम से हम बचाएं !
सदा रहते कर्मों के प्रति सतर्क....,
इस भव सागर से पार हम हो जाएं !!

(७)"लाएं ", लाएं स्वयं से स्वयं में बदलाव
समझें जीवन का सत सार !
रखें जीवन में सम्यक भाव.....,
जीवन में उतारें गीता सार !!

(८)"गीता पढ़ें, सबको पढ़ाएं
जीवन में लाएं हम बदलाव !
जुड़के गीता परिवार संग.....,
जीवन में फैलाएं सदभाव !!

गीता आनंद उत्सव

(१)"गीता", गीता है एक महाकाव्य
आओ मिलकर इसको गायें !
लें इससे प्रेरणा हर समय....,
नित जीवन में इसको उतारें !!

(२)"आनंद", आनंद में जीएं हर समय
और आनंद ही हम यहां पे बांटे !
जीवन में मनाएं आनंदोत्सव.....,
जीवन को हंसते यहां गुजारें !!

(३)"उत्सव", उत्सव है जीवन का शुभ पल
इस पल को हम तुम यहां रचायें !
उत्साह उमंग उल्लास संग.....,
नित्य जीवन को जीते हम जायें !!

(४)"गीता आनंद उत्सव ", पर्व मनायें
हर पल नाचें और गुनगुनायें !
है जीवन का ये सुखद अवसर.....,
आओ इसमें रच बस जायें !!

(५)"गीता आनंद उत्सव ",हर्षाता आए
जीवन में खुशियां भर लाए !
बना जीवन को गीतामय....,
जीवन के लक्ष्यों को पा जायें !!

- श्री सुनीलानंद, जयपुर



प्रतिबिम्ब

हे कान्हा! तुम ही हो मेरे सच्चे मित्र
अपने होने के अहसास को
दिल से दिल तक पहूंचाकर
जीवन की सच्चाई का दिखाया तुमने चित्र
हे प्रभु!तुम ही हो मेरे सच्चे मित्र
मैं कहती रही अपने मन की बातों को
तुम सुनते रहे साथी बन दिन और रातों को
मैं घबराई तो तुमने ही सम्भाला
मैं इतराई तो अहम् चूर कर डाला
सांसो की जब भी टूटने लगती डोर
तुम आकर पकड लेते उसका छोर
जीवन के धूप और छांव के मेल में
हारता है जब मन सुख-दुख के खेल में
जीत के रास्ते नये खोल देते हो
ऐसा ना जाने भेजते हो कौन सा पत्र
हे कान्हा! तुम ही हो मेरे सच्चे मित्र
तुम मेरी आस हो,विश्वास हो
लगता है तुम दूर हो पर
अगले ही क्षण दिखते तुम मेरे पास हो
मेरी कामयाबी में बिखेरते रहे इत्र
हे कान्हा! तुम ही हो मेरे सच्चे मित्र

- अर्चना शर्मा 'अर्ची', गाजियाबाद

नहीं मैं एकलव्य,
ना ही मैं हूँ अर्जुन..!
आतुर हो रहे कर्ण मेरे,
पदचाप सुनने अपने गुरू की..!!

राह तकती ये नजर,
आँख भर आयी ये मेरी..!
आतुर हो रहा मन मेरा,
परछाई देखने अपने गुरू की..!!

नतमस्तक हूँ मैं शीश नवाँ,
कंठ हो रहा है रुंध..!
मानवंदन को रहा आतुर,
चरणधूली सजाने अपने गुरू की..!!

क्या मिल पायेगा इस जनम,
स्पर्श उनका अपने सर पर..?
क्या देख पाउँगा इस जनम,
साक्षात स्वरूप अपने गुरू की..??

- मनीष माणिकराव गोडे, नागपुर

ಮಾಧವ

ಮಾಧವ ಹೇಳಿದ , ಮಾನವ ಬದುಕಿದು
ಬರಿದೇ ನಿಜವಲ್ಲಾ.....
ಬರಿದೇ ನಿಜವಲ್ಲಾ....

ತಾನಾಡಿಸುವಾ ನಾಟಕವಿದು ನಿಜ ,
ಬಣ್ಣದ ಬದುಕೆಲ್ಲಾ .....
ಬರೀ ಬಣ್ಣದ ಬದುಕೆಲ್ಲಾ ...

ನನ್ನಲಿ , ನಿನ್ನಲಿ , ಅವಳಲಿ , ಅವನಲಿ
ಕೇಶವನಿಹನಲ್ಲಾ...?
ಎಲ್ಲೆಲ್ಲೂ ಕೇಶವನಿಹನಲ್ಲಾ ..?

ಕನಸಲಿ , ನನಸಲಿ , ಕಾಯಕ ಕ್ಷಣದಲಿ ,
ನಾನೇ ಹೊಣೆಯಲ್ಲಾ ...
ಎಲ್ಲಕೂ ನಾನೇ ಹೊಣೆಯಲ್ಲಾ ....

ತಪ್ಪಿಗೂ , ಒಪ್ಪಿಗೂ,ಪಾಪಕೂ , ಪುಣ್ಯಕೂ...
ನನ್ನದೇನೂ ಇಲ್ಲಾ...
ನನ್ನದೇನೂ ಇಲ್ಲಾ....

ನಾನಾರೆಂಬುವ ಗೊಂದಲವಾಗಿದೆ ,
ಚಿಂತಿಪೆ ದಿನವೆಲ್ಲಾ...
ನಾ ಚಿಂತಿಪೆ ದಿನವೆಲ್ಲಾ....

ನಂಬುಗೆಯಿಂದಲೇ ಬಾಳಲು ಮುಂದಕೆ
ಶಾಂತಿಯು ದಿನವೆಲ್ಲಾ...
ಶಾಂತಿಯು ದಿನವೆಲ್ಲಾ....

ಮೊಮ್ಮಗ , ಅಜ್ಜೀ.... ಎನ್ನುತ ಕೂಗಲು ,
ಮರೆತೆನು ಜಗವೆಲ್ಲಾ ...
ನಾ ಮರೆತೆನು ಜಗವೆಲ್ಲಾ....

ಮನೆಯೂ , ಮಕ್ಕಳು ಮಾಧವನಾಡುವ
ಗಾರುಡಿಯೇ ಎಲ್ಲಾ...
ಗಾರುಡಿಯೇ ಎಲ್ಲಾ....

ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮೇಲೊಂದು ಕವಿತೆ
ಹೇ ಕೃಷ್ಣ ...ನೀನಾದೆ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ
ನಿಜದ ಗೆಳೆಯ
ಅವನದಲ್ಲ ರಥ
ನಿಜವಾಗಿ ನೀನದರ ಒಡೆಯ
ನಮ್ಮ ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಈಶ
ನೀ ಹೃಷೀಕೇಶ
ಮಿತ್ರನಾಗುವೆ ನೀ
ನಾವಾದರೆ ಗುಡಾಕೇಶ...

ಗೀತಾಚಾರ್ಯ ! ನೀ ಜಗಕೆಲ್ಲ
ಜ್ಞಾನದಾ ಬೆಳಕು
ಮೋಹದಾ ಮುಸುಕು ಅದು
ನಮ್ಮದೇ ಹುಳುಕು!
ಒಡ್ಡಿದರೆ ಗೀತೆಯ ಧಾರೆಗೆ
ಕಣ್ಪೆಪ್ಪೆ ಬಾಗುವಾ ಮುನ್ನ
ಹನಿಹನಿಯಲ್ಲು ಕಾಣುವುದು
"ಅವನದೆ' ಚೈತನ್ಯ
'ಅವನದೇ' ಚೈತನ್ಯ...

- Smt Sandhya Anandatheertha, Bangalore



चौपाई पहचाने खेल



नीचे दी हुई चौपाइयों के शब्द इधर-उधर किये गए हैं,
क्या आप उन्हें पहचान कर ठीक कर सकते हैं

1.	सदा सिद्धि नौ माता राम रसायन दाता जानकी निधि बर दीन के अस के रघुपति दासा अष्ट पासा रहो तुम्हरे
2.	सीता रसिया को काज गुनी सुनिबे अति प्रभु लखन आतुर चरित्र राम विद्यावान करिबे मन को राम चातुर बसिया
3.	सहस्र जोजन ताहि जानू मधुर लील्यो माना मंत्र लंकेस्वर तुम्हरो भए जुग पर बिभीषन सब जाना भानू जग फल
4.	क्रम संकट ध्यान पीरा हनुमान लावै निरंतर हरै मन तें हनुमत छुड़ावै बीरा सब जपत बचन जो नासै रोग
5.	तुम के और मनोरथ सकल राजा फल पर कोई सोइ तपस्वी राम पावै लावै अमित तिन काज जो सब जीवन साजा
6.	मूंज जग सुवन औ जनेऊ महा बज्र ध्वजा केसरीनंदन कांधे तेज बन्दन प्रताप संकर हाथ साजै बिराजै
7.	हनुमत सर्ब सुमिरै धरई चित्त सुख जो न पीरा मिटै संकट कटै सब सेइ बलबीरा करई देवता और हनुमत
8.	दुआरे काहू तुम्हारी लहै रक्षक पैसारे सब सरना तुम राम आज्ञा तुम ना बिनु होत को सुख रखवारे न डर
9.	आवै सुनावै लोक सम्हारो पिसाच तीनों भूत कांपै जब महाबीर तें हांक नाम आपै तेज निकट नहिं आपन
10.	उपकार कुबेर दिगपाल सके सुग्रीवहिं जहां कबि कोबिद कहां तुम राम कहि जम ते पद राज मिलाय कीन्हा ते दीन्हा

चौपाई पहचाने खेल



उत्तरमाला

1.	अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता अस बर दीन जानकी माता राम रसायन तुम्हरे पासा सदा रहो रघुपति के दासा
2.	विद्यावान गुनी अति चातुर राम काज करिबे को आतुर प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया राम लखन सीता मन बसिया
3.	तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना लंकेस्वर भए सब जग जाना जुग सहस्र जोजन पर भानू लील्यो ताहि मधुर फल जानू
4.	नासै रोग हरै सब पीरा जपत निरंतर हनुमत बीरा संकट तें हनुमान छुड़ावै मन क्रम बचन ध्यान जो लावै
5.	सब पर राम तपस्वी राजा तिन के काज सकल तुम साजा और मनोरथ जो कोई लावै सोइ अमित जीवन फल पावै
6.	हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै कांधे मूंज जनेऊ साजै संकर सुवन केसरीनंदन तेज प्रताप महा जग बन्दन
7.	और देवता चित्त न धरई हनुमत सेइ सर्ब सुख करई संकट कटै मिटै सब पीरा जो सुमिरै हनुमत बलबीरा
8.	राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे सब सुख लहै तुम्हारी सरना तुम रक्षक काहू को डर ना
9.	आपन तेज सम्हारो आपै तीनों लोक हांक तें कांपै भूत पिसाच निकट नहिं आवै महाबीर जब नाम सुनावै
10.	जम कुबेर दिगपाल जहां ते कबि कोबिद कहि सके कहां ते तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा राम मिलाय राज पद दीन्हा

आओ नाम पहचाने



नीचे दी तालिका में महाभारत के 36 पात्रों के नाम छिपे हैं
क्या आप उन्हें 3 मिनट में ढूंढ सकते हैं ?

कृ	का	त्र	कृ	दुः	शा	स	न	य	वे	द	व्या	स	णी	द
खं	अ	द्र	पा	वि	ण्डु	घ	टो	त्क	च	द्र	हि	दुः	कृ	र्जु
न	म्बा	क	चा	चि	भी	ष्म	न्त	शा	त्र	उ	डिं	नु	वि	भी
दु	लि	क	र्य	त्र	वृ	र्जु	द्र	श	ल्य	डी	बा	अ	दु	म
र्यो	का	र्ण	दु	वी	का	म्बि	त्त	ष्म	अ	र्य	ल्य	र्जु	र	त्त
ध	रा	कृ	ध	र्य	सु	म्बा	ट्ट	ष्ट	द्यु	म्न	र	न	खं	शि
न	शा	न्त	नु	स	र	शा	शा	सु	शि	ज	श्री	उ	दे	खं
म	दुः	दुः	श	ला	नु	न	कु	ल	व	य	म्बा	वी	श	डी
कृ	च	वि	क	र्ण	पा	कृ	धि	क	शि	द्र	अ	उ	द्री	म्बि
पि	च	क	वि	डी	व	सु	दे	व	य	थ	म्बि	क	श्री	गं
स	पा	ण्डु	दुः	उ	अ	दुः	क	म्न	न	र्य	का	मा	कृ	गा
ज	पा	चा	घ	त्त	स	यु	धि	ष्ठि	र	अ	डिं	द्री	ष्ण	र्यो
की	शि	नु	र्जु	रा	रु	र्जु	नु	डी	अ	म्बा	पा	अ	कृ	उ
उ	त्त	र	खं	पि	वि	श	वृ	की	च	क	भी	पि	क	व
र्यो	त्त	अ	उ	लू	क	र्ण	श	न	व्या	रु	क्मि	णी	ष्म	डिं

आओ नाम पहचाने

उत्तरमाला



कृ	का	त्र	कृ	दुः	शा	स	न	य	वे	द	व्या	स	णी	द
खं	अ	द्र	पा	वि	ण्डु	घ	टो	त्क	च	द्र	हि	दुः	कृ	र्जु
न	म्बा	क	चा	चि	भी	ष्म	न्त	शा	त्र	उ	डिं	नु	वि	भी
दु	लि	क	र्य	त्र	वृ	र्जु	द्र	श	ल्य	डी	बा	अ	दु	म
र्यो	का	र्ण	दु	वी	का	म्बि	त्त	ष्म	अ	र्य	ल्य	र्जु	र	त्त
ध	रा	कृ	ध	र्य	सु	म्बा	ह्न	ष्ट	द्यु	म्न	र	न	खं	शि
न	शा	न्त	नु	स	र	शा	शा	सु	शि	ज	श्री	उ	दे	खं
म	दुः	दुः	श	ला	नु	न	कु	ल	व	य	म्बा	वी	श	डी
कृ	च	वि	क	र्ण	पा	कृ	धि	क	शि	द्र	अ	उ	द्री	म्बि
पि	च	क	वि	डी	व	सु	दे	व	य	थ	म्बि	क	श्री	गं
स	पा	ण्डु	दुः	उ	अ	दुः	क	म्न	न	र्य	का	मा	कृ	गा
ज	पा	चा	घ	त्त	स	यु	धि	ष्ठि	र	अ	डिं	द्री	ष्ण	र्यो
की	शि	नु	र्जु	रा	रु	र्जु	नु	डी	अ	म्बा	पा	अ	कृ	उ
उ	त्त	र	खं	पि	वि	श	वृ	की	च	क	भी	पि	क	व
र्यो	त्त	अ	उ	लू	क	र्ण	श	न	व्या	रु	क्मि	णी	ष्म	डिं



बहुविकल्पीय प्रश्न



1. श्रीमद्भगवद्गीता महाकाव्य _____ का एक हिस्सा है और इसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं।
- रामायण
- महाभारत
- वेद
- पुराण

2. श्रीमद्भगवद्गीता कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान पर _____ और _____ के बीच एकसंवाद है।
- राम, सीता
- युधिष्ठिर, दुर्योधन
- अर्जुन, कृष्ण
- शिव, पार्वती

3. श्रीमद्भगवद्गीता मुक्ति प्राप्त करने के लिए _____, _____, और _____ के तीन मार्ग सिखाती है।
- धर्म, अर्थ, काम
- सत्व, रज, तम
- कर्म, ज्ञान, भक्ति
- ब्रह्मा, विष्णु, शिव

4. श्रीमद्भगवद्गीता की शुरुआत राजा _____ द्वारा अपने मंत्री _____ से युद्ध की घटनाओं का वर्णन करने के लिए कहने से होती है।
- पांडु, विदुर
- धृतराष्ट्र, संजय
- शांतनु, भीष्म
- कंस, अक्रूर



5. श्रीमद्भगवद्गीता में _____ अध्याय हैं?
- 12
- 18
- 24
- 36

6. श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुन को परिणामों के प्रति आसक्ति के बिना _____ के रूप में अपना कर्तव्य निभाने की सलाह देती है।
- योद्धा
- राजा
- समझदार
- त्यागी

7. श्रीमद्भगवद्गीता _____ की अवधारणा की व्याख्या करती है, जो प्रत्येक जीवित प्राणी का शाश्वत और अविनाशी सार है।

- आत्मा
- कर्म
- माया
- प्राण



8. श्रीमद्भगवद्गीता किसी के स्वभाव और कर्तव्य के अनुसार _____ के चार प्रकारों का वर्णन करती है। वे _____, _____, _____, और _____ हैं।

- वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
- आश्रम, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
- गुण, सत्व, रजस, तमस, निर्गुण
- युग, सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि



9. श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन के वंश का नाम _____ है ?

- पांडव
- कौरव
- यादव
- राक्षस

10. श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुन के यह कहने के साथ समाप्त होती है कि उसने अपनी _____ पुनः प्राप्त कर लिया है और कृष्ण के आदेश के अनुसार करने के लिए तैयार है।

- स्मृति
- शांति
- बुद्धि
- आस्था





१.१. बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. महाभारत	2. अर्जुन, कृष्ण	3. कर्म, ज्ञान, भक्ति
4. धृतराष्ट्र, संजय	5.18	6. योद्धा
7. आत्मा	8. वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र	9.पांडव
10.स्मृती		

VOLUNTEER'S BRIGADE

PATRON
P. P. SWAMI JI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

PROGRAM DIRECTOR
Dr.Ashu Goyal

PRINCIPAL TRAINER
Sau. Suvarna Malpani, Sangamner

PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. Kavita Verma

TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya

IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Pankaj Agarwal, Lucknow
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot
Shri Vednath Mathur, Delhi
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Vivek Sinha, USA
Smt. Minaxi Shah, Ahmedabad
Shri Manish Tomar, Morana
Shri Mitesh Khatri, Bikaner

TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Smt. Shruti Nayak, Mumbai
Smt. Manisha Bardhan, Lucknow
Smt. Anita Ravishankar, Pune
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Anuja Lahoti, Dubai
Smt. Ruchika Chaugaonkar, Dharamshala
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara
Smt. Shikha Malhotra, Punjab

CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Smt. Usha Prasad, Bangalore
Shri Bimal Jain, Kolkata
Smt. Shradhha Mishra, Pune (Hindi)
Smt. Ritu Sharma, Bikaner (Hindi)
Smt. Shruti Sud, Gurgaon (English)
Shri Mandar Barve, Pune (Marathi)
Kum. Poushali Ghosh, Bangalore (Bengali)
Shri Jatin Ved, Mumbai (Gujarati)
Smt. Mala Narayan, Bangalore (Malayalam)
Shri Valiveti Venkata Lakshmi Narayana Sharma, Hyderabad (Telugu)
Smt. Rachita Mishra, Bhubaneswar (Odia)
Smt. Shivkamy Rajgopalan, Bengaluru (Mumbai)
Shri Manjunath Ji, Bangalore (Kannada)
Smt. Jigisha Shah, Nagpur (Gujarati)

TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Shri Suraj Sharma, UAE
Shri. Dinesh Pandita ji, Delhi
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Shri Suresh Ghag,Vadodara
Smt. Alaknanda Kulkarni, Pune
Smt. Surekha Mittal, Mumbai
Smt. Sneha Srinivas, Chennai
Smt Sheetal Bharadiya, Gujarat
Shri Vidyanand Wagh, USA
Shri Dharmesh Shah, Pune
Smt Abha Agarwal, Mumbai

LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Shri VVLN Sharma, Telangana (Telugu)
Smt. Santhi Varma, Hyderabad (Telugu)
Smt Usha Pradeep, Pune (Kannada)
Smt Uma Kothandaraman, Nagpur (Tamil)
Smt. Banusuja R. krishnan, Los Angeles(Tamil)
Smt Poushali Ghosh, Kolkata, West Bengal (Bangla)
Shri Keshav Patro, Pune, Maharashtra (Odia)
Smt. Mala Narayanan, Kerala (Malayalam)
Smt. Lathika P Nandipulam, Kerala (Malayalam)
Ms. Neha Tushar, Bhuj (Gujarati)
Mrs. Seema Sahani, Udaipur (Sindhi)
Shri Gunaraj Pokhrel, Gaidakot, Nawalpur (Nepali)
Ms. Tanvi Desai, Bangalore Karnataka (English)
Mrs. Mrudula Asawa, Pune Maharashtra (Marathi)
Smt. Tarun Gogoi, Dibrugarh (Assamese)
Shri Narayan Shete, Coimbatore (Grammar)

EVENT & VIVECHAN MANAGEMENT
Shri Gopal Singh Nathawat, Bikaner
Smt. Neeta Aspat, Mumbai
Shri Suresh Vyas, BikanerShri Deepak Gupta, Kota
Shri Sunil Dhoot, USA

GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Kavita Taparia, Ahmedabad
Smt. Vini Maheshwari, Mumbai
Smt. Smita Mundada, Mumbai
Smt. Saroj Saboo, Hyderabad
Shri. Hanuman Prasad Baheti, Aurangabad
Smt. Meenakshi Priyadarshini, Delhi
Shri Jayesh Kantilal Pandya, Jamnagar
Shri Pawan Anchal, New Delhi

EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri
Smt. Manisha Bhardwaj ji, Abu Road

NEWSLETTER DEPARTMENT
Shri Sunil Kapdi, Mumbai
Smt. Sonali Kala, Pune
Smt. Jayshri Trivedi, Mumbai

SOCIAL MEDIA DEPARTMENT
Smt. Chandana Pandey, Greater Noida
Shri Abhishek Gupta, West Bengal

LG DISCIPLINARY COMMITEE
Shri Vikas Vaidya, Pune
Smt. Priyanka Havelia, Delhi
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Shri Devendra Pathak, Khanrgone

BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Drishti Yadav, Lucknow
Ms. Shalini Kashyap, Lucknow
Ms. Manvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Mansi Sonkar, Lucknow
Ms. Payal Sonkar, Lucknow
Ms. Prachi Nigam, Lucknow
Shri Vishal Verma, Lucknow
Shri Akash Verma, Lucknow

TELE, CHAT & MAIL HELPLINE DEPT.
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi
Ms. Kajal Srivastava, Delhi
Ms. Yogyalakshmi, Delhi
Shri Aryan Gupta, Delhi

GROUP REG. DEPARTMENT
Smt. Anshu Garg, Delhi
Shri Munish Agarwal, Jalandar

SCHOOL REG. DEPARTMENT
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara
Smt. Abha Aggarwal, Navi Mumbai

JAIL REG. DEPARTMENT
Shri Santosh Singh, Indore
Shri Rajeev Gupta, Jaipur
Shri Umesh Sharma, Mumbai (NHR3 head)

OFFLINE CLASS COORDINATION DEPARTMENT
Smt. Namita Mehra, Mumbai
Shri Varun Pathak, Pune

CLASS MONITERING TEAM
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. Vidya Pathrikar, Pune
Smt. Pooja Jaiswal, Kanpur
Smt. Anju Kanodia, Kolkata
Smt. Shashi Tripathi, Ujjain

CHINTANIKA COORDINATORS
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad
Smt. Kavita Mandhane, Parbhani
Smt. Nirmala Maru, Kota

GEETA PRACHARAK COORDINATORS
Shri Vimal Goenka, Akola
Shri Geet Govind Sahu, Jagdalpur
Smt. Rajeshri Apage, Panaji

ADMISSION DEPARTMENT
Smt. Minal Dani, Bangalore
Smt Kavitha Mahalakshmi, Hyderabad
Smt Radhika Rao, Gadag

CALLING & MIGRATION DEPARTMENT
Smt. Yogita Khinda, Mumbai
Shri Abhijit Joshi, Vadodara
Smt. Mrudula Asawa, Pune
Shri Rajneesh Arora, Lucknow

गीताव्रती साधक सूची





Ms Aadya Bhave



Ms Aaradhya Pramod Bhide



Smt. Aarati Mujumdar



Smt. Aarti Sharma



Shri Acharya Guruji



Shri Adhavalkar Sudhir Purushottam



Smt. Ahswini Anant Abhyankar



Sau Anagha Bhatkhande



Sau Anagha Prakash Jalgaonkar



Ms Anarghya B N



Anil Prabhakar Bandishti



Smt. Anita Billaiya



Smt. Anita Gupta



Sau Anjali Balwant Samant



Sau Anjali Nitin Latkar



Smt. Anju Agarwal



Sau. Anuradha Prafull Pund



Anuradha Shriram Ambegaonkar



Shri Anurag V



Smt. Arati Hemant Naik



Sau Archana Ram Gundewar



Smt. Archana Sharma



Sau Archana Sunil Sharma



Smt. Aruna srivastava



Smt. Asha Mittal



Sau Asha Pramod Govindwar



Shri Ashish Vimalkant Pande



Shri Ashit Amin



Shri Ashok Saboo



Ashwini Murthy

गीताव्रती साधक सूची





Sau Awanti Vinayak Choudhari



Shri Bhagwati Prasad Thapliyal



Smt. Bharathi K



Smt. Bhurkay Hemalata



Shri Chandan Charchit Padhy



Smt. Dakshina Malladi



Shri Deoram Patilba Benake



Sau Deshmukh Suvarna Shrikrishna



Smt. Deval Mehta



Shri Dhruv Joshi



Sau Dr Asha Malu



Shri Dr Dayananda Pai



Dr Jaishri S Kharolkar



Smt. Dr. Kiran Singh Chauhan



Shri Dr. Radheyshyam Chhipi



Ms Aadya Bhave



Smt. Dr. Sangeeta



Ekta Majithiya



Shri Ganesh Tulshiram Jadhav



Gayatri Gupta-1



Smt. Gayatri Hitesh Patel



Shri Girish Kiran Kulkarni



Shri Hareshkumar Kanhaiyalal Gujarathi



Sau Hemlata Bhangale



Smt. Hetal Patel



Shri Hirachand G Patil



Smt. Hiral Vaidya



Indira Chauhan



Smt. Indu Prasad



Smt. Jayalakshmi R

गीताव्रती साधक सूची





Jayalaxmi Annoji Rao


Sau Jaymala Neelkanth Bomange


Smt. Jwala V Rao


Smt. Jyotsnaben Rana


Smt. K Anuradha


Shri Kailash Chandra Tailor


Smt. Kajal Mihir Shah


Smt. Kalyani Gangishetti


Sau Kamal Shamsundar Lakhotiya


Shri Kapil Boro


Ms Kavita Gulabrao Pakwanne


Sau Kavita Pravin Bhusari


Ms Keerthana Manikandan Nair


Shri Kishor Kamlakar Lonkar


Shri Kuldeep Modi


Sau Kunda Laxman Patil


Smt. Lata Prabhakar Rege


Smt. Leena Baliram Mane


Smt. M Vijaya Lakshmi


Sau Madhuri Kale


Smt. Maheshaben Sanjaykumar Dal


Ms Maitry Joshi


Smt. Mamta


Smt. Mamta Santosh Kashyape


Smt. Mangala Ashok Nagarkar


Smt. Mangala Suhas Wani


Smt. Manjari Belapurkar


Smt. Manjusha Yashwant Shiledar


Sau Meena Kedarnath Dhakne


Sau Megha Kulkarni

गीताव्रती साधक सूची





Shri Milind keshav Kulkarni



Ms Minal Joshi



Smt. Minal Shah



Miss Ujwala Ganeshrao Kondekar



Smt. Mona Ashok Zade



Shri Mukund Shripad Mharolkar



Ms Naisha Chawda



Shri Narhar Krishnaji Nimkar



Smt. Nehaben Tusharbhai Joshi



Nidhi Bansal



Sau Nikita N Karkar



Sau Nima V Doshi



Smt. Niranjana Vinod Mehta



Sau Nirmala Suryakant Zende



Om Sudhir Chidrawar



Smt. Padma M Parmar



Shri Pankaj Sachdeva



Smt. Perala Prasuna



Smt. Prabha Iyer



Smt. Preeti Agarwal



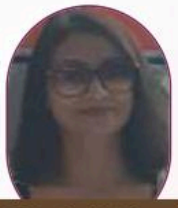
Prema Bhat



Sau Priti Abhay Joshi



Smt. Priti Bharat Mistry



Ms Priyadarshini Ganesh



Smt. Puja Jeetendra Bhatt



Sau Purnima Anil Warke



Sau Pushpa Dwarkadas Kabra



Smt. R Rajeswari



Smt. Radha Diwakaran



Sau Rajani Bhogale

गीताव्रती साधक सूची





Sau Rajashree Kotibhaskar



Rajendra Kumar Sharma



Smt. Rajshri Gupta



Shri Rakesh Kumar Sharma



Shri Rambabu gupta



Smt. Rekha Gore



Sau Rekha Phalak



Shri Rishith K S Hebbar



Shri Rohan Borade



Sau Ruchi Lokhande



Sau Rupali Abhijeet Mudholkar



Ms Sabu Gauri Rajesh



Sau Sadhana Doshi



Smt. Samata Shyam Nargund



Shri Santosh Kashyape



Saradha raviprakash



Sarvajith



Sau Savita Shrikant Khot



Smt. Savitri Devi



Sau Sayli Kedar Sapre



Smt. Seema Ravikant Pandit



Smt. Shachidevi Sannabhadti



Smt. Sharmila Padmakar Deshmukh



Sau Shilpa Sudhir Hardikar



Sau Shobha Shantaram Wani



Sau Shobhana Arvind Gurjar



Ms Shravani Rajesh Naik



Smt. Shrikrishna Sharma



Smt. Shubhangi Barhate



Sau Shubhangi Sanjay Malvade

गीताव्रती साधक सूची





Sau Shyamal Shyam Gaikwad



Smt. Siddemsetty Manju



Sau Smita Atul Badwe.



Smt. Smritikana Banerjee



Ms Sonali Pati



Smt. Spandan Harshit Padhy



Shri Sumit Toshniwal



Sumitra Shridhar Hasyagar



Sau Sunetra Nitin Pitkar



Shri Sunil Dhoot



Smt. Sunita Mittal



Sau Supriya Patki



Smt. Supriya Vilas Kulkarni



Sau Surekha Shailesh Kulkarni



Sau Surya Supraja



Smt. Susha vilas koshti



Shri Susheel Kumar Thakur



Ms Swara Shankar Patole



Sau Swati Sudhir Digrajkar



Smt. Tara Devi Poddar



Shri Uday Vasant Bhobe



Sau Ujwala Prakash Kulkarni



Ms Ujwala Shrikant Zambre



Smt. Urmila Bastawade



Sau Usha Lodam



Smt. Usha Tarachandani



Smt. V Aruna Kumari



Smt. Vaghani Rashmidevi Rushikkumar



Shri Vaghani Rutvij



Sau Vaishali Amit Damle

गीताव्रती साधक सूची





Sau Vaishali Samant



Smt. Vandana Keshav Sathe



Smt. Vandana Santosh Volvoikar



Vanita Ramesh Jadhav



Smt. Varsha Naresh Patel



Varsha Vilas Deshpande



Shri Vasudev M



Shri Vasudevan Devarajan



Sau Vidya Ganesh Pitke



Sau Vidya Vikas Deshpande



Smt. Visalakshi Putta



Sau Vishakha Milind Joshi



Shri Vivek Joshi



Sau Vrushali Parekh



Smt. Yogita Bipin Kharade



आँकड़ों की नजर में

Geeta Sewi Volunteers across the globe 8,000

Registered Participants from 181 Countries 790,073

Geeta Classes Conducted yet 435,200

EXTRA CLASSES

Gīta Guñjan - 160
Gīta Jijñasu - 116
Gīta Pāthaka - 203
Gīta Pathika - 146
Gīta Vratī - 90

TOTAL PASSED IN EXAMINATIONS

Gīta Jijñāsu - 25,039
Gīta Pāṭhaka - 7,559
Gīta Pathika - 2,089
Gīta Vratī - 1,067

GRAMMAR SESSIONS

104 Session in 10 languages

TOTAL VIVECHAN SESSIONS

Hindi - 856
English – 417









www.geetapariwar.org
learngeeta.com

+91 2425 222299
+91 2425 225011

All rights reserved,
Geeta Pariwar, Sangamner
Maharashtra-433605





https://www.learngeeta.com

https://www.youtube.com/@GeetaPariwar

https://www.facebook.com/geetaparivar

https://mobile.twitter.com/Learn_Geeta

https://www.instagram.com/geetaparivar/